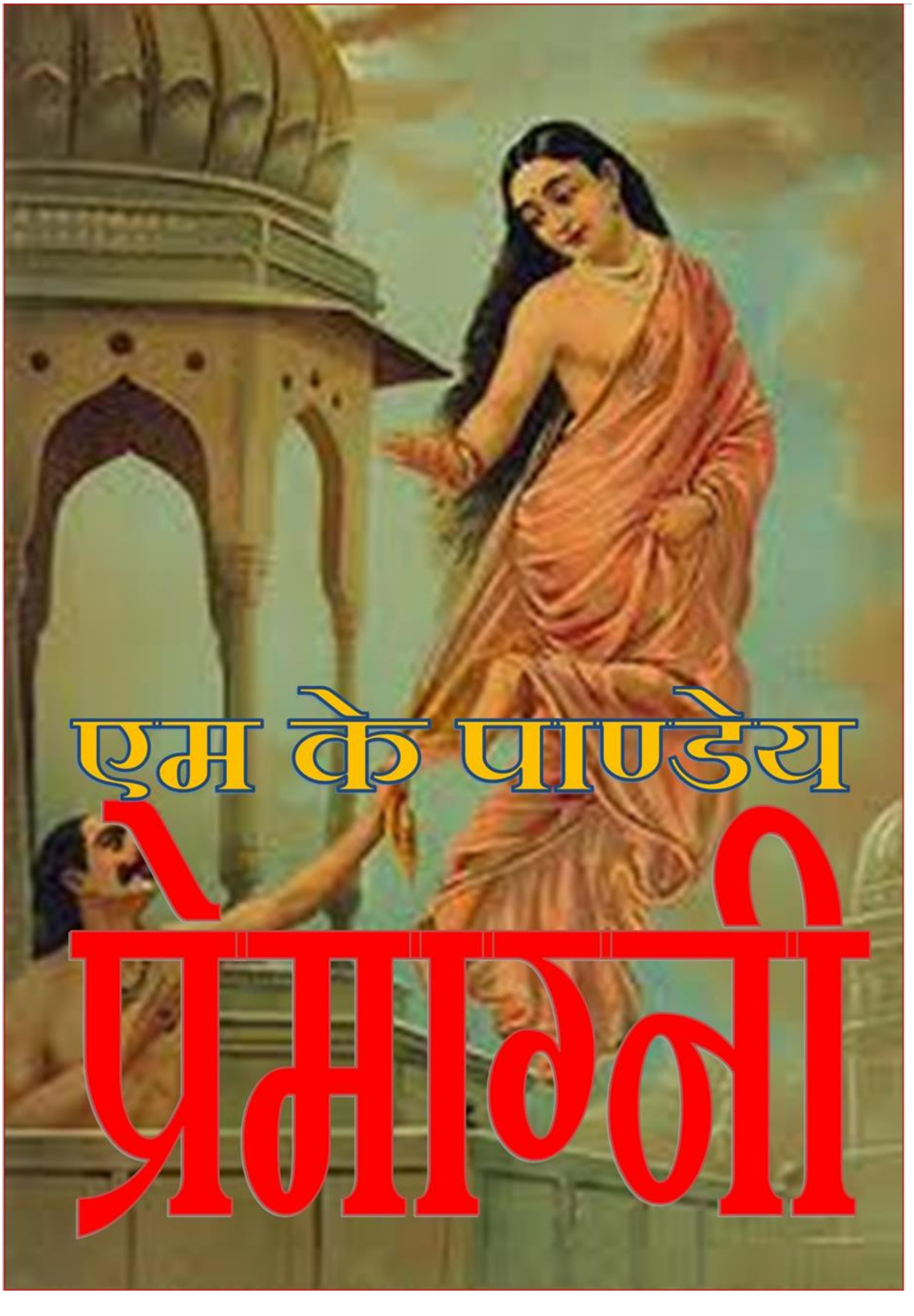

एम के पाण्डेय
प्रेमाग्नी

विषय सूची

प्रस्तावना

भुमीका

1 सूर्य का वंसज

2 रात्री निद्रा और एक स्वप्न

3 नगाड़े की चोट पर

4 सूर्य का ग्रहण

5 प्रेरणा स्त्रोत

6 निशाचर

7 रात का एक कमल

8 सफेद हंश

9 कमल की भुमी

10 पृथक्करण

11 जानवरों का भगवान

12 अन्य शरीर

13 अंधेरें में एक प्रकाश

14 मोह माया

15 रात का मृत

16 भोर से पहले

17 भोर

प्रस्तावना

यह एक अद्भूत प्रेम कथा हैं, जो भारतिय प्रारमंभिक आत्मा को प्रकाट करने में पूर्णतः समर्थ पुस्तकों में से एक है, और यह किताब बहुत पुरानी हैं, जो काफी पहले जनमानस के सामन आई थी, मैंने जब इसको देखा तो मुझको यह प्रेम कथा बहुत उत्तम किताबों में से एक लगी, जिसके कारण मैं स्वयं को रोक नहीं पाया, क्योंकि जिस आनंद को इस किताब के चिंतन बाद मैंने प्राप्त किया, उसको मैं आप सब के साथ बाटने से नहीं रोक सका, यह जरुरी नहीं है कि मैंने इस किताब के साथ पुरा का पुरा न्याय किया हैं, यद्यपि मैंने इसके लिये भरसक यथा संभव प्रयाश अवश्य किया हैं, यह किताब बहुत छोटी सी है, मगर इसकी कहानी की आत्मा कई जन्मों के विस्तार को अपने आप में समेटें हुए हैं।

भुमीका

हमारी दृष्टी में यह प्रेम कथा अद्भुत औऱ अलौकिक हैं, जिसमें कमलमित्र नामक मानव पहले जो राजा होता हैं, और बाद में अपने राज्य का त्याग करके, भगवान शिव का साक्षात्कार करने के लिए हिमालय के शिखर पर चला जाता हैं। और वहां पर बहुत कठीन साधना में लिन हो जाता हैं, इस प्रेम कथा का नायक जो भगवान शिव को अपनी तपस्या से प्रसन्न कर लेने में समर्थ हो जाता हैं। अपने सैकड़ों सालों की कठीन दुस्कर साधने से, जिसके कारण भगवान शिव उसके उपर अत्यधीक प्रसन्न हो कर, उसके सामने प्रकट हुए, और उससे कहा की मैं तुम्हारी तपस्या से बहुत प्रसन्न हूं। इसके लिए तुम मुझसे एक वर मांग सकते हो। पहले तो कमलमित्र ने वर मांगने से इन्कार कर दिया लेकिन भगवान शिव के जोर देने पर की तुमको एक वर मुझसे अवश्य प्राप्त होगा, इस तरह से वह भगवान शिव से एक अद्भूत वर मांगता हैं। जिसके साथ ही यह कहानी प्रारंभ होती हैं। उसने अपने वर में भगवान शिव से अपने लिये अती सुन्दर भगवान शिव की छबी को अपने आप में समेटे हुए चांद के समान सागर जैसी गहरी निली आंखों वाली पत्नी को मांगा, पहले ही भगवान शिव नें कहा की यह स्त्री कोई सामान्य स्त्री नहीं होगी, यह बहुत खतरनाक होगी। फिर भी मैं तुमको तुम्हारी इच्छा के अनुकूल एक इस प्रकार के गुणों वाली स्त्री को प्राप्त करने के लिए वर देता हूं, जिस औरत का नाम अनुश्यनी हैं, जो इस प्रेम कथा की अलौकिक नाइका हैं, जिसने साधरण जन से देवताओं को भी चित्त करने के सामर्थ रहती हैं जिसके साथ कमलमित्र की पत्नी बनने के लिये तैयार होती हैं, जिसके लिए कमलमित्र को अत्यधिक अभीमान होता हैं, जिसके कारण वह अपने लिये भयंकरतम कष्टों को बुलाता हैं, यहां तक अपनी शरीर को त्यागने का श्राप उसको उसके अभीमान के कारण ही प्राप्त होता हैं, उससे पहले की अनुश्यनी कमलमित्र से पूर्ण रुपेण मिल पाये, अर्थात जहां पर दो आत्माएं मिल कर एक होजाती हैं, उस स्थिती को उपलब्ध कर पायें, उससे पहले ही उनके सामने भयंकर प्राकृत और सांसारीक वीपत्तीयों का पहांड गीर पड़ता हैं उससे बचने और स्वयं को एक करने के लिये किये गयें संघर्ष की ही यह एक प्रेमाग्नी रूपी कथा हैं। जो प्रारंभ से अंत तक जलती रहती हैं जिस के माध्यम से दिव्य बोध मानव चेतना को होता हैं। जो हम जैसे सामान्य जन हैं।

मनोज पाण्डेय, महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर, हरयाणा भारत, 17, 07, 2018

१ सूर्य का वंशज

मंगलाचरण

ओ ऐश्वर्यशाली और अनंत शांत आत्मा, ऋषियों के स्वामी, जो हवा के समान संसार रूपी जंगल में प्राण के समान बहता है। जो आकाश के समान सब जगह व्याप्त हो रहा हैं। जिसके गले में निला जहर विद्यमान है जो स्वयं निलकंठ हैं, जिनके सर के बालों के गुच्छे में सफेद चमकिला चंद्रमा प्रतिबिम्बीत हो रहा हैं। जिसकी हम सब श्रद्धा पूर्वक आराधना करते है, और उसके चरणों में स्वयं को नत मस्तक करते है, और जिनके विशाल सुंड़ है, जो हाथियों के भी हाथी हैं, जिनके तेज के चमक से अनंत प्रकार के विघ्न बांधाये ऐसे भष्म हो जाती हैं जैसे जंगल की घास एक चिन्गारी पाकर राख में तब्दील हो जाती है।

बहुत समय पहले हिमालय की तराईयों में जहाँ पर एक राजा राज्य करते थे, जो प्राण के समान आत्मा-वान पुरुष थे, जिनका नाम कमलमित्र था। जिनका तेज सूर्य के समान चारों तरफ व्याप्त हो रहा था। जो बहुत बड़े उमापती शिव के उपासक थे। जिनका रुझान अचानक बदल गया और वह सांसारिक विषय भोग से विरक्त हो गये, जिसके कारण उन्होंने अपने राज्य कार्य को मध्य में रोक दिया, और अपना सब कुछ छोड़ कर हिमालय के शिखर कैलाश पर्वत के बर्फ की चोटियों के मध्य में जाकर बड़ी कठोर साधना में संलग्न हो गये। और वह वहाँ पहले केवल पत्तों को खाकर अपने जीवन का निर्वाह करने लगे, कुछ समय पर केवल धुंआ पीकर रहते थे और अंत में केवल वायु पीकर ही साधना करने लगे, धैर्य पूर्वक अपनी कठिन तपस्या में लीन हो गये थे। इसी तरह से सौ साल का लंबा समय गुज़र गया, जिसकी कठोर साधना से द्रवित हो कर और उसके प्रती करुणा से अभिभूत हो कर भगवान शिव एक दिन चांदनी रात में उसके सामने प्रकट हुए। एक साधु के रूप में यद्यपि उनके शरीर का आकार वृक्ष के समान सिधा लंबा था, और उनके बालों के मध्य में चंद्रमा चमक रहा था, और उन्होंने कहा मैं तुम्हारी भक्ति से बहुत प्रसन्न हो चुका हूँ, इसलिए मैं तुम्हें वरदान देना चाहता हूँ, मांगों तुम्हें क्या चाहिये? फिर युवा राजा कमलमित्र ने उनके चरणों में अपने हाथों को जोड़ का सादर और आदर के साथ प्रणाम किया, और कहा कि आप मुझे वरदान देना चाहते है। इसको जानकर मैं बहुत प्रसन्न हुं, यह मेरे लिए सब कुछ हैं कि आप मुझ पर अनुग्रहीत हैं। इस पर भगवान ने कहा यह पर्याप्त नहीं है, तुम को मुझसे एक वर अवश्य प्राप्त होगा, एक बार और विचार करके मुझसे मांगो की तुम को क्या चाहिए? इस पर कमलमित्र ने कहा यदि ऐसा निश्चित है, तो मैं आपसे वरदान के रूप में एक सुन्दर अपने लिए पत्नी चाहता हूँ, जिसकी आँखें आकाश के समान विस्तृत और पर्वत की चोटियों के समान स्वच्छ हो, जो पूर्ण रुपेण सागर के समान कामुक और अति आकर्षक हो। विश्व में सबसे अधिक सौंदर्य की धनी वह औरत हो। उसके गले में चंद्रमा का निशान हो और उसको देखने से काम की अतृप्ती और अधिक बढ़ जाये, वह केवल अपारदर्शी प्रतिबिंब की भाती चित्र ना हो, यद्यपि वह वास्तविक हमेशा रहने वाली एक यौवन सम्पन्न ऐश्वर्य वाली स्त्री हो। जिसके द्वारा मैं अपने आपको हमेशा आपकी आराधना का माध्यम बना सकु।

फिर चंद्रमा को अपने बालों के जुड़े में धारण करने वाले भगवान शिव उससे बहुत प्रसन्न हुए, फिर उन्होंने अपनी दैवी शक्ति के द्वारा आने वाले भविष्य में देखा, जो होने वाला था और उन्होंने बहुत धीरे से कहा इस प्रकार की आंखों वाली स्त्री बहुत अधिक खतरनाक होगी। वह किसी दूसरी स्त्रियों के समान नहीं होंगी, और उसका व्यवहार अपने पति के प्रती सामान्य स्त्रियों के समान नहीं होगा, अर्थात वह एक असाधारण किस्म की औरत होगी, जो इस संसार में दुर्लभ किस्म की अतुलनीय औरत होगी। फिर भी कोई बात नहीं मैं तुम को यह वरदान दे देता हूँ। जैसा कि तुम्हारी इच्छा है।

फिर भगवान शिव अद्दश्य हो गये, और कमलमित्र आनंद से भर कर अपने घर के लिए वहाँ से चल दिया, और परमेश्वर की अलौकिक अनुकम्पा की कृपा से उसका सारा क्लैश, पिड़ा, दुःख और कष्ट के साथ जीवन के बिध्नों से हमेशा के लिए वह मुक्त हो गया, भीम के समान शक्तिशाली और अर्जुन के समान सौंदर्य को प्राप्त हो गया। और वह अगले दिन शाम को अपने राज्य की सिमा पर पहुंच गया, उससे पहले वह एक बगिचे में विश्राम करने के लिए गया। जिस समय सूर्य अस्त होने वाला था। जैसे ही वह बगिचे में पहुंचा, उसने अपने सामने अचानक एक औरत को देखा, जो तालाब में सफेद बर्फ जैसे कमल पुस्पों के मध्य में चंदन की नाव पर, एक सफेद खेवटियाँ के साथ नौका विहार कर रही थी। और उसका प्रतिबिंब उन बर्फिले पुस्पों पर झलक रहा था, जिससे उनकी आभा निली पड़ गयी थी। जो अपनी आँखें नीचे किये हुए थी, और उसने अपनी एक हथेली में ठुड्डी को किये हुए, दूसरी हथेली से पानी की बुंदों को बार-बार कमल पुस्पों पर डाल रही थी। कमल पुष्प लाल खुन की तरह प्रतित हो रहे थे। और उसके घुमावदार गोल नितंब रेत के किनारे की तरह दिख रहे थे, और दोबारा उसके संगीत मय सुडौल शरीर का प्रतिबिंब नीचे झील के पानी में झलक रहा था। उसके ओठ चल रहे थे, जैसे वह पानी में गिरते पुस्पों के पत्तों की गिनती कर रही हो।

और कमलमित्र ने अपनी शांशों को थामें हुए शान्तचित्त वेशुध उसके सौंदर्य की छटा को निहार रहा था, उसके उपर से निगाह को हटाने से भयभीत होकर, वह सोच रहा था कि वह किसी स्वप्न को देख रहा है, और तभी उस नव यौवना ने तत्काल अपनी निगाह को उपर उठा कर कमलमित्र को देख कर हंसी, जिसने अपनी आंखों के रंग से उसको भिगो दिया, और ऐसा प्रतीत हो रहा था कमलमित्र को जैसे उसका संपूर्ण अस्तित्व कमल पुस्पों के सागर में समा गया हो। और तभी उसको भगवान शिव के द्वारा दिये गये वरदान के बारे में याद आया। जिसने उसको आकाश का वस्त्र पहना कर उसके सामने भेजा था। और वह चिल्लाया कि यह अदभुत कला कृति अवश्य मेरी पत्नी ही होगी, जिसको भगवान महेश्वर ने मेरे लिए भेजा है। जिसके लिए उन्होंने मुझसे कुछ एक दिन पहले मुझसे वादा किया था, और यह कोई दूसरी नहीं हो सकती है। मैंने उनके ऐश्वर्य को देखा है और उनकी दोनों आँखों को मैने देखा है, और यह वहीं आँखें हैं। अगर यह ऐसा ही हैं, जैसा की मैं समझ रहा हूँ, तो मुझ को उसको बुला कर उसके नाम को जानना चाहिये। तभी उस औरत ने कहा मेरा नाम अनुश्यनी हैं और इसी मकसद से परमेश्वर ने इन आँखों को बनाया हैं? हलांकी उसकी आँखों में झलक परमेश्वर का मिल रहा था।

फिर कमलमित्र ने परमेश्वर के द्वारा प्रदत्त उसको अपना बना लिया, और अपनी पत्नी के समान उसके लिये हर प्रकार का संसाधन उपलब्ध कराया, और इसके बाद वह कैलास के क्षेत्र को उसके साथ छोड़ दिया, पूर्ण रूप से किंकर्तव्यविमुढ़ की तरह और उसकी आखों के नशे में मस्त होकर, लगातार वह उसकी श्रेष्ठ दोनों आखों में अपने परमेश्वर की झलक को देख रहा था। और वह उन नशीली गहरी सागर जैसी आखों में गोते लगाते हुए, उसमें डुबता जा रहा था। और उसको ऐसा प्रतित हो रहा था, जैसे सम्पूर्ण संसार निले कमल पुस्पों से सुसज्जीत किया गया हो। और जैसे कोई पात्र मुह तक भरा हो और उसमें रखा अमृत के आनन्द का श्रोत बाहर बह रहा हो, वह स्वयं आनन्द के अलौकिक भाव से विभोर हो रहा था। वह उसके सौन्दर्य को पचाने में स्वयं को असमर्थ पा रहा था। इसके साथ उसके अन्दर अपनी पत्नी के सौन्दर्य का अभिमान भी अपने चरम पर पहुंच रहा था, उसे अपने आप पर आश्चर्य के साथ एक दिव्यता का आभास होरहा था, इस अनुपम, अद्वितीय, अप्रितम औरत को पा कर, जिसके कारण उसको अपने भावों पर कोई नियंत्रण नहीं रह सका। जिसके कारण उसने स्वयं को शान्त करने के लिए सब जगह जाकर अपनी औरत के अभूतपूर्व सौन्दर्य का वर्णन करने

लगा। इसके साथ उसने प्रयास किया की हर आदमी उसकी पत्नी के बारें में जाने कि वह स्वयं अपनी पत्नी के बारें में क्या सोचता है? सम्पूर्ण संसार की सभी औरते उसकी औरत की तुलना के सामने कुछ भी नहीं हैं। उसने आह भरी की यह औरत भी क्या वस्तु हैं? जो दूसरी औरतों से विल्कुल अलग उसके उद्धार का कारण हैं।

इसी बीच एक दिन जब वह अपनी पत्नी के विषय में अपने एक मित्र से बहस कर रहा था। और अपने मित्र को गाली दे रहा था, क्योंकि उसके कुछ वुद्धिमान मित्र थे, जो उसकी पत्नी की असीमित प्रशंसा को सुन कर उससे प्रसन्न होने के वजाय उसे हतोउत्साहित करने लगे थे। जिससे वह चिढ़ कर गाली-गलौच करने लगा। अचानक उसके कुछ मित्र ठहाके भर कर उस पर हसंने और चिल्लाने लगे, और इसके साथ कहने लगे की इस दुनिया में हर वस्तु का इलाज हो सकता है, यहाँ तक यदि भयंकर विशैला सर्प यदी काट ले तो उसका भी इलाज संभव है, लेकिन उसका कोई इलाज नहीं है जिसको किसी औरत के सौन्दर्य ने काट लिया हो, उसकी मृत्यु निश्चित है। मेरे मित्र औरत के सौन्दर्य के प्रेम से तुम संक्रमित हो चुके हो, इससे सावधान रहने की ज़रूरत है। औरत एक आकर्षक, संमोहक, सुडौल संगित मय हमारे शरीर की ही आधी प्रतिरुप तरह से है, औरत केवल एक सामान्य वाद्य यन्त्र की ध्वनी नहीं है, यद्यपी वह इससे अतीरिक्त अनन्त प्रकार की हजारों ध्वनी लहरियों का संगम है। और उसके तार मानो मथनी क तरह है, जो मानव ह्रदय में उपस्थित उसकी सम्पूर्ण आत्मा के भावों के सागर को मथ कर उसके सार को चुस जाते है। और यह हो सकता है कि तुम्हारी पत्नी की आंखे बहुत सुन्दर हो, वैसे भी औरतों की आंखें सुन्दर और काम के नशें से अभिभूत होती हैं, और वह सिर्फ़ आंखें ही होती है। एक औरत के समान हर औरत की आंखें नहीं होती है, हो सकता है तुम्हारी औरत की आंखे कुछ सौन्दर्य में अधिक हो, फिर भी एक औरत का सौन्दर्य हमारे लिए एक डायन कुतीया से अधिक नहीं है। जैसे एक झरना अपने संगीतमय बुल-बुलों के साथ हंसता हुआ बहता है। जो हमारे लिए दूसरे दरवाजे के समान है, जैसे एक जंगली तालाब अपने शान्त छाया से भरा हो, जो हमें अपनी जाल में फंसा लेता है। औरत यमदुत की तरह से अपने अमृतमई बालों में बांध कर, जबकि दूसरें काटें हमारें मनोभावों में चुभते रहते है जिसमें दर्द भरा होता है, जसमें ना मातम का ना शोक का फिर भी वह अद्भूत और अगम्य के साथ असहनिय दर्द की चुभन होती है। जो उनकी आखों के द्वारा विश वुझे वाणों के द्वारा छोड़े जाते है। और औरते हमें अपनी एक आँख से सूर्य के समान जलाती है, जैसे हम सब गर्मी के महिने में किसी रेगिस्तान में बिना छतरी के नग्नों पैरों के भ्रमण करने का अनुभव करते है। जिससे हमारे प्राण संकट में हर समय पड़े रहते। कमजोर बीमार इच्छाओं के साथ आन्तरीक जीवन का ताप तपाता रहता है, और दूसरी आंखों से शान्ती दायक आनन्द को वरषाती है, जिस प्रकार से चंद्रमा का शितल प्रकाश सुख को देता है, और अपने ओश से भिगे चुम्बन के द्वारा कपुर के समान हमारें ह्रदय को जलाता है। यह औरत बैलों के समान हम लोगों को अंकुश से हांकती है, विच्छु के समान कुरुप औरत अपने अरों से डंक मारती हैं, हम जैसे हाथी के समान उसके पालतु बन कर रह जाते है, और दूसरों के सद्गुणों का सूक्ष्मता के साथ पक्षी की तरह वर्णन करती है। हम उसके प्रलोभनो के जाल में फंस जाते है, लड़कियों की बाहों में आराम पाने के लिए हम सब उसके सामने मानसिक रूप हाथ जोड़े हुए झुके रहते है। और मधुमक्खियों की तरह उसके चारों तरफ भिन-भीनाते रहते हैं। बार-बार मंडरा कर उसके ओठो से मधु को चुसते है, जिस प्रकार से एक सांप अपना लपेटा मार करकुंडली को जमाता है, उसी प्रकार से हम लड़की की कमर से चिपके रहने के लिए हर पल वेचैन और व्याकुल रहते है, जैसे कोई अत्यधिक व्यग्रात में वेचैन, चिन्तीत यात्री होता है। हम सोते रहते है लम्बे समय तक उसके बक्षस्थलों पर उसे जीवीत तकिया समझकर। यह सब सनते हुए, अचानक कमलमित्र का धैर्य का

बांध टुट गया, और वह वहाँ उन मित्रो के पास से बहुत दूर अपनी आकर्षक काल्पनिक संमोहक दुनिया में चला गया। त्रीलोक की सबसे से सुन्दर औरत अपनी पत्नी के साथ अपने भुत और वर्तमान को समेट कर, अथवा जो भी भविष्य में उसके साथ होने वाला है, उसके लिए तैयार हो कर, वे दोनों शरीर के साथ एक हो गये परमेश्वर के प्रेम को समर्पित करके, तब तक जब तक की अनुशायनी की आखें अकेली उसके शत्रु के समान उसको नहीं दिखने लगी, जैसे वह उसको भष्म कर देना चाहती हो। कमलमित्र ने सोचा ओह! यह अद्भूत आखें, जिससे वह अतृप्त आंखों के आमन्त्रण को वह महशुष कर रहा था, जिन्होंने ऋषियों को पथ भ्रष्ट करने में सफलता को अर्जित किया था। जिसमें मेनका, तीलोत्तमा, जैसी औरते थी, यह सब सोच कर वह बहुत वेचैन होगया, उसको कहीं आराम नहीं मिल रहा था।

इसी बिचार में वह अपने मित्र के पास एक दिन गया, फिर उसके मित्र हसंते हुए उसका उपहास करने लगे, और कहा केवल इस तरह से शब्दों के द्वारा अपने बारें में शेखी बघारना किसी काम का नहीं है। सभी मनुष्य सब कुछ कर सकते हैं और हर औरत एक दूसरी रम्भा के समान है, उसके सौन्दर्य के बारें बहुत ज़्यादा शेखी मत बघारों, जमिन पर उतरों, अपनी पत्नी के सामर्थ को हमारे सामने ले आवो, और वह अपनी शक्ति को दिखा कर यह सिद्ध करें की वह त्रीलोक में सबसे सुन्दर और शक्तीशाली औरतों में से एक हैं। ऐसा हमारें द्वार बहुत कठिनाई से सुना जाता हैं कि पर्वत की चोटी के निचें घने जंगलों में एक संत रहते हैं। जिनके तप के कारण स्वयं देवता भी परेशान और आतंकित रहते हैं। वह एक अद्वितीय और प्रशंनिय संत है, यदी तुम्हारी सुन्दर पत्नी के छुने से उनका पत्थर दिल बदल जाये, तब ही हम उसके सौन्दर्य को सत्य मानेगे, अन्यथा हम तुमको केवल शब्दों की नदी समझेगें जिसमें अनियन्त्रित शब्द बह रहे है।

और फिर कमलमित्र अपने मित्रो के ताने से चिढ़ कर कसम खाकर चिल्लाते हुए, कहा मुर्खों! अगर मेरी पत्नी उसके सनतत्व को बदलने में आसानी से शपल नहीं होती है, जैसे आकास से पानी घास में जाकर पड़ता है वैसे ही वह संत नहीं बदल गया और वह असफल रहती है, तो मैं अपने सर को काट कर गंगा नदी में बहा दुंगा। फिर उसके मित्र उस पर दोबारा हसंने लगे, और कहा ज़्यादा जल्दी मत करना, क्योंकि एक बार सर कट गया तो फिर नहीं मिलेगा, तुम कोई दशकन्धर नहीं हो की तुम्हारें सर को पुनः प्राप्त किया जा सकता हैं।

लेकिन कमलमित्र बहुत जल्दी में वहां अनुश्यनी को प्राप्त के लिए चल दिया, और उसने उसको वहीं कमल पुस्पों के तालाब में पाया, और उसने उसको बताया अपने प्रण के बारें में, और कहा जल्दी करों, हम तत्काल चल कर अभी इसका परिक्षण करेगें, और तुम्हारी शक्तीशाली आखों के आकर्षण को सिद्ध करेंगे, जिस पर मेरी अगाध श्रद्धा है, बिना किसी प्रकार की देर किये हुए, क्योंकि मैं तुम्हारे आँख के प्रदर्शन के द्वारा, उस संत की मूर्खता के मूर्खपूर्ण संदेह को दोषी ठहराता हूँ।

फिर अनुश्यनी ने धिरे से कहा प्रिय मेरे पती, इससे वह क्रोधीत हो सकता है, और इस अविवेक पूर्ण निर्णय से, मुझे डर है, कि उसके साथ बुराई करेगें जिससे हम दोनों को उसकी सजा मिल सकती हैं। समाप्ति के लिए अपराध का पालन करता है, निश्चित रूप से अपने मार्ग से रोहिणी की ऊँची एड़ी पर चलने के रूप में इस दाने के प्रयोग में पाप और खतरे हैं, और अब हमारे लिए यही बेहतर होगा कि हम इस छेड़छाड़ की कगार पर न चलें, जिससे हम दोनों अपरिवर्तनीय आपदा में गिर सकते हैं।

लेकिन जैसे ही उसने ऐसी बात की, उसकी आंखें कमलमित्रा पर जा कर ठहर रही थी, और उसकी आंखों ने उसे परेशान कर दिया, और उसके शब्दों को मानने के लिए उसने स्वयं के अन्तर्तम को नष्ट कर दिया। क्योंकि कमलमित्र ने कुछ भी नहीं सुना जो उसने कहा था, लेकिन जुनून की अंधेपन से भरा था, और उसकी सुंदरता के सर्वज्ञता से कभी भी कोई अधिक सुन्दर हो सकता हैं, ऐसा उसका विश्वास नहीं था, और इसलिए, यह देखते हुए कि वह उसे अपनी इच्छा से नहीं बदल सकी, अनुशायनी ने उसे देवी के रूप में दिया और उसे उपज दिया। नहीं, अपने दिल की गहराईयों में वह प्रसन्न हुई, यह पता लगाने के लिए कि वह उसे विचलित नहीं कर सकती थी, क्योंकि वह जिज्ञासा से भरी थी; यह देखने के लिए कि सच्चाई में उसकी सुंदरता तपस्या पर प्रबल होगी, हालांकि वह परिणामों के लिए थरथरा रही थी। हाँ, जहाँ मैं पागल हाथी की तरह सौंदर्य और जिज्ञासा और युवा और आत्म-इच्छा और नशा गठबंधन, आत्म-नियंत्रण का सूती धागा कहाँ है?

तब उन दो प्रेमियों ने एक दूसरे के लिए अलग-अलग चुम्बन किए, जैसे यात्रियों को एक वर्ष के लिए अलग कर दिया गया हो, और फिर भी वे नहीं जानते थे, कि वे आखिरी बार ऐसा कर रहे थे, और फिर वे पुराने तपस्वी को खोजने के लिए जंगल में एक साथ गए, और जब तक वे उस घने जंगल में उसके अन्दर दिल में घुसने तक मानव रूप में प्यार के तीरों की एक जोड़ी की तरह हाथ से हाथ में डाल कर घूमते रहे, और अचानक वे उस पुराने ऋषि पास आगए और उसे खड़े देखा, जो ध्यान में मग्न था, एक पेड़ के रूप में गतिहीन और उसके चारों ओर, चींटियों और दिमकों ने अपनी पहाड़ियों का निर्माण किया था, और उसकी दाढ़ी और बाल उसके सिर से निकल हुए थे, जैसे कि रेंगने वाले प्राणी को होते हैं, जो जमीन पर नीचे तक फैले हुए थे, और पत्तियों से ढके हुए थे, और उसके सूखे अंगों पर छिपकलियों की एक जोड़ी खेल रही थी, जीवित पन्ना कि तरह और उसने सीधे उसके सामने से देखा, उसकी महान आंखों में देखा जिसमें सब कुछ प्रतिबिंबित हुआ, लेकिन उसे उसकी आंखों में कुछ भी नहीं दिखा, स्पष्ट और अचूक और अभी भी, वह पहाड़ी झरने की तरह गतिहिन था, जिसमें सभी मछलियाँ सो रही हैं।

और कमलमित्रा और अनुशायनी ने चुपचाप थोड़ी देर तक एक दूसरे को देखा, और फिर एक दूसरे के साथ वह थरथराते हुए, अंजाने भय के साथ, क्योंकि वे जानते थे कि वे अपनी आत्माओं को दबा रहे थे। लेकिन जैसे ही उन्होंने अपने अंदर मनोभावों की लहर को उठते हुए पाया, अपने दोस्त के उपहास का विचार करते हुए, कमलमित्र का दिमाग वापस अपने निर्णय पर आगया, और अपनी पत्नी को क्रोध से भर दिया, और उसने अनुशायनी से कहा, आगें वढ़ों और इस वृद्ध मुनी को तुम देखती रहो, और मैं इसके द्वारा आने वाले परिणाम को चिह्नित करूंगा।

इसलिए अनुशायनी आगे बढ़कर अपने पति के आदेश का पालन कर करने कि लिए, तब तक वह धिरे-धिरे पत्तियों के ऊपर उनको कुचलते हुए आगे बढ़ती रही, और तब तक की जब तक वह ऋषि के सामने नहीं पहुंच गई, और जब उसने देखा कि वह संत बिल्कुल हिल नहीं रहा था, तो उसने खुद को उसकी आंखों में देखने के लिए अपने आपको अपने एड़ियो पर उठाया, और खुद से कहा: शायद यह संत मर चुका है, और उसने उसकी आंखों में देखा, और वहाँ कुछ उसकी आखों में अपनी दो छवियों को शिवाय कुछ नहीं दिख रहा था; कठोरता के दो अवतारों की तरह, ऐसा लगता था कि वे सावधान हो रहें थे! और जब वह वहाँ खड़ी थी, अनिश्चितता के झुकाव में थरथराते हुए, कमलमित्रा ने उसे उत्साह से देखा और खुद अन्दर ही अन्दर हँसते हुए; और कहा: निश्चित रूप

से वह वृद्ध मुनी अब जीवित नहीं है, अन्यथा वह उसकी आंखों के दरवाजे के माध्यम से संत की आत्मा तक पहुंच जाती, क्योंकि वह नीचे की दुनिया में थी।

इसलिए जब वे वहाँ खड़े थे, धीरे-धीरे, वह ऋषि-ऋषि खुद समाधि से बाहर आगया, क्योंकि उसने महसूस किया कि उसके ध्यान में किसी अन्य चीज़ से विध्न पड़ रहा था, और उसने अपनी आखों को खोल कर देखा और अपने सामने अनुश्यनी को खड़ा पाया, जो दिन के प्रकाश में करीब नए चंद्रमा की तरह से दिख रही थी, उत्तम सौंदर्य कामुक्ता के शुद्ध रूप में, एक चमकदार निलम के समान बिना किसी दोष के, स्वर्ग के रंग के साथ गुलाबी अधरो के साथ और तुरन्त, अपने स्वयं के रहस्यमय ध्यान की शक्ति से, उन्होंने पूरे सत्य और मामले की सटीक स्थिति को जान कर उसको विभाजित कर दिया, और उसने उस तरह की सुंदरता पर एक नज़र डाला, एक हिरण के रूप में दुःखी, फिर भी एक गरज के रूप में भयानक: और तुरंत साहस उसकी आत्मा से भाग गया, और उसके घुटनों से ताकत गायब हो गई, और वह कमल के सिर के साथ जमीन पर गीर गई, जैसे कमल टूटा हवा के झोके से जमिन पर गिरता है।

लेकिन कमलमित्र आगे बढ़ कर उसको थाम कर, उसे अपनी बाहों में पकड़ लिया। फिर जब वे एक साथ खड़े हुए, तो वृद्ध तपस्वी ने उनको श्राप देते हुए, धीरे कहा: अपमानजनक प्रेमियों, अब वह सुंदरता जो इस विद्रोह को कभी भी उचित इनाम के साथ मिलती है। अब तुम दोषी हो, मरे हुए गर्भ में जन्म लोगों और निचले दुनिया में अलग होने की पीड़ा से पीड़ित होगे, जब तक कि तुम मानव दुःख की आग में अपने अपराध को दूर नहीं कर लेते।

फिर अलगाव के श्राप को सुनने के बाद, अगाध दुःख से भर कर वह दोनों एकान्त बिहड़ जंगल में उस संत के चरणों में गीर पड़े, और उनसे विनती करते हुए कहा, कृपया आप श्राप को कुछ कम करें, हमारे श्राप की सिमा को निश्चित करें, और फिर संत ने कहा कि इस श्राप का तभी अंत होगा, जब तुम दोनों में से कोई एक किसी एक की हत्या नहीं कर देगा।

फिर वह दोनो अप्रसन्न प्रेमी एक दूसरें को मौन में अदृश्य आत्मा में देखा। फिर उन दोनों ने एक दूसरों की आंखों की गहराई से परिपक्व संतुष्टी को सोखते हुए, जैसे वह दोनो कोई पवित्र तिर्थस्थान पर यात्रा करने के लिए जारहे हैं, जो एक दूसरें से अलग हो कर एक भयंकर समन्दर के दो किनारों पर विद्यमान है। और कह रहे है कि वह दोनो एक दूसरें के लिए बने हैं, और हमें हमेंशा अपनी आत्मा से याद करना। फिर अचानक वे दोनो अदृश्य हो गये, विजली की चमक के साथ किसी दूसरे लोक के लिए।

लेकिन भगवान महेश्वर जब अपने आसन पर बैठ कर उनको जाते हुए देखा, तो उनके भविष्य में उदय होने वाले दुर्भाग्य के लिये और उन्होंने अपनी दिव्य शक्तीयों से देखा, जो भी उन दो प्रेमियों के साथ आगे होने वाला था। और उनको अपना दिया गया वरदान याद आया, जो उन्होने वायु के समान आत्मा वाले पुरुष नर कमलमीत्र को दिया था। और उन्होंने अपने आप से कहा कि अब जिसे मैं भविष्य के रूप में देख रहा था वह वर्तमान में घटने वाला है। और अनुश्यनी की दिव्य आंखों ने अपना अद्भूत माहाविपत्ति रुपी अनर्थ को उतपन्न कर दिया हैं। लेकिन मैं उसकी अद्भूत और अलौकिक शरीर को ऐसे ही भाग्य के भरोषे नहीं छोड़ सकता हूं, क्योंकि उसके पास मेरी दिव्य शक्तीयों का कुछ भाग है।

और कमलमीत्र ने यह सब होने के बाद, बहुत अधिक किसी दूसरे के उपर दोषों का आरोपण नहीं किया, क्योंकि वह परमेश्वर के द्वारा दिये गये वरदान को पाकर बहुत अधिक वेचैन और घबरा गया था, जो उस औरत की आंखों में दिखाई दे रहा था।

भगवान शिव अपने आपको उसका अपराधी समझ रहे थे, अन्यथा कौन जीम्मेदार है? इस घटना का, इसलिये भगवान शिव ने उन दो प्रेमियों को विछणने के बाद उनकी देख भाल की जीम्मेदारी को वहन करने का फैसला किया। मैं अपने मन को उनके साथ हुई विलक्षण साहसिक घटनाओं से आनन्दित करुंगा।

इस तरह से भगवान शिव ने काफी विचार मंथन चिन्तन करने के बाद, योगीओं के गुरु ने एक कमल पुस्प लिया और इसको उन्होंने पृथ्वी पर समन्दर से थोड़ी दूरी पर रख दिया, जो एक द्विप में परिवर्तित हो गया, जिसमें भगवान शिव ने अपनी जादुई शक्तीयों से पृथ्वी जैसी प्रकृती से अलौकिक स्वर्ग को रचा, अपने आप को जानने के लिए और भविष्य को समझने के लिए।

लेकिन वृद्ध योगी जिसका नाम पापनाशना था, जब दो युगल प्रेमी वहाँ से अदृश्य हो गये, तो वह अकेला ही जंगल में अपनी योग साधना में पुनः लिन होगया, और उसकी आंखों में अब तक उन दो प्रेमियों की तस्वीरें झलक रही थी, जो धिरे-धिरे उसके मन में धुधंली पड़ती जारही थी, जैसे बादलों की परछाई एक बड़े झील के पानी पर यात्रा करती हैं। और जिसे झील का पानी धिरे भुल जाता हैं, और कुछ पल में सब कुछ गायब हो जाता है।

२ रात्री निद्रा और एक स्वप्न

लेकिन अनुश्यनी जब वह जंगल में से अदृश्य होकर वह पृथ्वी पर गिर पड़ी, जैसे आकाश से तारा टुट कर जमीन पर गीरता हैं। और महान राजा इन्द्रालय के सबसे पत्नी के गर्भ में प्रवेस किया, उस संत के श्राप के परिणाम के कारण इन्द्रालय राजा के पुत्री के रूप में और कुछ समय के बाद उसका जन्म हुआ, नस्वर संसार के मृत्युलोक के दुःख के साथ, जहाँ दिव्यात्माओं के हिस्से में भी शारीरिक, मानसिक, आध्यात्तमिक क्लैश का होना अनिवार्य है। और उस क्षण उसने अपने शरीर से निकालने वाले दिव्य अलौकिक आभा से सम्पूर्ण गर्भ गृह को आलोकित कर दिया, जैसे उसके शरीर में कोई दिव्य दिपक जल कर चारों तरफ अपने प्रकाश को फैला रहा हो, जिसको देख कर दाईया और दूसरी औरतें जो उसके जन्म होने के इन्तजार में वहाँ उपस्थित थी। वह सब यह देख कर आश्चर्य से भर गई, और आश्चर्यचकित हो कर कहने लगी, कि इस नवजात बच्ची की आंखों की पलकों के साथ जो धारी की धार काले चाबुक के निसान के समान है, वह हमें प्रताड़ित कर रहे हैं। वह ऐसे प्रतित हो रहे थे, मानो बादलों का झरमुट चंद्रमा को अपने आगोस में लेने के लिए बढ़ रहे हैं, और उसको उदित होने से रोक रहे हैं, और अचानक वह गुलाबी चाबुक के सामन दिखने वाले धारी दार निशान जैसे परदे के पिछे छुप गए, और उनके निचे निले रंग की बाढ़ आगई हो, जिसकी खुशबु मानो पूरे गर्भगृह में व्याप्त हो रही हो, कर्पुर चन्दन की लकड़ी की तरह जिसको आखों से देखा जा सकता था। जो भी उसके चारों तरफ उपस्थित लोग खड़े थे वह अपनी इन्द्रियों से इसको अच्छी तरह से महशुस कर रहे थे। तब तक कि जब तक वह सब कमरें से निकल कर कुछ दूर नहीं चली गई, और जैसे आदमी अपने पिछे पड़ा हो और आकाश की गहराईयों में घुर रहा हो, उन सबने महशुस किया जैसे लिफाफे में भर कर स्वर्ग का अवतरण हो रहा हो, और जो अपने सांसारिक वोध कार्य को विस्मृत कर चुका हो। हंलाकि वह सब यह नहीं जानती थी जो कुछ भी

होरहा है, जैसा कि वह समझ रहीं हैं, वह केवल चंद्रमा को अपने बालों के जुड़े में धारण करने वाले भगवान शिव के ऐश्वर्य के प्रतिबंब की महिमा का दिदार कर रही थी।

तो इस तरह से वे सभी चुपचाप उस बच्ची के चारों ओर खड़े होकर, बच्ची की आंखें को देख रहे थे, और अंत में, राजा और उसके मंत्रियों और उनके चिकित्सकों, ज्योतिषियों ने एक लंबी सांस ली और एक-दूसरे को आश्चर्यचकित हो कर देखते रहे, और कुछ समय के बाद प्रधान मंत्री ने राजा से कहा कि यह एक अद्भुत बात है। ये आंखें एक बच्चे के लिए नहीं हैं, बल्कि ऋषि सी, या बल्कि भगवान की आंखें हैं और निश्चित रूप से यह केवल एक प्राणघातक महिला नहीं है, बल्कि कुछ देवता, या किसी एक देवता का एक हिस्सा है, किसी श्राप से मारी गयी है, और उस जन्म के समय में थोड़ी देर में किए गए पापों को समाप्त करने के लिए, इस निचले दुनिया में थोड़ी अवधि के लिए अवतरित हुई हैं, जिससे उस श्राप का नष्ट या बर्बाद हो सकता हो। ऐसी वस्तुओं के लिए दिव्य आत्माएं अक्सर इस मृत्युलोक में आती हैं। और एक संदेह से परे अपने महामहिम परमात्मा द्वारा चुने जाने के कारण से उनके अवतार का मतलब है, कि यह इष्ट प्रदत्त है। फिर अपने मंत्री के इस भाषण को सुनते हुए, जिनके शब्द हमेशा घटनाओं के अनुकूल थे, राजा बहुत खुश था और उसने असाधारण भव्यता के साथ अपनी बेटी का जन्म उत्सव मनाया, और ब्राह्मणों और गरीबों को सोने और गांव दान में दिए, और अपने ज्योतिषियों और ब्राह्मण ऋषियों के साथ सलाह लेते हुए नामकरण किया, और उनके अनुप्रयोगों में कुशल, उन्होंने अपनी बेटी को श्री देवी का शुभ नाम दिया। क्योंकि उसने कहा: उसकी आंखें कमल की तरह हैं और जिन फुलों में वे रहते हैं, वे निश्चित रूप से हैं: और निश्चित रूप से वे समुद्र से गुलाब होने पर सौंदर्य की देवी की आंखों की महानगूंज हैं, और उसके नीले कमल के पालना में लेटे हुई हैं, जिस फोम की वह रचना की गई थी और उन आंखों के साथ आश्चर्यजनक तरंगों को देखकर, जिन्होंने उनका मज़ाक उनका उड़ाया और उन्हें अपने रंग से विस्मृत करके लूट लिया।

इसके बाद जब कुछ समय बीत गया, और मौसम के साथ वर्षों के रेगिस्तान पर कारवां जैसे एक दूसरे का पीछा किया करते हैं, और बुढ़ापे और भूरे रंग के बाल आए और राजा के कान की झुर्रियों वाली जड़ पर अपना निवास बना लिया, और इस बीच श्री एक बच्चे से एक लड़की में बढ़ गई, और लंबाई में उसमें एक महिलापन की सुबह का प्रारंभ हो गया, और जैसे मोमबत्ती चंद्रमा के सींगों की तरह, उसके अंग गोलाकार और सर्वोच्च सुंदरता के साथ बहुत ही सुन्दर तरिके से अपने स्थान पर पूर्ण विकसित हो गए, और वह एक औरत के रूप में हो गई, क्योंकि यह सुंदरता के समुद्र में उपस्थित नमक के समान थी, जो अत्याचारी प्यासा पीता था, और नीले रंग के पानी के लिए एक असहिष्णु लालसा उसकी आंखों के झीलों में व्याप्त हो रहा था। और अंत में एक दिन ऐसा आया जब राजा उसके पिता ने उसे देखा और खुद से कहा: फल परिपक्व हो चुका हैं, और अब यह समय है कि यह फल के रूप में किसी के द्वारा उपभोग किया जाए।

इसिलए राजा महिलायों के कक्ष में गया, उसकी माँ और अपनी प्रमुख रानी माद्दशेना से मिलने के लिए, लेकिन जब उसने अपनी पत्नी से अपनी पुत्री के बारे में जाना, जो उसकी रानी पत्नी ने बताया कि यह उसके विवाह का प्रस्ताव सब अनुपयोगी हैं, क्योंकि हमारी पुत्री एक भी शब्द अपने पति के सम्बंध में सुनने को लिए तैयार नहीं हैं। राजा ने कहा इन बातो से बहुत कम हमारा सम्बंध होगा। यह क्या कह रही हो? क्या पके हुए फसल की खेती को काटने से मना किया जा सकता है? अथवा एक कुवांरी कन्या विवाह करने से इन्कार करना चाहिये। क्या वह अभी परिपक्व विवाह के योग्य उम्र में नहीं है, और घर में उगाई गई पहली महिला इस दुनिया

में और उसके सम्बंध में खुद को और उसके रिश्ते को बदनाम नहीं करती है? माद्दशेना ने कहा आप स्वयं उससे बात कीजिये, और अगर आप उसको विवाह करने के लिए तैयार कर सकते हैं, तो उसे मनाइये। अपने स्वयं के समझौते के लिए उसने मुझे बताया कि उसकी शादी एक ऐसी चीज थी जिसे एक सपने में भी नहीं सोचा जाना चाहिए।

इसलिए राजा ने अपनी बेटी से स्वयं सवाल करने के लिए उसको अपने पास बुलाया। और थोड़ी देर के बाद, श्री अंदर कमरें में अपने पिता के पास आ गई, अपनी नशिली चाल किसी हंस के सामान की तरह चल रही थी, और जैसे हवा में एक फूल की तरह बह रही थी। क्योंकि उसकी कमर को मुट्ठी से पकड़ लिया जा सकता था, और उसके आकर्षक नितम्ब उभरे हुए किसी सागर की गौरवशाली लहर की तरह से जो हिचकोलें खारहे थे, और एक बच्चे की तरह वह अपने पिता को देख कर हल्के-हल्के होंठों से मुस्कुराते हुए, अपनी अध खुली आँखों से देखते हुए, जैसे एक गीले शुद्ध कमल के रंग के जादुई आकर्षण उसके बरौनी का के माध्यम से उसे पहले ही सुसज्जीत कर रहे थे, और उसके कमर में करधनी के साथ दूसरें आभूषण जो उसकी चाल के साथ संगीत मय स्वरलहरियों से सम्पूर्ण वातावरण को अपनी छन-छनाहट की खुशी के साथ आप्लवावित कर रहे थे, जबकि चमकते हुए उसके गहने जिसके साथ वह सभी बदले रंगों में शामिल थी, जैसे कि उसकी आंखों के द्वारा होने वाले अलौकिक डाह की ईर्ष्या के साथ घुंघरु के बज रहे थे, और वृद्ध राजा ने उसे गर्व और आश्चर्य के साथ प्रसन्नता से देखा, और वह खुद में हँसेते हुए कहा: आश्चर्यजनक है चालाक निर्माता और एक महिला के सौंदर्य की समझ से बाहर रहस्य है! क्योंकि मैं बूढ़ा हूँ और मैं उसका पिता हूँ और फिर भी मैं उसके सामने एक घरेलू नौकर की तरह दुनिया के शासक की उपस्थिति में महसूस करता हूँ। निश्चित रूप से वह एक जवान आदमी पागलपन और उत्साह में इसके साथ अपने जीवन का निर्वाह करेगा, और निर्माता ने भी ऐसा ही किया हैं! कोई उद्देश्य के लिए एक महिला की नशा के इस अवतार के रूप में? निश्चित रूप से वह मानव रूप में एक पति का आदर्श सहसम्बंध होगा! और फिर उसने उससे कहा: मेरी बेटी, यह वहीं समय है कि तुम विवाहित हो जाओ, क्योंकि अविवाहित बेटी को अपने पिता के घर में रखाना मर्यादा के खिलाफ है, जिससे हमारी बहुत बड़ी संसार में निंदा होगी।

फिर श्री ने कहा प्रिय पिता, इस प्रकार बात मत करो। मुझे यहाँ वश जीवित रहने दो और मरने दो, क्योंकि मैं शादी नहीं करना चाहती हूँ। राजा ने कहा बेटी यह क्या है? जो तुम कह रही हों यह कैसे संभव है? क्या पति आपके जन्म का श्रेष्ठ उद्देश्य नहीं है? श्री ने कहा मेरे लिए पति का भी सपना मत देखो, और इसके लिए एक कारण है, क्योंकि मैं अन्य सामान्य सेविकाओं से अलग हूँ। और यह सुनकर, राजा बहुत परेशान हो गया, और वह अपने भौंहों के निचे से श्री को देखा, और खुद से कहा मेरी यह बेटी निश्चित रूप से सच बोलती है। अगर यह मेरी वेटी है, तो अन्य कुंवारी की तरह नहीं है। जो किसी भी के लिए उसकी सुंदरता में बराबर देखा था, या जो कोई भी एक युवती से किए जाने वाली शादी या जो मैने आपत्ति के बारे में सुना? या मेरा मंत्री सही था और क्या यह वाकई छिपे रूप में कोई देवता है?

इस तरह से दिन भर वह उससे आग्रह करता रहा, और उसके साथ बहस करता रहा। लेकिन अंत में, यह पता चला कि उसे स्थानांतरित करने के उनके प्रयास व्यर्थ थे, जैसे कि वह एक सूती धागे के साथ हीरे के मड़ियों को पिरोने की कोशिश कर रहे था, उन्होंने निराशा में कहा निश्चित रूप से पूर्व जन्म में मेरे अपराध असंख्य और भयानक थे, क्योंकि यह उनका फल है, यह हमारी एक

बेटी के रूप में मिला, जिसका पति के खिलाफ कठोर और अस्पष्ट पूर्वाग्रह महिला की प्रकृति का सामना करती है, और मेरे उद्धार को नष्ट करने का साधन होगी। फिर आखिरकार श्री ने कहा प्रिय पिता, गुस्से को में मत करो, और मैं आपको सच बताऊंगी। आपको पता होना चहिये, कि मैं भी एक पति की इच्छा करती हूँ, लेकिन केवल एक पति के लिए और वह कोई अन्य नहीं है। फिर राजा ने कहा, तो वह पति कौन है? श्री ने कहा मुझे नहीं पता। लेकिन वह सूर्य के कमल की भूमि से, मेरा दावा करने के लिए आएगा, और राजा ने कहा, सूर्य के कमल की भूमि कहा है? श्री ने कहा मैं नहीं बता सकती। लेकिन एक सपने में मैंने स्वर्ग से कमल गिरते हुए देखा है, और मैंने एक दिव्य आवाज सुनी है, कि मुझे जल्दी नहीं करनी चाहिए, परन्तु प्रतीक्षा करना है; क्योंकि तुम्हारा पति तुम्हारे पास सूर्य के कमल की भूमि से आएगा। क्योंकि वह तुम्हारें पति जो पूर्व जन्म में था, और तुम उसे एक संकेत से जान लोगी। तब राजा ने कहा, वह संकेत क्या है? श्री ने कहा मैं नहीं बता सकती, क्योंकि यह केवल देवता और मेरे लिए जाना जाता है। लेकिन अब, या तो मेरी शादी छोड़ दो, या यदि आप कर सकते हैं, तो मेरे लिए एक ऐसे आदमी को ढूंढें जिसने सूर्य के कमल की भूमि देखी हो, राजा की बेटी का पति बनने के लिए और वह मेरा पति होगा। उसके साथ मैं केवल शादी करूँगी और कोई दूसरे से नहीं।

और जब राजा ने यह सुना, तो वह आश्चर्यचकित हुआ और श्री को देखकर चुप बैठ गया, और उसने खुद से कहा यह एक अजीब कहानी है, और मेरी इस रहस्यमय बेटी का आचरण अचूक है। सूर्य के कमल की यह भूमि क्या है? क्या यह एक कल्पना है, एक लड़की का मज़ेदार सपना है? या क्या सपना वास्तव में पिछले अस्तित्व को इंगित करता है? और उसने थोड़ी देर के लिए सोचा और फिर उसने कहा शायद वह ठीक कह रही है। जैसा कि वह कह रही है और उस आदमी को खोजने का प्रयास करना चाहिए, जिसने वह सूर्य की भूमि देखी हो। नुकसान कहाँ है? यहाँ तक कि यदि कही वह पाया जाता है, तो हमेशा विचार करने का समय होगा और इसके अलावा, ऐसा हो सकता है कि वह एक पति प्राप्त करेगी, जबकि वह निश्चित रूप से किसी अन्य से शादी नहीं करेगी। बेहतर है कि उसे एक पति मिलना चाहिए, चाहे कैसा भी हो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है, जिसकी तुलना में हम सभी को नष्ट करने के लिए एक युवती रहती हैं।

तब उसने अपनी बेटी को खारिज कर दिया, और अपने दरबारियों को बुलाया, और उनसे कहा कि यह सारे राज्य में उद्घोषणा करवा दिया जाए, और उन्हें हर शहर के मध्य में भेजो, और उन्हें कहो कि वह नगाड़े को पिट-पिट कर घोषित करें, कि किसी भी उच्च जाति के आदमी ने जिसने सूर्य के कमल की भूमि देखी है, वह मेरे राज्य को साझा करेगा और मेरी बेटी से शादी करेगा। और उसके दरबारियों ने यह आदेश सुनने पर आश्चर्यचकित हुए, लेकिन वे तुरंत चले गए और राजा के आदेश को मंत्रियों को बताया।

३ नगाड़े की चोट पर

इसलिए राजा के आदेश पर राजधानी की व्यस्त सड़कों पर, जोर-जोर से नगाड़ा को पिट-पिट कर उद्घोषणा लोग करने लगें, कि जो भी महायाजक मनुष्य सूर्य के कमल की भूमि पर गया है, उसे राजा के पास आने दो, वह राजा के राज्य को साझा करेगा, और राजा की बेटी शादी करेगा। यह घोषणा सुनकर, शहर के सभी नागरिक और अजनबी आश्चर्यचकित हुए, राजा की बेटी की सुंदरता की प्रसिद्धि तीनों लोकों में फैल चुकी थी और मधुमक्खियों की तरह गूंजते हुए, वे संदेशवाहक चारों ओर दिन-रात घूमते हुए उद्घोषणा कर रहे थे। और ऊपर और नीचे भागते थे, सब लोग सबसे पूछते थे, सूर्य की कमल की यह भूमि क्या है? यह कहाँ है, या इसे किसने

देखा है? और शहर की सड़कों पर एक बड़ी उग्र भीड़ एकत्रीत होगई, और वे शोर में चिल्लाते और चिल्लाने लगे, और यह समाचार पड़ोसी के साम्राज्यों में लोगों के साथ पहूंच गया, इंदिरालय में और तुरंत लोगों की भीड़ मल्वा और दक्कन और उत्तर के हर हिस्से से पहुंच गई, और दुनिया की हर हिश्से में और दूसरें व्यापारियों और कामकाजी जातियों के साथ, जिन्होंने सभी अपने सामान्य व्यवसाय को छोड़ दिया, गठबंधन में इकट्ठे हुए और उस कमल भूमि और इसकी प्रकृति और इसके इलाके की खबरों के लिए बेसब्री से पूछते हुए खड़े हो गए, लेकिन इसकी विशिष्टताएँ वाली जगह के बारे में कोई भी नहीं पाया जा सका, जिसने कभी इसके बारे में भी सुना था, इसे बहुत कम देखा। तो दिन-प्रतिदिन सड़कों पर घोषणा की गई, और पूरे दिन शहर में चिल्लाने वाली चिड़ियों के साथ नगाड़े के ध्वनियों से भरा था, और सारी रात दिन लंबी जागृती के साथ बिना नींद के चिल्लाते रहे, जिसके कारण नागरिकों की आंखों से निद भाग गई, दिन के प्रारंभ से रात्री तक वह लोग क्रोध और हिंशक भाव के साथ आवेश में चिल्लाते रहते थे, लेकिन सभी व्यर्थ था, क्योंकि कोई भी व्यक्ति नहीं ढूंढ सकता था और न ही कोई यह कहने के लिए आगे आया, की मैंने सूर्य के कमल की भुमी या उस देश को देखा है, और मुझे इनाम दें।

अंत में नागरिक राजा और उसकी बेटी द्वारा बताये गये कमल की भूमि पर, लोग खुद के साथ गुस्सा हो गए, और यह देखकर, बृद्ध राजा चिंता के कारण बीमार पड़ गया, और उसने खुद से कहा, मेरी सुंदर बेटी चालाक है, क्योंकि वह सुंदर है और संदेह से परे यह उसके द्वारा तैयार की गई कुछ चाल है, मुझे प्रसन्न करने के लिए और उसके बगबारी से बचने के लिए एक पति लिए, और हम सब उसके द्वारा बेफूकुफ बनाये गये है। और अब मुझे डर है, कि जनता का क्रोध में मेरे विषय विद्रोह में बदल सकता हैं और कर चुकाने से इनकार कर सकते हैं, या मुझे छोड़ सकते हैं। मेरी बेटी और उसकी नीली आंखों पर और महिलाओं की चालाकी और उनके कुटिल दिल! क्या दुनिया में ऐसी कोई भूमि है, जैसे सूर्य के कमल की यह भूमि, जिसमें से मेरे सभी प्रभुत्वों में, पृथ्वी के हर चौथाई से व्यापारियों और अजनबियों द्वारा प्रेतवाधित, किसी ने कभी भी इतना सुना नहीं है?

४ सूर्य का ग्रहण

अब कमलमित्र, जब वह तपस्या के अभिशाप से अनुश्यनी से अलग हो गए थे, तो धरती पर गिर गए, और एक दूर देश में सौर सामराज्य के राजा के पुत्र के रूप में पैदा हुए, और उसके पिता ने उसे उमर-सिंह का नाम दिया, क्योंकि ज्योतिषियों ने कहा कि वह शेर की तरह धरती पर जीवित रहेगा, और आकाश में अपने प्रतिद्वंद्वी की तरह इसे चलाएगा, और जब वह बड़ा हुआ, उस देश में कोई भी नहीं था जो सवारी, या कुश्ती, या तलवारबाजी, या किसी अन्य मार्शल व्यायाम में उससे मुकाबला कर सके, बाकि लोगों ने उसके बारे में कहा कि वह प्रकृति की आत्मा की तरह दिखता है, जिसका एक क्षत्रिय रूप में है, जिसने शरीर को अपने कर्मों के अनुकूल पाया है। निश्चित रूप से वह कुमार विष्णु का अवतार है, राजा के दुश्मनों के विनाश के लिए धरती पर आ गया है, और स्त्रियों ने उसके चारों ओर मक्खियों की तरह भिन-भीनाते हूए स्वयं को प्रकट कर दिया था, क्योंकि उनके दिल उसके द्वारा टुकड़े-टुकड़े किए गए थे, जैसे कमल की पंखुड़िया की तरह, अपने गौरवशाली युवक के जंगली हाथी द्वारा और उनकी आत्माएँ सौंदर्य की अमृत के साथ नशे में थीं, उसकी आकृति और उसके पीछे पंक्तियों में बंधे बंधुओं की तरह उसका पीछा किया। लेकिन उमर सिहं उन सब पर हँसता और यहाँ तक कि चाँद कलगी को धारण करने वाले भगवान शिव के समान संसार के वासनाओं के विश को पीकर भी उसको अपने गले से

निचे नहीं उतरने दिया, इसी प्रकार से लगातार अपने को कमलमित्र संसार सागर के घातक जहर को पिया, बिना उसकी खशबु को गले के उतारे ही।

तब एक दिन उसके पिता ने उससे कहा आओ, अब मैंने तुम्हारें विवाह को अपने सबसे शक्तिशाली दुश्मन की बेटी के साथ व्यवस्थित कर देता हूं, इस प्रकार से हमने समझौते के तरीके से अपने शत्रु को भी मित्र बना लेगें। उमर-सिंह ने कहा नहीं, इसके लिए एक और दुल्हे को खोजें ले, क्योंकि मैंने अपनी तेज तलवार से विवाह किया है। तो इससे उसके पिता नाराज होगये, और कहा यह क्या मूर्खता है? और मैं कहाँ से एक और दूल्हा खरीद सकता हूँ? लेकिन उमरा-सिंह चुप था और तीन बार उसके पिता ने अपने शब्दों को दोहराया। फिर थोड़ी देर के बाद, उमर-सिंह ने कहा मेरे लिए दुल्हन या कोई दुल्हन नहीं, मैं किसी से शादी नहीं करूँगा, लेकिन मेरे सपनों की महिला है। तब उसके पिता ने कहा फिर, यह तुम्हारा सपना कौन है? उमर-सिंह ने कहा: मुझे नहीं पता। लेकिन हर दूसरे महीने, अंधेरे पखवाड़े के आखिरी दिन, एक सपने में मेरे पास एक महिला की दृष्टि होती है, जो चांदी के ऊन के साथ एक पत्तों की बनी नाव में सफेद कमल के एक तालाब पर तैरती है। परंतु वह कौन है? जिसे मैं नहीं बता सकता और उसका चेहरा मैंने कभी नहीं देख सका, क्योंकि वह हमेशा मुझसे दूर हो जाती है।

तब उसके पिता ने हंसना शुरू कर दिया, और उसे डरा दिया। लेकिन उमर-सिंह ने गंगा के लिए महेश्वर की तुलना में अपने उपहास की धारा के लिए और अधिक देखभाल नहीं की जब वह अपने सिर पर गिर गईं। तब उसके पिता ने कहा इस भ्रम को खारिज करो, और शादी के लिए तैयारी करो, क्योंकि मैंने समारोहों की व्यवस्था की है। और दिन नियुक्त किया है। लेकिन उमर-सिंह हँसा और कहा अपने आप से शादी करो, क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ, मैं किसी से शादी नहीं करूंगा, बल्कि मेरे सपने की महिला से ही शादी करूंगा। तब उसके पिता क्रोध में भर गए, और अपने रक्षकों को बुलाया और राजकुमार को जेल में फेंक दिया, खुद से कहा, उसको वहाँ रहने दिया जाये, अपने सपनों के साथ वहाँ रहेंगा, जब तक कि वह हमारी आज्ञा को नहीं मान लेता है। लेकिन उमर सिंह को उसका जेलर राजी हो गया, उसे बचाने के लिए, जो उसके अपने विषयी पिता की तुलना में अधिक प्यार करता था, उसने उमर सिहं को एक दिन बताया कैसे जल से भागना है? और उसने एक रात को जेल का दरवाजा खोल दिया, जिससे उमर सिहं वहां से रात को एक और दूसरें देश में भाग गया, अपने सपने के लिए अपनी शाही स्थिति को छोड़ कर।

और फिर वह शहर से शहर और एक देश से दूसरे देश में गया, उसके बाद उसके पिता द्वारा उसे वापस लाने के लिए भेजे गए दुतों की खोज से स्वयं को उसने बहुत दूर कर दिया, आखिरकार वह इंदिराले में आया और, वह अंदर नगर में चला गया, उस शहर की एक विवादित इलाके के एक भाग में, जहां कुएँ में एक मेंढक की तरह और जीवन और अपने रिश्तों से घृणा करता रहा, अपने दुःख में डूबने के कारण चारों तरफ अपमान से घीर गया, इसके साथ जुआरी और बहिष्कृत लोगों के मध्य में स्वं के घिरा हुआ पाय, पूरी दुनिया को एक भूसे और कबाड़ो के रूप में देख रहा था, उसका साहस अपने उपर पहले अधीक मजबुत हो चुका था, और उसका सपना और वह बहुत कम से कम अपनी उदारता के सूरज में बर्फ की तरह पिघल गया था, या लालची जुआरी के सागर से निगल गया था, जिसके बीच उसने इसे खुले हाथ से बिखराया, अपने पूर्वजों की तरह, पूछने में कुछ भी नहीं और आखिरकार, चरम सीमा तक कम हो गया, कपड़ों में पहने हुए और बादलों की तरह, जो दिन के भगवान को अस्पष्ट रूप से अस्पष्ट कर रहे थे, छुपा नहीं सकते थे,

बल्कि उनके रूप की सुंदरता में वृद्धि हुई थी, खाने या पीने के लिए कुछ नहीं बचा था, उसने स्वयं के शरीर को त्यागने के लिए निर्धारित किया। तो अपनी तलवार दीवार से नीचे ले कर और उसे अपने हाथ में पकड़ कर, वह अपने कुटिल आवास से बाहर चला गया, खुद से कह रहा था, मृत्यु अपमानजनक और महत्त्वहीनता, भूख और जीवन की घृणा से बेहतर है, मृत्यु के लिए लेकिन शुरुआत क्या है? एक और जिंदगी, जो इस से भी बदतर नहीं हो सकती है, हो सकता है कि यह क्या हो? और कौन जानता है? लेकिन मैं उस अगली ज़िन्दगी में उससे मिल सकता हूँ जिसका मैं सपना देखता हूँ इस जीवन में देखता हूँ? जो उसके लिए एक सपना है, उसके लिए अब एक और जन्म में वह मेरी वास्तविकता हो सकती है और मुझे कमल के तालाब में मिल सकता है, जो मेरे लिए एक और ज़िन्दगी में इंतजार कर रहा है। इसलिए अब मैं शहर की दीवार के बाहर जाऊंगा और कुछ निर्जन बगीचे को ढूंढूंगा और वहाँ मैं अपना सिर काट दूंगा, और इसे भेट के रूप में दुर्गा को चढ़ाऊंगा।

और जब वह घर के दरवाजे पर खड़ा था, तो वह यह सोचने के लिए कि उसे किस तरह जाना चाहिए, उसके कान पर, उसी समय, नगाड़े की धड़कन की आवाज सुनाई दी और उसने सुना और कुछ लोगों को रोते हुए, जो भी महायाजक मनुष्य सूर्य के कमल की भूमि पर गया है, उसे राजा के पास आने दो, वह हमारे राजा के राज्य को साझा करेगा, और राजा की बेटी से शादी करेगा। इस पर उमर-सिंह हँसेते हुए और खुद से कहा, क्या! यह क्या है, वे अभी भी एक आदमी की तलाश में हैं, जिन्होंने सूर्य के कमल की भूमि देखी है? और फिर, क्या वे जानते थे कि ऐसी भूमि देखी गई थी?

और फिर अचानक उसने शुरू किया, जैसे कि उसे सांप द्वारा काटा गया था और उसने अपना हाथ अपनी तलवार पर मारा और कहा, हा! लेकिन अगर किसी ने कभी उस भूमि को नहीं देखा है, और कोई भी इसके बारे में कुछ नहीं जानता है, तो, यदि कोई आकर कहता हैं कि लो, मैंने इसे देखा है, कौन यह समझ सकता है कि वह सच बोल रहा था या झूठ बोल रहा था? किसकी वास्तविकता के साथ वर्णन की तुलना कर सकते हैं, न तो वह और न ही किसी और ने देखा? तो मुझे राजा के पास जाने से रोकने में क्या कहना है? मैंने कमल के सूर्य की भूमि को देखी है, और अब दे दो मुझे इसका इनाम? यहाँ के लिए मैं खुद को मौत के बारे में बात कर रहा हूँ; और राजा के हाथों से मुझ पर कितनी बड़ी बुराई हो सकती है, भले ही उसके लिए यह एक धोखे की खोज होनी चाहिए? और फिर भी, वह कैसे हो सकता है? कौन जानता है कि वह भूमि कैसी है, या यहाँ तक कि यह कहाँ है? लेकिन अगर; इसके विपरीत, मुझे सम्मान मिलता है, तो मैं न केवल इस दूर-दराज राजा वाली बेटी को प्राप्त करूंगा, जिसके लिए मुझे कुछ भी परवाह नहीं है, बल्कि उसके राज्य के संसाधन भी हैं; और उनके साथ मैं एक सेना को तैयार कर सकता हूँ, और अपने पिता को अपनी स्थिति में बहाल करने के लिए मजबूर कर सकता हूँ। तो नुकसान कहाँ है? या बल्कि, यह शुद्ध लाभ नहीं है और कोई नुकसान भी नहीं, प्रयास करने और परिणाम का पालन करने के लिए, चाहे मैं रहता हूँ या मर जाऊँ? आगे बढ़ना चाहिए,

फिर तुरन्त, बिना किसी हिचकिचाहट के, वह नगाड़े वादको के पास गया, और उनसे कहा अपना चिल्लाना बंद करो, और मुझे राजा के पास ले चलो, क्योंकि मैंने कमल के सूर्य की भूमि को देखा है। लेकिन चिल्लाने वालो ने जब सुना कि वह क्या कह रहा है? उनके कानों पर विश्वास नहीं हुआ, और लगभग अपनी आत्मा को अपने शरीर का त्याग कर दिया, एक अतिरिक्त खुशी के साथ। क्योंकि वे थकावट से लगभग मर चुके थे, और लगातार पूरे दिन से चिल्ला रहे थे, और उन्होंने बरसात के मौसम में पहले बादल की

दृष्टि से मोर की तरह नृत्य किया, और उसे उन्होंने अपने हथियारों के मध्य में जकड़ लिया, जैसे कि वे डर गये थे, कि कहीं वह भाग ना जाए, उसे दूर ले जाने के लिए, एक बहुमूल्य गहने की तरह सम्हाल कर राजा के पास लेकर गये, और यह समाचार सूखे लकड़ी में आग की तरह शहर के माध्यम से चारों तरफ फैल गया, कि वहाँ एक आदमी पाया गया है जिसने सूर्य के कमल की भूमि देखी है। और लोगों की एक बड़ी भीड़ हर सड़क से भाग कर उसके पास पहुंच गई, और उसको चारों ओर से दबाकर अपने साथ महल में चले गए, और समुद्र के समान भीड़ उससे पहले खड़े हो गई, जबकि रक्षक उसे राजा दरबार में ले गए।

लेकिन जब राजा ने यह खबर सुनी, तो वह खुशी से रोन लगा और उमर-सिहं को यह अमृत का एक मसौदा कि तरह अनपनी आँखों में देख रहा था, और जैसे वह अपनी शारीरिक रूप से अपने सभी इच्छाओं की तृप्ति को प्राप्त कर लिया हो, और राजा ने उससे से कहा, हे तू अनजाने में आनन्दित मेरा दामाद होगा, क्या तू ने सूर्य के कमल की उस शापित भूमि को कभी अपनी आँखों से देखा हैं? और उमर सिंह ने साहसपूर्वक कहा हाँ, मैंने उसे देखा है और मैं उसे अच्छी तरह से जानता हूँ। तो तुरंत अपने अधीरता में राजा ने अपनी बेटी के कक्ष के लिए खुद को लेकर भागते हुए गया और कहा तुम्हारें लिए दूल्हा, मिल गया है, हमारे पक्ष में बाधाओं के विपरीत परमेश्वर की इच्छा से, यहाँ एक राजपूत है जिसने सूर्य के कमल की भूमि को देखा है। तो किसी प्रकार की देरी के बिना अपनी शादी के लिए तुम तैयार करो।

फिर श्री ने कहा प्रिय पिता, इस मामले में कोई जल्दीबाजी नहीं करनी है, और आप कैसे जानते हैं? कि यह आदमी सच्चाई बोल रहा है, जो सत्य नहीं बल्कि कुछ अपवित्र और असत्य भी बोल सकता है, जो केवल मुझे और आधा राज्य सुरक्षित करने की इच्छा रखता हैं, झूठा बोलकर उसने देखा है कि वास्तव में उसने कभी नहीं देखा है। क्योंकि यह दुनिया इस तरह के चालाक धुर्तों से भरी पड़ी है, जो केकड़े की तरह, राजा की संपत्ति को मछली पकड़ने के समान अपनी जाल में फंसा कर निगलना चाहते हैं, तालब की तरह मछली पकड़ने के बारे में जाना है। इसलिए उसे जांचने के लिए, उसे पहले मेरे पास भेजिये, और उसके बाद हम देखेंगे कि क्या यह विवाह समारोह तैयार करने का समय है या नहीं।

तो राजा ने कहा ऐसा ही होग, और उसने उमर-सिंह को अंदर महल में भेजा, और उसे श्री के सामने उसकी उपस्थिति में लाया गया, और श्री ने देखा उसे खड़ा हुए, जिसने हाथ में तलवार ले रखा था, लम्बी शरीर और भूखे शेर की तरह पतली कमर के साथ, एक बैल के समान और लंबी बाहों के साथ जिसमें राजा के सभी शाही निशान उसके कंधों के उपर उपस्थीत थे। और वह उसे अपनी चपेट में अपमानित करती हैं, उसकी नग्नता के लिए और फिर भी वह जो कुछ भी चाहती थी, वह नहीं कर सका, लेकिन उसकी इच्छा के विरुद्ध उसके प्रति खींची गई, उसके दिल ने उसको अंदर ही अन्दर उकसा रहा था, और उसे अपने पूर्व जन्म के मंद-मंद याद आरहा था, जिसे वह भूल गई थी, अपनी आत्मा में संघर्ष कर रही थी और अपनी गहराई से उबरने की कोशिश करने लगी, और वह खड़े होकर, चुप्पी में देख रही थी, आंखों के साथ जिसको उमर सिहं ने भी देखा, लेकिन उसने नहीं देखा, जैसे कि एक लंबे समय से भूलने वाली आवाज के स्वरों को कोई सुनता है, स्मृति के भवन में उठती हुई आवाज को और जागृति लालसा और शौक के पछतावे के साथ और जैसा कि उसने उसको देखा तो देखता ही रह गया, वह उस पर नीले रंग की एक बाढ़ के रंग से बाहर उसके चमत्कारिक संदिग्ध आंखों की ओर और उमर-सिंह ने उसे देखा, जिसकी पूरी दुनिया नीले रंग के द्रव्यमान में उसकी दृष्टि से गायब हो गई। और वह अपनी नज़रों के झटके के नीचे रुक गया, जिसने उसे एक मैखाने की तरह निर्दयतापूर्वक मारा और समय और स्थान उसकी आत्मा

से भाग गया, जो रंग और आँसू, हंसी और दर्द से भरा हुआ था, और वह सांस लेने के लिए एक लंबी गहरी सांस ली। उसकी आधी याद आंखों की दृष्टि से उसके दिल को पकड़ लिया, और लोहे के कोड़े की तरह मारने से रोका। उस पल वहाँ उसे पहले कमल तलाब का सपना आया जहाँ गुलाबों के मध्य स्वप्न सुन्दरी उसी औरत को देखा, और वह जानता था कि यह श्री ही थी लेकिन वह जुबान से कुछ कह नहीं पारहा था।

तो वे दोनो वहाँ खड़े थे, जैसे दीवार पर चित्रित चित्र हो, एक दूसरे पर देखकर और एक सपने में छाया की तरह, अपने आप को विस्मरण के अंधेरे में याद करने के लिए व्यर्थ में व्यर्थ ही होना था, और फिर, थोड़ी देर के बाद, श्री स्वयं उसके पास आयी, और उसने धीरे-धीरे कहा तो तूमने सूर्य के कमल की भूमि को देखा है? फिर इसकी विशिष्टताओं का जिक्र करों और मुझे बताओ कि आप वहाँ पर कैसे पहुंचे?

लेकिन उमर-सिंह उस समय हकलाने और हिचकियाने लगा, उसकी आंखों ने उसे अपने कार्य के कारण से वंचित कर दिया था, और वह और कुछ नहीं सोच सकता था। और उसकी सारी आशंका गायब हो गई, जिससे वह भयभीत हो गया, और उसका दिल टुट गया, उसने कहा कोई बात नहीं, उसने जो कुछ कहा, उसने किसी को नहीं बताया, फिर अनुश्यनी ने अपने कार्यालय के कर्मचारियों से इनकार कर दिया, और उसके कानों ने एक और आदमी की तरह सुना। उसने कहा श्री मैं वहाँ कभी नहीं गया, मुझे नहीं पता कि कैसा है? कभी घूमते हुए मुझे पता नहीं था किसी कचरे और रेगिस्तानी पहाड़ों के बीच में मुझे कितना समय लगा था, जब तक मैं इस भूमि पर नहीं आया, मुझे नहीं पता कि वह सूर्य की कमल की भूमि कहलाती है, मुझे नहीं पता ऐसा मेरे साथ क्यों हुआ?

लेकिन जैसा कि उसने कहा, जादू टूट गया था और श्री जाग चुकी थी, क्योंकि यह एक सपने के जैसा था और उसने अपने आप को केवल एक कठोर राजपूत के सामने देखा, उसकी कहानी में उसने ठोकर खाई और उसके सामने से स्वयं को छीन लिया, और वह चतुर झूठ से भी अपनी दासता का समर्थन करने में असमर्थ रहा, और वह शर्मिंदा थी और खुद से नाराज भी थी और जैसे ही उसने सुना, उसे अचानक हंसी आगई जिसको स्वयं के अन्दर ही उसने जब्त कर लिया। और उसने कहा: ध्यान से सुनो! कहने के लिए तुम इस उच्च जाति नायक हो और तुमने सूर्य की कमल भूमि को अपनी नींद में सुना है! वह चला गया कि वह कहाँ गया नहीं जानता था और क्या वह नहीं जानता था और शुरुआत में शुरू हुआ और अंत में समाप्त हो गया। इसलिए वह हँसे और उसे मजाक में उड़ा दिया, जबकि वह उसके सामने खड़ा था। क्योंकि वह एक झुकाव में था, केवल उसकी आवाज का संगीत सुन रहा था और उसकी डरावनी आंखों में आग से पहले उठने वाले धुए के समान जो एक डरावनी आतंक की तरह चिल्ला रही थी।

तब अचानक श्री ने अपने चेहरे पर हाथ लपेट लिया, और कहा क्या तुम सब सुन रहे हो, या तुम सब बहरे और गूंगे हो? क्या आप एक राजपूत हैं और फिर भी आपको अंत में अपना लगाव पूरा करने के लिए पर्याप्त साहस नहीं मिल सकता है? अजीब! कि इस तरह के शरीर के निर्माता द्वारा इस तरह की आत्मा को ग्रहण के रूप में चुना जा सकता है। और वह राजा के पास चली गई, और कहा प्रिय पिता, जैसा मैंने कहा था और जैसा कि आप देखते हैं, यह साथी एक दुष्ट है। उसे बाहर रखो, इसलिए; और फिर भी, उसे कोई नुकसान नहीं है। यद्यपि वह एक अज्ञान पूर्ण गुफा में है, फिर भी वह एक सुंदर और काल्पनिक अज्ञान की गुफा है, सजा और उग्रता की तुलना में बल्कि अवमानना और हंसी का हकदार है।

तब राजा ने अपने सुरक्षा अधीकारियों से कहा इस अपवित्र को पकड़ लो और उसे सड़क पर बाहर फेंक दो। तो राजा के सिपाहियों ने उमर-सिंह को जब्त कर लिया, जिन्होंने कोई प्रतिरोध नहीं किया और उसे सड़क पर फेंक दिया गया, क्योंकि वह लोगों के पैरों से पिट रहा था और उनके पैरो से उड़ने वाली धुल के गुबार से स्नान कर रहा था, और तुरंत नगाड़ा बादक वहां से चला गया, एक दौर पहले की तरह शहर में, फिर से नगाड़े की धड़कन और जोर-जोर से होने लगी थी कि जो भी उच्च जाति का आदमी कमल सूर्य की भूमि को देखा हो, वह उसे राजा के पास आने दे, वह राजा के राज्य का हिस्सा होगा, और राजा की बेटी से शादी करेगा।

५ प्रेरणा स्त्रोत

लेकिन उमर सिंह सड़क पर पड़ा था, एक जीवित व्यक्ति की तुलना में एक मृत की तरह, चोटों और भावनाओं से आहत और बेकार हो कर। और लोगों की भीड़ों का एक दौर उसके उपर अपनी हाथ सांफ कर रहे थे, और लोग रोज की भांती सड़क पर सैर करते समय उसकी ओर इशारा करते हुए, भीड़ उसके पास से चल रही थी और उसे अपने पैरों से मार रही थी। और उसने उन सब के बीच में से अपने शरीर के जख्मों को देखा जो किसी शिकारी द्वारा मार डाले गए काले हिरण की तरह एक प्राणघातक घाव की तरह थे। और अपने चारों तरफ मानव बंदरों को चकित करने वाले एक दल से घिरा हुआ था। तब उन घबराहटों के बीच में उसने कहा कि उसने झूठ बोल दिया था, और इसके बाद हर आदमी अपने रास्ते पर चला गया। क्योंकि सूर्य अस्त होने जा रहा था। और थोड़ी देर के बाद, वह स्वयं अकेला था, जिसके पास कोई नहीं आया, और जब तक वह एक निर्जन जंगल में एक तालाब के पास नहीं पहुंच गया, तब तक कठिनाई के साथ जमीन पर रगड़ते हुए बड़ी कठोरता के साथ पैर से किसी तरह चलता गया, और आराम करने के लिए उस तालाब के कगार पर लेट गया। और दु:ख की बात है कि वह अपने सभी अंगों में था, इससे पहले उसने कभी अपने शरीर के दर्द को महसूस नहीं किया था, लेकिन उसकी आंखें में श्री की आंखों के कड़वे घृणा की नीली महिमा से डर भर गईं थी, और उसकी आवाज और उसकी हंसी की आवाज उसके कान, और उसके दिल में गुजं रही थी, जो उसके लिए एक बहुत बड़ी शर्म की बात है। इस प्रकार से वह लंबे समय तक लेटा रह गया, श्री की छवि को देखकर जो उसके आंखों के सामने तैर रही थी, और अपनी आत्मा को एक सांप के दांतों की तरह चिपकाये, और फिर भी इसका एक भाग जैसे सोया हुआ था, जबकि इस समय चंद्रमा आसमान में उग आया था। और फिर अचानक वह बैठ गया, और एक बार अपने चारो तरफ देखा। और उसने तालाब और पेड़ के साथ चंद्रमा की छवि को पानी में देखा, और याद किया कि वह कहाँ था? और जो कुछ उसके साथ हुआ था। और वह गहराई से चिल्लाया, और खुद से कहा हाय मैं अभी भी इतना अपमानित होने पर जींदा हूँ! उन्होंने ने मुझे एक बेईमान जुआरी की तरह से मार डाला, और खेल की तरह खो दिया। और अब, मुझे कोई साम्राज्य नहीं मिला है और कोई राजा की बेटी भी नहीं मीली है, बल्कि केवल मखौल उड़ाया गया, जो मेरे लिए भयानक शर्म की बात है। अफसोस! काफी जल्दी ही मैंने अपने सपने को पाया और फिर से मैं उसे एक पूर्व जन्म में किये गये पापों का भयानक क्लैशों के माध्यम से खो दिया है। तो अब, कुछ भी नहीं बचा है, जितनी जल्दी हो सके मैं महल में जाने से पहले क्या कर रहा था, और खुद को, बहुत सच्चाई में, मौत के मुहं में डाल दिया। जीवन के लिए मैं अपने सपने की महिला को ढूंढने से पहले अनजान लग रहा था। लेकिन अब तक यह बदतर है, क्योंकि मैंने उसे केवल अपनी आंखों में घृणा की बात, सौ से ज्यादा मौतों की तुलना में अधिक भयानक पाया है।

और उसने अपनी तलवार ली, और उसके किनारे की तीखेपन को महसूस किया, और उसे अपने गले में डाल दिया। और जैसे ही उसने अपनी त्वचा को छुआ, उस पल में उसने रात की चुप्पी में एक रखवाले की आवाज़ को सुना, क्योंकि वह शहर की दीवार के पास चला गया था, जो भी उच्च जाति वाला आदमी कमल की भूमि पर गया है सूर्य के कमल को देखा है, उसे राजा के पास में आने दो, वह राजा के राज्य को साझा करेगा, और राजा की बेटी से शादी करेगा।

यह दोबारा सुनते ही तलवार उसके हाथ से गिर गई, और वह अपने पैरों पर उठा, और स्वं से कहा यह क्या हो रहा है! वह उस आदमी के लिए है जिसने कमल की भूमि देखी है, और यहां मैं सूर्य की दौड़ का राजपूत हूं, इस तालाब में चंद्रमा की छाया के साथ अपनी मृत्यु का सपना देख रहा हूं, जबकि कमल की भूमि अभी तक बेकार है! अब मुझे कमल देश मिल जाएगा, जहां भी यह हो सकता है, और फिर मैं वापस आकर उसका दावा करुंगा, जैसा कि मैंने पहले किया था, लेकिन अब मैं एक सच्चे योद्धा की तरह से उसका तलास करुंगा फिर उसको अपने अधिकार में करुंगा।

और तुरन्त उसने अपनी तलवार उठाई, और उसे हवा में फेंक दिया। और तलवार एक चक्र की तरह बदल गई, चांदनी में चमकता हुआ, और जमीन पर वापस गिर गया। तब उमर- सिंह ने इसे उठा लिया, और तुरंत शहर से बाहर चला गया, जिससे एक चौथाई उसकी उंगली का हिश्सा तलवार के धार से खुन के साथ निकल गया।

६ निशाचर

और जैसे काली मधुमक्खी फूलों से फूल पर मधु को चुसने के लिए फिरती है, उसी प्रकार से के वह शहर से शहर और एक देश से दूसरे देश में घूमने लगा, और वह उत्तर और पूर्व और पश्चिम और दक्षिण में चला गया, हाथियों के दृष्टि समान जब तक कि आठ तिमाहियों का उसे पता नहीं था। फिर भी उसने कभी भी ऐसा कोई नहीं पाया जो उसे उसके रास्ता बता सके, या जिसने कभी सूर्य के कमल की भूमि का नाम सुना होगा। और इस बीच सूरज की गर्मी के मौसम ने उसे भट्ठी की तरह जला रहे थे, और ठंड के मौसम ने उसकी नसों के खून को ठंडा कर दिया, और बारिश उसके सिर पर जंगली हाथी की तरह बरसती रही, और अंत में, उसने खुद से कहा, अब कइ वर्षो और महीनों से हर मौसमों में मैं खोज रहा हूं, और फिर भी मैं कमल की भूमि के लिए अपना रास्ता नहीं जान पाया, जैसा की मैंने पहले किया था। और निस्संदेह, अगर ऐसी भूमि दुनिया में मौजूद है, तो यह केवल हवा के पक्षियों के द्वारा जानी जा सकती है। इसलिए अब मैं मनुष्यों के नगरों और कस्बों को त्याग दूंगा, और भयंकर गहन वन में प्रवेश करूंगा, क्योंकि इस तरह से मेरे लिए कभी भी ऐसा भूमि खोजना संभव नहीं होगा, जिसके बारे में कोई भी मनुष्य कभी भी नहीं सुना है।

इस तरह से वह जंगल में गया और आगे दक्षिण में अपना चेहरा घुमा कर चलने लगा। और तब जब घने जंगल में पेड़ मोटे हो गए, और लंबे-लंबे होने लगे, जब तक उन जंगलो के अन्दर में सूर्य की रोशनी निचे आना बंद नहीं कर देते थे। और आखिर में एक दिन ऐसा आया जब उसने अपने सामने देखा, जैसे वह स्वयं को मृत्यु के मुंह में धकेल दिया हो इस तरह से चरों तरफ केवल एक घनघोर अंधेरा के कुछ भी नहीं दिख रहा था। और उसने उसके पीछे देखा जैसे सूर्य अस्त होरहा हो, और शाम की रौशनी एक शानदार

तरीके से प्रतित हो रही थी। और उसे लगा जैसे कोई भयावह डरावनी चेतना उसकी पिछा कर रही है। जिससे वह अन्दर ही अन्दर अन्जाने भय से आतंकित होरहा था। और जैसे ही वह धीरे-धीरे चल रहा था, अपनी तलवार के धार से अपना रास्ता महसूस करते हुए घने अंधेरे बिहड़ जंगल में आगे बढ़ रहा था, अचानक अंधेरे में उसे एक चेहरा दिखा जो उसको छुप-छुप कर देख रहा था, और उसकी लंबी लाल जीभ उसके मुंह से लप-लपा कर बाहर निकल रही थी। और उमर- सिंह ने वहां से पिछे चलना वापस शुरू कर दिया, और उसने देखा वहां अपने सामने जंगली वृक्षों की मूल को खाने वाला एक वैरागी खड़ा था, जिसने वृक्ष की छाल के लबादा को पहन रखा था, जो अपने लंबे-लंबे बालों के साथ और जिसके नाखून एक खतरनाक पक्षी के पंजे की तरह थे, उसके पैर और बाहों नंगे थे, और उसकी त्वचा इस तरह की थी जैसे किसी हाथी के पैर होते है।

तब उमरा सिंह ने कहा पिताजी, आप यहां क्या कर रहे है? कलाकारों के गुरु आप ऐसा क्यों कर रहे हो? जो इस प्रकार से मुझ पर अपनी जीभ को मुंह से बाहर निकाल कर किसी छड़ी की तरह फेंक रहें है? फिर बैरागी ने कहा बेटा तुम यहां किस कला की तलास कर रहो हो? जहां पर कुछ नहीं बल्कि पेड़ और उनसे भरा एक जंगल जिसमें तू राक्षसों और महान परमेश्वर के बाल के समान सिर्फ वृक्षों को देख सकते हों, जिनमें से यह एक सांसारिक प्रति रुप की तरह है, जहां चारों तरफ शिवाय अंधेरे कुछ नहीं है। उमर सिंह ने कहा मैं एक राजपूत हूं, जिसने अपने रिश्तेंदारों से झगड़ा कर लिया है, और मैं सूर्य के कमल की भूमि की तलाश कर रहा हूं। फिर वैरागी ने कहा वे बहुत कम हैं जो कमल भूमि ढूंढना चाहते हैं, और उनमे से भी बहुत कम जिसने अभी तक इसे पाया हैं, उन सभी में से भी सबसे कम, वह है जो यहां कभी वापस आ गये है। तब उमर- सिंह ने आश्चर्यचकित होकर कहा, और क्या आप कमल भूमि के बारे में जानते है? तो कृपया मुझे बताइये कि वहां मुझे इस जंगल से कैसे पहुंचना चाहिए? तब वैरागी हँसने लगा, और कहा हा! हा! तुम्हारे सवालों के जवाब देने से पहले, मैं तुमसे प्रश्न पूछने के लिए तैयार हूं, लेकिन मैं कुछ भी नहीं के लिए कुछ भी नहीं देता हूं। तुम्हे पता है कि मेरे पास भी मेरा पूरा जीवन दिख रहा है, न केवल एक तरफ, बल्कि तीन लोके लिए। और अब, यदि तू मेरे तीन प्रश्नो का उत्तर देगा, तो मैं भी तुम्हारे तीन प्रश्नो का उत्तर बता तुझे बता दुंगा।

तब उमर- सिंह ने कहा तीनों में से एक का सौदा ठीक नहीं है, लेकिन फिर, हमें आपके उत्तरों की अत्यधिक जरुरत है, क्योंकि मैं अपना रास्ता भटक चुका हूं, और आपके संसार में खोने के तरीके क्या हैं? वैरागी ने कहा: मेरे सभी जीवन में मैंने कोशिश की है दुनिया का रास्ता है, और महिला के मार्ग, और मुक्ति के रास्ते को खोजने और जानने के लिए, और अभी तक उनमें से किसी एक के रूप में सच्चाई से कुछ भी नहीं बता सकता हूं। और यह एक अद्भुत बात है। कई लोगों की विशेषता होती है दूसरों के लिए बहुत आम होना चाहिए, और फिर भी यह कैसे सामान्य हो सकता है? कि सभी की प्रकार की जानकारियों से बचा जासके? मुझे बताओ, फिर, दुनिया का मार्ग, और मैं आपको सूर्य के कमल की भूमि पर अपने रास्ते का एक तिहाई हिस्से के बारें में बताऊंगा।

तब उमर सिंह ने कहा कि आपने बहुत जटिल और विकट प्रश्नो को मेरे सामने रखा हैं, फिर भी मैं इस सौदे को करने के लिए तैयार हूं इसका उत्तर मैं आपको अपने तरीके से दुंगा, क्योंकि मुझे श्री की नीली आंखों की कामना है और उसी को ध्यान में रख कर ऐसा करुगा। आपको पता है, कि यह दुनिया का रास्ता है। वहां पहले, गंगा के तट पर, शिवा का एक पुराना खाली मंदिर था। और एक रात, बरसात के मौसम में, तूफान से खुद को बचाने और आश्रय देने के लिए, एक वृद्ध तपस्वी महिला मंदिर में प्रवेश करती थी।

और उसके ठीक बाद ही इसी तपस्या के उद्देश्य के लिए एक उल्लू ने भी मंदिर में प्रवेश किया। जब कि उस मंदिर की छत में चमगादड़ की जाति की संख्या बहुत अधिक थी जिसने उस मंदिर परिसर कभी नहीं छोड़ा था। और वह सब उल्लू देखकर, उन्होंने बूढ़े औरत से कहा तुम कौन हो? और यह किस प्रकार का पशु है? तब बूढ़ी औरत ने कहा मैं देवी सरस्वती हूं, और यह मोर है जिस पर मैं इसकी सवारी करती हूं। फिर, जब तूफान जा चुका था उसके पिछे से ही पुराने कपटी धोखे बाजी की चाल आगे बढ़ने लगी। यद्यपी उल्लू, उस निवास के स्थान के रूप में मंदिर से प्रसन्न होने के नाते, वही पर बना रहा, और चमगादड़ों ने इसको दिव्य सम्मान दिया। फिर कुछ साल बाद, ऐसा हुआ कि एक असली मोर मंदिर में प्रवेश किया। और चमगादड़ ने कहा, तुम किस तरह के पशु हो? मोर ने कहा मैं एक मोर हूँ। चमगादड़ ने जवाब दिया, तुम पर भरोसा कैसे करे? तुम धोखेबाज हो! यह मूर्खता क्या है? मोर ने कहा, मैं एक मोर, एक मोर का बेटा हूं, और देवी सरस्वती की गाड़ी खिचने का कार्य हमारी जाति में वंशानुगत रुप से करती है। चमगादड़ ने कहा तू झूठा है, और झूठे पुत्र है; क्या तुम देवी से बेहतर जानते हों? और उन्होंने मवेशी को मंदिर से बाहर निकाल दिया, और वैसा ही सम्मान उल्लु किया, जैसा कि पहले, उल्लू की पूजा करते थे। अर्थात यह संसार में जीने का मार्ग हैं जहां पर उल्लु को मोर बताया जाता है और लोग उसको ही मोर समझ कर पुजते हैं, और सच्चे मोर को लोग धुर्त समझ कर अपने सरण से दूर भगाय देते हैं।

फिर वैरागी ने कहा राजपूत, तूने मेरी आंखें खोल दी हैं। अब से अपने तरीके से तुम्हारें सवाल का एक हिस्सा बताता हूं तू उसको जान। और वह जमीन पर उतर गया, और अचानक एक भक्त के रूप को त्याग कर, एक कथियान्याल बन गया, जो उमर- सिंह के उपर अपनी लंबी लाल जीभ को चिपका लिया, और एक छेद से जमीन में प्रवेश कर लिया, और वह गायब हो गया। और चूंकि उमर- सिंह छेद की जांच करने के लिए नीचे उतरा, उन्होंने वैरागी को अपने पुराने आकार में अपने बगल में फिर से देखा, जिससे किसी तरह से स्वयं को बचाया कि वह फिर अपने मुंह से कथियान्याल की जीभ से चिपकना जारी रखता है, और उसने गुस्सा में कहा कि यह क्या माया है? कथियान्याल और तुम अपनी जीभ से मुझको क्यों चिपकाते हो? फिर वैरागी ने कहा हो! हो! मैंने तुम्हें एक रास्ता और एक दूसरे के लिए एक पहेली सुलझाया है। और अब, मुझे एक महिला का रास्ता बताओ, और अपनी खुद की सड़क का एक और तिहाई सीखो। तब उमर- सिंह ने खुद से कहा निश्चित रूप से यह कोई भक्त नहीं है, बल्कि एक दुष्ट राक्षस है, जो केवल मुझे भ्रमित करने की कोशिश करता है। फिर भी, मैं उसे अपने उत्तर के लिए, और श्री की आंखों में नीली रोशनी के लिए उत्तर दूंगा। और उसने वैरागी से कहा, फिर, एक महिला का तरीका यह है, बहुत पहले, विन्ध्याचल के वनो में, एक वृद्ध ऋषि जिसमें रहते थे। जिनसे देवता भी उनकी घोर तपस्या के कारण ईर्ष्या रखते थे, अपने समर्पण को एक स्वर्गीय नस्ल में बाधित करने के लिए भेजा। उन्होंने अपने स्वर्ग से एक अप्सरा को भेजा वृद्ध ऋषि की तपस्या को नष्ट करने के लिए, जिससे वह वृद्ध ऋषि, उसकी सुंदरता से उबर नहीं सका, और वासना की तृप्ती पूर्ण प्रलोभन के कारण उस अप्सरा एक पुत्री उत्पन्न हुई, और उसके पास एक बेटी रह गई। लेकिन बाद में, अपने पतन के पश्चाताप करते हुए ऋषि ने अपनी आंखों को एक ज्वलंत बेंत से जला लिया, और कहा नाश करो, इस विनाशकारी माया दृष्टी के कारण को और इसलिए वह अंधा हो गया। तब उसकी बेटी जंगल में उस वृद्ध अंधे ऋषि के साथ अकेली बड़ी होने लगी। और वह तीन दुनिया में किसी भी महिला की तुलना में अधिक सुंदर थी। वास्तव में, उसको किसी प्यार के देवता ने देख लिया था। फिर, वह तुरंत रती और प्रीति से भी अति सुन्दरता को प्राप्त कर लिया था, उसके सामने उनकी कोई गिनती नहीं थी, लेकिन वह उसके सामने अपने घरेलू नौकरों के रूप में थी। और उसने छाल के वस्त्रों के कपड़े को पहन रखे थे, बिना किसी दर्पण के यद्यपी वह जंगल के

तालाबों में अपना चेहरा देखती थी। फिर एक दिन एक कौवा जो शहरों से परिचित था, उसके पास आया और कहा, तुम यहाँ क्यों रहती हो? तुम्हारा कोई साथी नहीं बल्कि एक वृद्ध अंधा पिता, जो तुमको अपने पास रहने पर भी नहीं देख सकता है। और अपने मोती के मूल्य को नहीं जानता है। पूरी दुनिया में तुम्हारे समान सुंदरता किसी के पास नहीं है। जाओ और अपने आप को शहरों में दिखाओ, और मैं आपको बताता हूं, पृथ्वी के राजा अपने राज्य छोड़ देंगे, और मधुमक्खियों के झुंड की तरह आपका अनुसरण करेंगे। तब ऋषि की बेटी ने कहा, और फिर, मेरे पिता के लिए चावल और दूध के भोजन पकाने के लिए उनके यज्ञ के लिए ईंधन, या इनके लिए पानी को कौन लाएगा? और वह कौवा से दूर चली गई, और जंगल में रहकर अपने पिता की सेवा कर रही थी, और आखिरकार वह अपने पिता के साथ बूढ़ी हो गयी, और जंगल में ही एक दिन मर गयी, और किसी ने कभी उसका चेहरा नहीं देखा। इस प्रकार से यह एक औरत का मार्ग है जब तक उसको किसी पुरुष की आँख नहीं देखती हैं उसको स्वयं के बारें में पूर्ण ज्ञान भी नहीं होता है।

तब वैरागी ने कहा, तू मूर्ख राजपूत है, मैंने तुमसे एक औरत के मार्ग के लिए कहा, और तूने मुझे मुक्ति का मार्ग बताया है। तब उमर- सिंह ने कहा, तू दुःखी आत्मा जड़ को खाने वाला और निसाचर के समान भटकने योग्य है, क्योंकि सृष्टि के कारण हर महिला ने खुद को एक दूसरे के लिए त्याग दिया है, अन्यथा वह एक औरत नहीं थी, क्योंकि यह सब उनकी प्रकृति है। फिर वैरागी ने कहा, अब मुझसे सीखो, अपने तरीके से एक और हिस्सा। और चूंकि उमरा- सिंह ने उसे देखा, अचानक वह धोखेबाज वैरागी एक बल्ले के रुप में बन गया, और उसे फिर से अपनी जीभ से दूर फेक दिया, और पेड़ों के माध्यम से उड़ गया। और उमर- सिंह ने खुद से कहा जो संदेह से परे था, कि यह कोई तपस्वी नहीं है, लेकिन राक्षस का राजा है; फिर भी, वह मुझे मेरे रास्ते के बारें में बताएगा, अगर वह फिर से आएगा, या यह उसके लिए बद्तर होगा। और अचानक फिर उसने वैरागी को अपने सामने खड़ा हुआ देखा, और उसकी जीभ पहले की तरह, उस पर चिपके हुए देखा। फिर वैरागी ने उमर सिंह से कहा की अब मेरे तीसरे प्रश्न का उत्तर दो कि मुक्ती का मार्ग बताओ जो पहले से और अधिक स्पष्ट हो।

तब उमर- सिंह ने कहा : तू एक पुराना रक्षस है; फिर भी, एक बार फिर मैं तुझे एक जवाब, मेरे रास्ते के लिए, और दे दुंगा श्री के निली गहरी रंगीन आँखों की प्राप्ती के लिए। जानों, कि मुक्ति का मार्ग यह है, पहले सूर्य के वंश का एक राजा था, और वह बहुत बूढ़ा था, और उसके सारे बाल बर्फ के पहाड़ी की ऊपरी चोटी के रूप में सफेद होगये थे। और उसने एक दिन अपने महल की खिड़की से देखा, एक बच्चे को रास्ते पर खेलते हुए, इसके पीछे उसने देखा की उसके पास चलाने के लिए खीलौना गाड़ी थी। जो गाड़ी गिर कर टूट गई, और बच्चे अपने टूटे हुए खिलौने पर रोया। अब यह भाग्य के अध्यादेश से हुआ, बहुत समय पहले, जब वह खुद एक बच्चा था, वही बात उस पुराने राजा के साथ हुई थी। और जैसे ही उसने बच्चे को देखा, अचानक वर्षों की दूरी को खत्म कर दिया गया, और कुछ भी नहीं बन गया। और एक तस्वीर की तरह उसने उसके सामने देखा, खुद की छवि, एक बच्चे के रुप में। और इसके साथ दुःख ने उसको पकड़ लिया, और अपने जीवन की पुनरावृत्ति के लिए एक अचूक लालसा के साथ उसने कहा हे महेश्वर, भगवान महेश्वर, मुझे फिर से अपना जीवन जीने दो। तब अचानक महेश्वर उसके सामने आकर खड़े होगये, और हँसे, और कहा अपने पूर्व जन्म को याद रखों। और अचानक उस पुराने राजा पर स्मृति आ गई, और अतीत के अंधेरे से उसके पहले उसके पूर्व जीवन की श्रृंखला बढ़ गई। तथा महेश्वर ने कहा: नौ और नब्बे जन्मों में नौ और नब्बे बार देखों, आपने मुझसे एक ही अनुरोध किया है, और अब यह एक सौ है। और हर बार जब मैंने तुम्हें अपनी इच्छा के अनुकूल वर दीया है, वह सब व्यर्थ में हुआ। हर बार जब आप भूल जाते

हैं, और बूढ़े होने के बाद ही अपने युवाओं के मूल्य को जानते हैं। तब पुराने राजा ने कहा फिर, मुक्ति कैसे प्राप्त की जा सकती है? महेश्वर ने कहा यह समय पर निर्भर नहीं है, लेकिन ज्ञान पर निर्भर करता है, और यहां तक कि एक तात्कालिक ज्ञान के द्वारा भी इसे प्राप्त कर सकते है। जब दस हजार साल विफल हो जाते हैं। और क्योंकि तूने जीवन का एक छोटा भाग जीया है, अभी तक भी करने के लिए बहुत कुछ है, तुम्हारें अंत से पहले तुम्हे यह ज्ञान प्राप्त हो सकता है। फिर वह गायब हो गये। अब उस पुराने राजा की एक बेटी थी जिसे वह अपनी आत्मा से बेहतर प्यार करता था। और, महेश्वर के साथ बात करते हुए भी, वह एक सांप द्वारा काटी गयी थी और वह मर गयी, और कोई भी भय वश उसे कुछ नहीं बताया था, क्योंकि वे उसे बताने के लिए डरते थे। तो वह अपनी बेटी को देखने के लिए सामान्य रूप से उसके कमरें मे चला गया। और जब वह उसके कमरे में प्रवेश किया, तो उसने देखा, और उसे अभी भी सब कुथ झूठ लग रहा था। और जैसे ही उसने उसे एक शान्त लाश के रुप में देखा, तभी वहां एक उड़ती हुई मक्खी आई, जो उसके बारे में चिल्लाती थी, और उसके होंठों पर बस गई थी। तब उस वृद्ध राजा पर डरावना आतंक छा गया, और उसकी आंखों से भ्रम अचानक गिर गया, और उसकी जड़ में जीवन की इच्छा नष्ट हो गई। और वह बदल गया, और गंगा के इंतजार किए बिना वह समन्दर की यात्रा पर चला गया, और अपने अपराधों को धोने के लिए कुछ सालों तक वहां रहा, जैसे कि जीवन और मृत्यु समान हैं, और अंत में नदी में प्रवेश किया, और वह उसमें डूब गया, और अपने शरीर से मुक्त हो कर महान चेतना के समुद्र मे समाहित हो गया। इस प्रकार से जिसने भी संसार की नस्वरता और छणभंगुरता इसकी समग्रता को अपनी एकाग्रता के साथ ज्ञान चक्षु से देख लिया वही मुक्त हो गया, इस प्रकार से यह मुक्ती का मार्ग है।

तब वैरागी ने कहा, अब सूर्य के कमल की भूमि के रास्ते तक पहहंचने से पहले, तुम्हें अपनी अज्ञानता से मुक्त होना चाहिए। और वह उमर सिहं के उपर अपनी जीभ को फिर से चिपका कर फंसा लिया। लेकिन उमर- सिंह ने अचानक उसे अपनी तलवार का झटका मार कर अलग कर दिया, और भाग्य के रूप में, वह अपनी जीभ के अंत से काट दिया गया। और उस ने उस से कहा, सावधान रहो तब तक कि जब मैं तुम्हें मार डालूंगा, तू बूढ़ा धोखेबाज धुर्त हैं। मैं तुम्हे सूर्य के कमल की भूमि पर जाने के लिए और अधिक समय तक सुनने की उम्मीद नहीं करूँगा, लेकिन इसके बावजूद इसे मैं स्वयं ढूंढुगा। तब वैरागी ने अचानक एक भयानक रूप धारण किया, और कहा, ए राजपूत तुम्हारा दुर्भाग्य पूर्णरुप से विकसीत हो चुका है, तुम्हारे लिए मेरे पास हाय के कुछ नहीं है। क्योंकि तुम अब जिस देश में हो, वह सूर्य के कमल की भुमी नहीं, बल्कि राक्षसों की भुमी है, जिनका मैं मुखीया हूं। और मेरे विषय में तुम भ्रम के साथ असमंजस से घिरे हुए होंगे, जैसे कि अपने पूर्व जन्म के पाप दिखाई देने वाले के रूप में, और वहां निशाचर, उलुपी और गाय-हत्यारे, बालों वाले गोबरैले राक्षस के रुप में, और इसके साथ बर्फिले चिलर, और फड़-फड़ा कर उड़ने वाली भिन-भिनाहट के आवाज के साथ रक्षसियां तुम्हारा आगे इन्तजार रही होगी, और इससे भी भयानक, रेत में रात्री में घुमने वाले अपने गड्ढे में और अन्य प्रकार के दैत्य जो बिना प्रतीक्षा करें तुम पर हमला कर सकते हैं। और यहां तक कि तू उन सब से बचने के बजाय और कमल भूमि तक पहुँचने का इरादा रखता है, तू अभी भी नही वापस जाने के लिए तैयार है। और वह हंसी के चिल्लाहट के साथ वहां से गायब हो गया, और उमर- सिंह को वहां अकेला उसके द्वारा छोड़ दिया गया।

७ रात का एक कमल

फिर उसने अपने आप से कहा हालांकि मैंने इस गंदे स्वभाव वाले वैरागी की जीभ काट दिया है, फिर भी उसने कभी भी मुझे मेरे रास्ते के बारें में नहीं बताया। और वह राक्षस जैसे वृक्षों के बीच में से अपनी तलवार से रास्ता बनाता हुआ आगे बढ़ता रहा, कि जब तक वृक्षों के झुरमुट से छन कर चांदि के समान चांद के प्रकाश की किरणे नहीं आने लगीं। इसी प्रकार से मार्ग के साथ हाथ में तलवार चलता गया, क्योंकि वे अपनी शाखाओं और बालों रुप टहनियों के द्वार चंद्रमा की रोशनी में फैला रहे थे, और वे सारी मखमली किरणें निचे की तरफ झांक रही थी अपनी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए, और स्वयं को प्रकाशित करके उसके मार्ग में रौशनी कर रही थी, जैसे कि वह उसके शाहस और उत्साह की प्रशंसा कर रही हो, और जैसे वह आगे बढ़ा, सामन्यतः अद्भुत किस्म के वृक्ष बढ़ रहे थे, अपनी विशालता के साथ जैसे उसकी निगरानी कर रहे हो, और कुछ दूर पर विस्तृत खुले स्थान में उसने देखा एक निले जंगली तलाब को, जिसमें चंद्रमा के प्रकाश में कमल पुस्प शोभायमान हो रहे थे। जैसे कि अपने सितारों के साथ घिरे स्वर्ग के विस्तार का मज़ाक उड़ा रहें हो, वेद मंत्रो के द्वारा गठित एक दर्पण के नीचे एक और दुनिया का पुनरुत्पादन करने के लिए। और इसके अतिरीक्त चारों तरफ जंगल में जुगनुओं की रौशनी से जगमगा रहा था, जैसे गुनगुनाती हुई मधुमक्खियां अपने पंखों में मशाल को जला कर अपने छत्ते की वापिसी कर रही हो, वह सब असमर्थ होरही हो कमल पुस्पों से अलग होने में जिनको उन्होंने दिन भर प्रेम किया हैं।

और जैसे ही उसने निर्मल और स्वच्छ तालाब के पानी में देखा, उस जल के आईने मे उसनें बहुत स्पष्ठ एक औरत को छवी को देखा, जैसे कि वह नाच रही हो, उसके लबादे का रंग घास के समान था, जो उस समय बहती हुई हवा के कारण उड़ रहे थे। उसके धुमाव दार गोल अंगो के उपर से, और पानी की बुंदे उसके स्तनो पर गीर रहे थे जो, चादनी रात में मणियों या रत्न जड़ित मोतीयों की तरह से चमक को उत्पन्न कर रहे थे। जिसके बालों से मानो सागर की धारा के समान गुलाब रस टपक रहा हो, उसके बाल जैसे काली रात्री की घटा के उत्पन्न कर्ता के भुमिका की तरह से व्यवहार कर रहें थे। और वह नाचने के साथ मधुर गीत को भी गारही थी। जैसे की वह संसार के परम आनन्द से सारबोर हो रही हो, और अपने कानो से हवा ऐसे कर रही थी जैसे मलाय पर्वत अंग्ड़ाई ले रहा हो। फिर उमर सिंह ने अपनी आंखों को उपर उठाया, और देखा एक सच्ची औरत के रुप को जिसके शरीर का रंग निले समन्दर के जल के समान था जो तालाब के दूसरी तरफ अपने नृत्य में मग्न थी।

फिर उसने भी तालाब के पार दूसरे किनारे पर उमर सिंह को देखा, और उन दोनो की आंखे तालाब के पानी में यात्रा करते हुए एक दूसरे से एक हो गई, और तत्काल उसने अपना नाचना और गीत गाना बन्द कर दिया, इसके बाद उसने अपनी तालीयों को बजा कर उमर सिंह को अपने पास एक कोयल की तरह मादक शब्दों से बुलाया। तालाब को पार करके मेरे पास आ जाओ, ओ सुन्दर अजनबी मैं अकेले नाचते गाते हुए चिन्तीत हो रही हूं, और मेरे पास कुछ प्रश्न हैं जो तुमसे पुछना है, और वह स्वयं एक वृक्ष का सहारा लगा कर खड़ी हो कर, उमर सिंह के आने का इन्तजार करने लगी। अपने एक हाथ को वृक्ष के तने पर रखा और दूसरे को अपने नितम्बों के उपर जिसके उपर उसके मादक स्तन थे, वह ऐसे दीख रही थी, जैसे वह श्रृष्टी के प्रारंभ में हुए समन्दर मन्थन के द्वारा निकली हुई अप्सराओं की मलिका हो, जिसके शरीर के उपर चंद्रमा का प्रकाश सिधा पड़ रहा था, जैसे वह स्वयं चौधरी की चांद हो, और इसके साथ उमर सिंह ने उसको देखा, और स्वयं से कहा निश्चित रुप से यह राक्षस की पुत्री अपने पिता से भी अधीक खतरनाक हैं, अब यह

बहुत अच्छी है, जिससे मैं अपनी रक्षा के लिए श्री की नीली आंखों का अश्त्र की तरह से प्रयोग करुगा। अन्यथा इस जंगल में इस अती सुन्दरी के झलक को पाने का मतलब है, कि किसी पुरानी कुल्हाड़ी के द्वारा मेरे ह्रदय का दो टुकड़ा होना निश्चित होगा।

फिर वह तालाब के से दूसरे किनारे पर गया, और उसने उसको वहां पाया। और उसने आगे बढ़ कर उसको पकड़ कर अपने चुड़ी वाले हाथों से अपने पास खिच लिया, अपने होठों को हिलाते हुए, और चंद्रमा के प्रकाश में जैसे कोई नागिन अपने क्रोधीत आँखों से देख रही हो, और वह आकर उसके पास खड़ी होगई। और अपने हाथों को उसके कंधे पर रख लिया, जैसे किसी पत्ते को छु रही हो, और हसंते हुए उसके चेहरे की तरफ देखा, और कहां मैं दैत्यों की पुत्री हूं। और यहां पर अकेले जंगल में रहती हूं, जहां कोई दूसरा मेरे समान नहीं हैं, मेरी छवी को पानी में सुरक्षित रख लो, मुझे बताओं की मेरी जैसी किसी औरत को तुमने अपने जीवन में कभी देखा है। और कभी मेरे से अधिक सुन्दर आँखों को कहीं संसार में देखा है, और उमर सिंह ने उन दो आंखों में देखा, वह आँखों जैसे दो अंधेरे तालाब के समान थी। वह ऐसे महशुष कर रहा था जिसने उसके दिल को अपने बश में कर लिया हैं, और उसका ह्रदय उनसे स्वतंत्र होने की लिए छट-पटा रहा हैं। और उसने अपने आप से कहा, हो सकता है इसने जो कहा वह सच ही है, और अब दूसरी तरफ उसे लगा जैसे उसकी आंखें उससे प्रतिशोध के लिये तड़प रही हो, लेकिन फिर भी उसने उससे कहा कि तुम्हारी आंखें सच में बहुत सुन्दर हैं। इसके वजाय फिर भी समन्दर में बहुत प्रकार से अनगितनत मणी विद्यामान हैं, और निसंदेह उसमें हर एक यही कहता हैं वह स्वयं सबसे सुन्दर है। लेकिन कस्तुरी इन सब से श्रेष्ठ हैं।

फिर उसके चहरे पर एक प्रकार का कुंहासा छा गया, और वह उन कुहांसों के साथ उड़ कर उमर सिंह से कुछ दूर चली गई, और वहां जाकर खड़ी हो गई, जैसे कोई बच्चा किसी वस्तु से रुठ कर खड़ा हो जाता हैं, और अचानक वह वहां से घुमी और अपने सर पर उसने अपनी बाहों के चारों तरफ सुन्दर फुल पत्तीयों से सजाया, और अपने बांधे बालों के जुणे को खोल कर अपने सर के चारों तरफ विखरा लिया। इसके साथ उसने अपने बालों को झटका, और उसके बाल ऐसे प्रतित हो रहे थे, जैसे मध्य रात्री के समान हो, जिनके विच में उसकी आंखें दो तारों की तरह से चमक रही थी। और उसने उसको चारों तरफ से ढक लिया था, जैसे किसी वृक्ष की वेल उसको सर से पांव तक अपने अन्दर समेट लेती हैं, ऐसे ही उसके बाल उसको चारों तरफ से अपने में छुपा लिया था। जैसे काली नागिन अपने केचुर से ढकी होती हैं। फिर उसने अपने हाथों से अपने बालों को अपने चहरे से हटाते हुए, एक मादक मुस्कान के साथ जोर से कहा अब तक तुमने अपने जीवन में कभी भी मेरे जैसी किसी स्त्री को नहीं देखा होगा, जिसके इतने अद्भुत सुन्दर बाल होंगे। और उमर सिंह ने महशुष किया जैसे कि उसका आकर्षक कामुक झलक उसके उपर अपने काम के बाड़ों से हमला कर रहा हो, जैसे कि दो बादल आपस में टकराते हैं और उनके टक्कर से कड़कड़ाती हुई विजली निकलने लगती है। कुछ ऐशा ही उन दोने के मध्य घटित होरहा था। और उमर सिंह ने अपने आप से कहा कि वह अपने बारें में ठीक ही कह रही है। और अब, अगर मेरी आत्मा सिधा इसकी आंखों की लंबी चमक में पहले से ही नहीं फंस गई थी, तो इसके कभी ना खत्म होने वाले बालों के इस असाधारण द्रव्यमान में एक बटेर की तरह स्वयं को इसके जाल में फंसा सकता हूं। लेकिन फिर उसने कहा रात्री के सौंदर्य में प्यारा स्वर्ग अपने सितारों के साथ है, लेकिन प्यारा नीला समुद्र अभी भी इससे प्यारा है, जिसमें वे परिलक्षित होते हैं, क्योंकि इसमें उनकी सारी सुंदरता होती है, और जो अपने आप को प्रेम से जोड़ती है।

फिर उलोपी बहुत क्रोधीत होगई, और चमकती हुई आंखों के साथ खड़ी होगई, जिसके आँखों में क्रोध की ज्वालाए दहक रही थी, और अचनाक वह रुक गई और अपने बालों को जो चारों तरफ विखरे थे, उनको समेट कर अपने बाहों में भर लिया, इसके बाद वह उमर सिंह के पास आई, और अपने बालों को उमर सिंह के चारों तरफ ऐसे लपेट दिया, जैसे वह किसी रस्सी के समान हो, और उसके कानो में धीरे से फुंसफुसाई, अपनो होठे से उसे दुलारते हुए, कहा ओ मुर्ख आदमी मैं रात्री के कमल समान हूं, फिर भी तू मेरा तिरस्कार क्यों कर रहा हैं? दिन के अनुपस्थित कमल पुस्पों की तुलना में, जो बहुत गर्म और धुल से भरा हैं। और बिल्कुल शितल और खुशूबु के समान जैसे उस चंद्रमा का अमृत जो मेरे द्वारा निचे के जगत में फैलती हैं, और उमर सिंह वहां से घुम गया, अचानक उसके बालों से विचित्र हवा बहने लगी, जैसे हजारों मधुर बादल जो इत्रों से भर कर हवा के सम्पूर्ण वातावरण को तरोताजा कर रहे हो, जो उसकी आत्मा को प्रलोभन दे रहे थे, और एक स्वप्न में शान्ती पूर्वक उसकी बातों में फंसाने के लिए। और जैसे ही नजदिक से उमर सिंह ने उसकी आखों में देखा वह थरथराने लगा, उसने अपने सामने भयभित करने वाली क्रोध भरी हुई निली श्री की आंखों को, और उसके हसंने की आवाज को सुना, और इसके साथ उसके राज्य में बजने वाली नगाड़े की आवाज को जिसके साथ यह भी कहा जा रहा था, कि जो कोई उच्य जाती का पुरुष सूर्य की कमल भुमी के बारें में जानता है, वह राजा के पास आये, और उसके आधे राज्य को अपना बना कर उसकी पुत्री से विवाह करे, यह सब उसके कानो में गुंजने लगा। जिसके कारण उलोपी के आकर्षण का नशा मन्दा पड़ गया, और उसने अपने आप को बड़े तेज से झटका दिया, उलोपी के बालों के गिरफ्त से बाहर निकलने के लिए, और उससे कहा ओ सुन्दरी मैं एक राजपुत हू और सूर्य के सामराज्य का रहने वाला हूं, मैं इस चंद्रमा के कमल भुमी को ले कर क्या करुगा? अर्थात मुझको तुम्हारी जरुरत नहीं हैं।

उलोपी उमर सिंह की बातो को सुनकर ऐसे चिल्लाई, जैसे वह कोई जंगली पागल हाथी हैं, और उसने उमर सिंह को अपनी बाहों में जकड़ कर पकड़ लिया, और उसको झकझोरते हुए हिंसात्मक रुप से कहा क्या तुम्हारी छाती में दिल के स्थान पर को पत्थर रखा है? जिसके कारण तुम्हें मेरा सौंदर्य नहीं दिखाई पड़ रहा हैं। क्या तुम नहीं जानते क मेरे समान दूसरा कोई सुन्दर तीनों लोको में नहीं हैं? और उमर सिंह ने उसकी तरफ देखा, वह गुस्से में पहले से भी अधीक सुन्दर दिखाई दे रही थी, और उसने उससे कहा ओ दैत्यों की पुत्री तुम विल्कुल ठीक कह रही हैं, जैसे कोई सुराही जब भरी हुई होती है तो और अधिक पेय पदार्थ को अपने अन्दर नहीं रख सकती हैं, उसी प्रकार से मेरा दिल भी पुरी तरह से भरा हुआ हूं। जिसके कारण मैं तुम्हें उसमें स्थान नहीं दे सकता हूं। इस लिए तुम मुझको यहां से आगे जाने की अनुमती को दे दो, जैसा की मैं पहले से प्रतिबंधीत हूं, सूर्य के कमल की भुमी को जाने के लिए। फिर उलोपी ने उसको अपने पैरों से ठोकर मारते हुए, कहा मुर्ख, तुम कभी सूर्य की कमल के भुमी को नहीं देख पायेगा।

और फिर वह उमर सिंह का मखौल उड़ाते हुए, तत्काल निचे वहीं जमिन पर बैठ गई, और स्वयं को अपने लंबें बालों से घायल कर लिया, और इसके साथ उसने रोना शुरु कर दिया, और जैसे ही उसने रोना शुरु किया, तभी उसके आंखों से नदीं के समान आँसु बहने लगे, और बह कर वहां से झील में जाने लगे, और तुरंत झील में उफान आने लगा, और वह बढ़ने लगी, और उसने अपने पानी से पुरे जंगल को भर दिया, और उमर सिंह वहां वुत की तरह से खड़ा हो कर, यह सब मायावी परीवर्तन को आश्चर्यचकित हो कर देख रहा था। कुछ समय के बाद उसने आपको एक विहड़ जंगल में खड़ा पाया, जिसके चारों तरफ विहड़ और विशाल वृक्षों का सघन घेरा था। और उसने देखा, अचानक मायवी दैत्य की पुत्री ने स्वं को कोहरे में बदल लिया, और बाढ़ के पानी उपर वास्प की तरह से तैरने

लगी। और उमर सिंह उसके हंसते हुए अदृश्य होने की आवाज को सुन रहा था, जो निरंतर उससे दूर होता जारहा था, जिसके साथ वह भी उससे काफी दूर चली गई थी। और वह जंगल में स्वयं को अकेला खड़ा पाया, जिसके कमर तक पानी भरा हुआ था।

८ सफेद हंश

और पहले के समान पानी बढ़ता ही जा रहा था, जिसमें उमर सिंह को अपने डुबने का भया आतंकित करने लगा, और इसके साथ उसने सोचा की यह आसाधारण और का छल कपट भी अद्भुत है। उसके आंखों से निकलने वाले आंशु भी प्रचुर मात्र में हैं, लेकिन यह दैत्य की पुत्री निश्चित रुप से इस सब का दमन करने में समर्थ थी। जिसकी आँख के आंशुओं से झिल में भयानक बाढ़ आगई, किसी नदी की तरह, जो एक तीहाई संसार को अपने पानी में बहाने के लिए पर्याप्त थे। लेकिन फिर भी इस तरह से अपनी मृत्यु होने से पहले इस बढ़ते हुए पानी से, मेरे लिए यही अच्छा होगा, कि किसी तरह से इस आने वाली मेरी मृत्यु से स्वयं को बचाने के लिए प्रयाश करना चाहिये। इसलिए वह वहां पर उपस्थित एक वृक्ष के उपर चढ़ने लगा, और पानी के उपर से देखने लगा, जिसते उपर चारों तरफ भयानक कोहरा आच्छादित हो रहा था, जिसने चंद्रमा के प्रकाश को लज्जा वश जमिन से आकाश तक सफेद पर्दे के समान ढक लिया था। और उसने अपने आप से कहा यह अपने आप में एक अलौकिक और अद्भुत करने वाले माया का प्रताप है, अथवा वस्तुतः इस जंगल को भी इसके नाम से अच्छी तरह से जानाता हो, जैसा कि लोग कहते हैं कि यह सब जंगल परमेश्वर के बालों के समान हैं, वृक्षों के रुप में चारों तरफ आच्छादित हो रहे हैं। और यह पानी जो गंगा नदीं का हैं जो आश्चर्य चकित करने वाला है। और नवेली चंद्रमा भगवान शिव का आभुषण हैं, लेकिन यह पानी निरंतर बढ़ता ही जा रहा है। और मुझे और उपर इस वृक्ष पर चढ़ना चाहिए।

इसलिए वह वृक्ष पर और उपर चढ़ गया, और जैसे ही वह उपर चढ़ा, उसका पिछा करता हुआ झील का पानी भी पहले से और उंचा और उचां उठने लगा। इसके साथ चंद्रमा और वृक्ष भी उसके उपर आकाश में और अधीक फैल गये, जैसे ही वह थोड़ा और वृक्ष के उपर चढ़ा उसने अपने आप से कहा मुझे निश्चित ही वृक्ष के और उपर चढ़ना चाहिये, क्योंकि इसके शिवाय मेरे पास स्वयं को बचाने का दूसरा कोई साधन नहीं हैं। और जब तक मैं स्वयं को श्री का पती नहीं बना लेता, तब तक मुझे स्वयं के जीवन को किसी प्रकार से बचाना ही होगा। मुझे कछुए के समान निरंतर आगें बढते हुए इस समन्दर के समान बढ़ते हुए पानी से बचाना से स्वयं को बचाना ही चाहिये, इस समय मेरा यही सबसे बड़ा धर्म है। नहीं तो मेरा सर्वनाश होना निश्चित है, और जब तक मैं इस वृक्ष के सबसे उपर वाले हिस्से पर नहीं पहुंच जाता हुं। मुझे अवश्य ही अभी सबसे उपर पहुंचना होगा, और ठीक उसी समय मेरी मुलाकात भी मेरी मृत्यु से तत्काव होगी। क्योंकि वृक्ष के सबसे उपर जाने के लिए और आगे रास्ता बचेगा ही नहीं, और बिना पानी के मैं इस वृक्ष से निचे कैसे उतरुंगा, इसके बारें में मेरे पास किसी प्रकार का कोई उत्तर नहीं है। इस लिए वह उस वृक्ष पर उपर और उपर चढ़ता गया, और निचे पानी उसका निंरतर पिछा करता रहा, तब तक की जब तक चंद्रमा आकाश रुप पानी में नहीं डुब गया, और रात्री अपने अन्त को सामन्य रुप से प्राप्त नहीं होगई।

और फिर सूर्य पुर्व दिशा की पहाड़ियों के शिखर से उदित होने लगा, और ऐसा लग रहा था, जैसे वह स्वयं को ले कर आकाश में चढ़ रहा हो, और पसीना उसके शरीर से बहने लगा, और अन्त में उसने स्वयं को रोक लिया, अपने थकान से आराम पाने के लिए, और उसने अपने आप से कहा कि मैं अब इससे आगे की यात्रा नहीं कर सकता हूं। निश्चित रुप से मैं इस दशा में अपने नाश को उपलब्ध हो जाउंगा, आखिर क्यों मैं यह निर्थक चढ़ाई कर रहा हूं? अब निश्चित रुप से मैं संसार की छत के उपर आचुका हू, जहां पर मेरे साथ केवल आकाश और सूर्य के कोई भी दूसरा नहीं है।

और जैसे ही उसने देखा, अचानक उसने अपने सामने कोई पानी नहीं देखा और कोई पेड़ भी नहीं देखा, और उसका सिर में चक्कर आने लगा, और उसकी दृष्टि चारों तरफ गई, और वह शायद ही कभी अपनी आंखों पर विश्वास कर सके। क्योंकि वह आकाश के बहुत नीचे, एक ऊंचे पहाड़ की चोटी पर खड़ा था। और यह सब उसे पहले की अपेक्षा और भ्रमित कर रहा था। और इसके अतिरीक्त चारो तरफ आगे पीछे उसे, निर्जल का एक विशाल ज्वलित रेतीला रेगिस्तान दिखाई दे रहा था। जो उसकी दृष्टि की सीमा से भी बहुत अधिक दूर तक फैला है, और उसके किनारों पर जहां स्वर्ग का कुछ भाग विश्राम करने के लिए था। और यह एक भट्ठी की तरह सूर्य की किरणों की आग में चमक रहा था। जहां रेगिस्तान में कुछ हल चल होरही थी, जिसमें कुछ बड़े छिद्र थे जिनके साथ कुछ रेगीस्तानी तालाब जो चस्में की तरह से प्रतित हो रहे थे, और रेगिस्तान की सतह उठ और निरंतर गीर रही थी। और जैसे ही वह उसको देख रहा था, उसे लगा जैसे किसी औरत का स्तन हो, और ऐसा लग रहा था जैसे वह जीवीत हैं, यह केवल मृत्यु के घर में ही संभव हैं, और जैसे ही उसने अपनी आंखों को जमा कर देखा, उसकी दृष्टि में कुछ ऐसा दिखा जैसे कोई भयानक प्राणी चल रहा हैं, और उसकी पुंछ उसके पिछे पिछे चल रही थी, जो रेगीस्ताने के रंग का था, जो रेगीस्तान के एक सुरंग में धुस गया। और उसके पिछे उनकी अपनी एक श्रृखंला थी, और कुछ समय में वह सब कुछ दूर जाकर लुप्त हो गये, अब उनकी पुंछ भी नहीं दिखी दे रही थी। यद्यपी उनकी बड़ी बड़ी खतरना जलती हुई आंखे रेगिस्तान से उपर उठ कर जैसे उसको देख रही थी। और ऐसा लग रहा था कि उमर सिंह वहां भयंकर खरतनाक विस्तृत रेगीस्तानपर में विल्कुल अकेला हैं, सभी खतरनाक चमकिली लाल आंखों चारों तरफ से उसको देखकर आतंकित कर रही थी। जिसके कारण उसका रोआं रोआं कम्पायमान हो रहा था। और उसने अपने आप से कहा की अब लगता हैं कि मेरा यहां से जीवीत बच कर निकलना असंभव होगया है।

और फिर उसने अपने आप से कहा, अब यहां वस्तुतः कोई द्विप भी नहीं हैं जहां जा कर मैं अपनी जान बचा सकता हुं, निसंदेह अब मेरी मृत्यु मेरे पास आने वाली हैं, क्योंकि अब मेरा अस्तित्व का अवशेष बचना असंभव है। मृत्यु समान रुप से दोनो तरफ है चाहे उपर जाउं या फिर निचे जाउं, और मेरी मृत्यु की इच्छा हो सकती है, किसी भी तरह से जबकी जहां पर उसके समान कोई आंखें नहीं है। वास्तव में जिसके लिए मैं स्वेच्छा से मृत्यु को ग्रहण कर सकता हूं, वह केवल श्री की नशीली निली आंखों के कोई दूसरा नहीं हैं। तो फिर मैं रेगीस्तान में रहने वाले इन भयावह, खतरनाक, डरावानी, दैत्य रुपी जीवों से जो की मेरी निगरानी कर रहे है, उनकी आंखों से कैसे बच सकता हूं? रुई के समान यह कैसा पदार्थ है? जो मेरे पैरों के निचे घुसंता जा रहा हैं, जैसे समन्दर की लहरें हो, लेकिन जिनके उपर बादलों के छाया के समान कुछ उड़ रहा हैं।

तो इस प्रकार से वह सारा दिन उस उचें स्थान पर बैठा रहा, निचे उतरने की उसकी हिम्मत नहीं हुई, और फिर विशाल सूर्य का प्रकाश आकाश के पश्चिम दिशा में विश्राम करने के लिए चला गया, और चंद्रमा उदित होगई, जिसके प्रकाश में शिकारी रेगिस्तान के

उन राक्षसों की आखें प्रतिबिम्बीत हो रही थी, जो दूर अंधेरें रेगीस्तान में ऐसी चमक रही थी, जैसे काले कमल के पुस्पों पर पानी की बुंदों के मोती हो, और सारी रात उमर सिंह वहीं रह कर उनको देखता रहा, जैसे पक्षी किसी शिकारी सांप के आंखों को देखते हैं।

फिर अगले दिन के भोर तक वह देखता रहा, और जैसे ही सुबह का होना प्रारंभ हुआ, कुछ दूरी पर चमकते हुए संसार के एक किनारे को उसने देखा, अपने से बहुत दूरी पर आकाश में हल्की हवाओ के बिच में दो काले धब्बों को, और वह उन्हें वह ध्यान से देखने लगा जो धिरे धिरे बढ़ते जा रहे थे और जल्दी-जल्दी वह उसके पास करीब आरहे थे, सब कुछ अपने पिछे छोड़ते हुए, जैसे कोई आईना हो, सूर्य की लाल किरणों के साथ बढ़ रहे थे, और वह उसके जब पास आगये, तो उसने देखा वह एक सफेद हंश के जोड़े थे, जिन्होंने अपनी चोच में एक सुनहरे तीसरे हंश की मृत लाश को उठाया हुआ था।

फिर उमर- सिंह ने कहा जय हो! आप उचित पक्षि योग्य नहीं है, निश्चित रूप से आप कोई सामान्य पक्षि नहीं हैं, यद्यपी देवताओं के श्राप के कारण हंस के इन निकायों में जन्म लिया है। तुम कहाँ से आरहे हो? और कहां तुम लोग जाओगे, और यह मृत सुनहरा शरीर क्या है? जो तुम अपने साथ लेकर आये हो? तब स्वान ने कहा हम अपने राजा के शरीर को, मनसा झील से बहुत दूर ले जा रहे हैं। क्योंकि कल रात सूर्य के कमल की भूमि में इनकी मृत्यु हो गई थी। और अब हमें उसे अपने देश में तेजी से आगे ले जाना चाहिए, कि जिससे इनके अंतिम संस्कार के समारोहों का पालन किया जा सके।

लेकिन जब उमर- सिंह ने उनसे सूर्य के कमल की भूमि के बारे में सुना, तो उसका दिल उसकी छाती में उछलने लगा। और हाथ में तलवार फड़कने लगी, वह मृत शरीर के पास चिल्लाते हुए पहुंचा। और उसने स्वानों से कहा, जैसा कि तुम उसे सूर्य के कमल की उस भूमि से यहां ले आये हो, तो अब तुम कसम खाओ, कि तुम मुझे पहले वापस ले जाओगे, अपने राजा के मृत शरीर को वापस लौटने तक यहीं छोड़ दो, अन्यथा मैं उसे अपने पास रखूंगा, और तुम्हारे टुकड़ें कर दूंगा।

जब हंशों ने देखा कि वहां उससे उनकी सहायता करने वाला कोई नहीं है, फिर हंशों ने कहा ठीक है, जैसा तुम कह रहे हो वहीं हो, और फिर उन्होंने प्रतिज्ञा से स्वयं को बांध दिया, और उमर सिंह ने अपने दोनो हाथों से उनकी गर्दनों को पकड़ लिया, और वे अपनी गर्दन को फैला कर रेगिस्तान के उपर से उड़ने लगे, और वह उनके बिच में लटका रहा, और उसने महशुष किया कि उसने उन रेगिस्तानी राक्षसो की खतरनाक चमकती आंखों को पिछे छोड़ कर उनसे बहुत दूर आगया हैं, जैसा कि वह सब उसे उनके चंगुल से बच कर निकलते हुए देख कर बहुत क्रोधित होरहे थे। और काफी लंबे समय के बाद वह रेगिस्तान के एक दूसरे किनारे पर आगये, और उमर सिंह ने अपने निचे देखा निले समन्दर को जो चमक रहे था, जैसे की श्री की आंखें हैं। और उससे कुछ दूर पानी के मध्य में जैसे मटमैले आभूषणों पर एक जामुनी गलिचे के समान एक द्विप बना हुआ था, जिसके उपर एक शहर बशा हुआ था। इसलिए उसने हंशो से पुछा कि यह कौन सी देश है, जिसको मैं अपने निचे देख रहा हूं? इस पर हंशो ने कहा कि यह सूर्य की कमल भुमी है।

इस पर उमर सिंह बहुत अधीक प्रसन्न होकर ताली बजाने के लिए अपने हाथों से हंशों की गर्दन को छोड़ दिया, और इसके साथ अचानक तत्काल वह निचे गिरने लगा, जैसा कोई पत्थर आकाश से समन्दर में गिरता है, यद्यपी हंश वहां से तेजी के साथ वापिस रेगिस्तान की तरफ चल पड़े अपने राजा की मुर्दा शरीर को लेने के लिए।

९ कमल की भूमि

लेकिन उमर सिंह समन्दर के पानी से ऐसे निकला जैसे कोई विशाल पक्षी अपने पंखों को फैला कर जमिस से आकाश में उड़ने के लिए निकलता है। और उसने समन्दर के मध्य में सूर्य के कमल की भुमी को देखा। और वह आनन्द और से खुसी से चिल्लाने लगा, और उसी दिशा में वह तैरना शुरु कर दिया। और दिन भर तैरता रहा,और अन्त में बड़ी कठीनाई से तैरते हुए समन्दर के किनारे पर पहुंच गया। तब तक वह थक कर पुरी तरह से चुर हो चुका था, और किसी तरह से वह रेंगते हुए पानी से बाहर निकला, उस समये सुरज अस्त हो रहा था। और उसके उपर उसकी थाकान भारी पड़ रही थी। इसलिए वह वही समन्दर के किनारें पर ही लेट गया, क्योंकि उसको निद आ रही थी। और पुरी रात्री पुरे दिन तक वही सोया रहा, और जब आकाश में पूर्ण चंद्रमा का दुबारा उदय हो गया, फिर वह निद से उठा और उसने देखा की अब तक वह वहीं शांत पड़ा था।

और वह अपनी आंखों को मलते हुए खड़ा हुआ, और चिल्लाया, हां अब मेरी यात्रा का अंत करीब आ गया है। और यात्रा की सारी भयावह पिड़ा स्वप्न की तरह खत्म हो चुकी हैं। और यह सूर्य के कमल की भुमी एक आश्चर्यमय स्थान है, जिसके बारें में अब तक इन्द्रियालय के किसी व्यक्ती को कुछ भी जानकारी नहीं हैं। इसलिए अब मैं यहां पर पहुंच चुका हुं, अब मुझको यहां करने के लिए कुछ भी नही हैं, मुझे जितना जल्दी हो यहां से वापिस जाना चाहिए, मुझे इसको पाने की कामना थी, और मैं पहुंच कर कहुंगा की मैंने सूर्य के कमल भूमी को देख लिया हैं, लेकिन मेरी बातों पर कौन विश्वास करेगा? मेरे लिए यही अच्छा होगा कि मुझें यहां पर क्या क्या है? इसके बारें में और अधिक जानकारी प्राप्त करनी चाहिए, और इसकी क्या विशेषता है उसको जानना चाहिये, जिससे मुझे दोबरा धोखेबाजों के धोखे का शिकार नही होना पड़ेगा।

इसलिए वह समन्दर के किनारे से उपर सूर्य के कमल की भुमी के शहर की गलियों की तरफ चल दिया, जो उसके सामने थी, चंद्रमा के स्वेत प्रकाश में काले और सफेद रंग के प्रतित हो रहे थे, जहां पर उसको कोई भी व्यक्ती नहीं मिला। वह शहर पुरी तरह से खाली और जैसे वंजर भुमी की काली कोख हो, और पत्थर की तरह से शांत मृत्यु के अवतरण आत्मा की तरह की से प्रतित हो रहा थ। और वह वहां पर उपर निचे ऐसे ही घुमक्कड़ों की भाती घुमता रहा, अन्त में वह एक विशाल दरवाजे के पास पहुंच कर खड़ा होगया, जैसे कि वह दरवाजा उससे कह रहा हो की अन्दर आइये, इसलिए वह दरवाजे के अन्दर चला गया, और घुमते हुए काफी अंदर चला गया, जहां पर केवल उसके पैरों की गुंज उसके कानो में पड़ रही थी, इस तरह से उस महल एक कमरे से दूसरे कमरे में। फिर अचानक एक दूसरे दरवाजे के अंदर प्रवेश किया, जो सभी कमरों में वह कमरा बहुत बड़ा था, एक विशाल हाल के समान, जिसके दिवाल की बड़ी बड़ी खिड़कियों से चंद्रमा की रौशनी हाल में झांक रही थी। हाल कपुर की तरह से ठण्डा और शान्त था, जिसकी छत पर चंद्रमा के समान स्वेत झुमरें पत्थर की लटक रही थी। जिसमें से धिरें धिरें बुंद बुद कर के चंद्रमा का अमृत हाल की जमीन पर टपक रहा था। और उस हाल के अंत से काफी दूरी पर एक सोफे पर उसने देखा की एक शरीर पड़ी थी जिसको सफेद चद्दर से ढका गया था।

फिर उसने अपने आप से कहा, यह आश्चर्य क्या है? और कौन यहां पर से इस तरह से हो सकता है, अकेले इस खाली हाल में? और धिरे धिरे चलकर वह उसके पास गया, खिड़कियों से आने वाले प्रकाश से दिवाल की छाया में जब तक की वह हाल के अंत तक नहीं पहुंच गया, और सोफे के करीब जा कर वह खड़ा होगया, और उसने उस शरीर पर पड़े चद्दर के एक कोने को पकड़ कर उस शरीर के चहरे से उपर उठाया, और यह कोई और नहीं यद्यपी श्री का चेहरा था।

जिसको देख कर उमर सिहं बहुत अधीक आश्चर्यचकित हुआ, और उसके होठों से रोने की आवाज हवा के साथ निकल कर हवा में बहने लगी, और उसने अपनी तलवार को क्रिस्टल तल पर दुर्घटनाग्रस्त होने दिया। और उसने खुद से कहा क्या यह एक सपना है? या यह एक भ्रम है? लो! मैंने उसे इन्द्रालय में जीवित छोड़ दिया था, और मैं उसे फिर से मिल गया, इस खाली हॉल में मृत पड़ी है, और यहाँ! जो अंतरिक्ष के अंत में तीनों लोकों के ऊपर उपस्थित है।

इस तरह से वह दीवार पर एक तस्वीर की तरह खड़ा था, श्री के चेहरे को चुप्पी से देख रहा था, जबकि रात अपनी खुमारी के नशे में थी, और चंद्रमा अपनी यात्रा कर रहा था, और चांदनी से अमृत धीरे-धीरे जमीन पर गिर रहा था, जिसकी छाया फर्श पर चारों ओर फैल रही था। और अंत में, थोड़ी देर के बाद, वह खुद के होश में आया। और अपने हाथों से चद्दर के द्वारा उसके चेहरे को फिर से पहले की भाती ढक दिया, और वह नीचे झुक कर अपनी तलवार को उठाया, और धिरे धिरे उस विचित्र हाल से बाहर निकलकर मार्बल के पत्थरों से बने तालाब की सिढियों पर बैठ गया, उसने महशुस किया जैसे वह स्वयं स्वप्न में चल रहा हो। और खुले मैदानों के पार उसने देखा निले समन्दर को जो श्री के आंखों के समान थे, उसकी यादास्त एक बार फिर जागृत होगई, जिसमें वहीं ध्वनी गुंज रही थी। जिसको उसने इन्द्रालय में छोड़ा था, जिसमें लोग नगाड़े बजा बजा कर चिल्ला रहे थे, कि किसी ने सूर्य के कमल की भुमी को देखा हो तो राजा के पास आये, और उसके राज्य के आधे हिश्से के साथ राजा की पुत्री से विवाह करें, और उसने महशुस किया की उसकी आत्मा में वह सब कुछ भर गया हैं। जिसको उसने कई साल पहले अलगाव के अनन्त दूरी पर छोड़ दिया, इतनी दूरी जितनी दूरी पर पृथ्वी से सूर्य उगता है।

फिर भी उमर सिंह अपने स्थान से उठ कर खड़ा हो गया, और अपने हाथों से अपने सर को झकझोरने का साथ जोर से चिल्लाते हुए कहा, मैं नहीं कह सकता की यह स्वप्न है या यह मेरा यथार्थ हैं। लेकिन यह अवश्य मैं जानता हु की मुझको यहां से बिना किसी देरी को किये इन्द्रालय वापिस जाना होगा, इन सब को पार कर के जो यहां से कहीं और है, जिसके लिए मुझे फिर से समन्दर को पार करके उससे आगे भयानक रेगीस्तान और अंधेरे जंगलो के परे जा कर अपनी कहानी राजा से कहनी है। और अपनी दुल्हन के लिए दावा करना है। लेकिन सबसे पहले मैं इस विचित्र तालाब में स्नान करूंगा। क्योंकि मेरा दिल भारी हो रहा है, और मेरे सिरदर्द भी है, जो मैंने रात के दौरान सहन किया है, और जो कुछ मैंने देखा है।

और वह तालाब की सिढ़ीयों से एक एक कदम नीचे तालाब के पानी में चला गया, और उसमें डुबकी लगाया।

और जैसे ही वह तालाब के पानी से अपना सर बाहर निकाला, उसके कानों में साफ स्पस्ठ और तेजी से ध्वनी गुंजने लगी, जिसमें नगाड़े को बजा कर उसके बादक कह रहे थे, की जो कोई उच्च जाती का आदमी सूर्य के कमल की भुमी को देखा हो, वह राजा के

पास आये, और उसके आधे राज्य के साथ उसकी पुत्री से विवाह करें, और उसने चारों तरफ देखा, उसे आश्चर्य हुआ की वह उस समय इन्द्रालय के राजा के तालाब में ही वह खड़ा था, जहां से उसने कई साल पहले उस सूर्य के कमल की भुमी को तलासने के लिए चला था। फिर उसे अद्भुत आश्चर्य के साथ उसके शरीर में शिरहन सी दौणने लगी, और अंत में उसके सर के बाल खड़े होगये, और वह तालाब में एक पत्थर की शिला के समान खड़ा था। जिसके शरीर के साथ पानी बह रहा था। जिसके कारण संदेह से उसकी आत्मा घबरा रही थी। और उसने अपने आप से कहा वास्तव में यह इन्द्रालय ही है, या केवल यह मेरा स्वप्न हैं, और सूर्य के कमल के भुमी के साथ मेरे कठीन परीश्रम का क्या हुआ? मैं इस समय इन्द्रालय में हुं। क्योंकि मेरे कानों में वहीं शोर गुल और नगाड़े की ध्वनी पहले के समान गुंज रही है, जिसको मैंने कई साल पहले छोड़ कर अपनी यात्रा पर चला था।

और अचानक उसके होठ चिल्लाने लगे की ठीक है, अब मैं राजा के पास जाउंगा, क्योंकि अब समय आगया है की अपना दावा पेश करके उनसे अपना पारीतोषिक प्राप्त कर लुं, और कुद कर तालाब के पानी से बाहर निकला, सिढ़ियों पर पागलों की तरह से दौड़ते हुए, उन चिल्लाने वाले लोगों के पास में गया, और उनसे कहा, कि इस खाली नगाड़े के साथ इस तरह से बेकार का चिल्लाने बंद करो, और मुझे पकड़ कर जल्दी ही राजा के पास ले चलों, क्योंकि मैंने सूर्य के कमल की भुमी को देख लिया है। नगाड़े को बजाने वाले लोगों ने उसको उस समय नहीं पहचाना, लेकिन वे सब यह सुनते ही खुशी और आनन्द से उछलने लगे, क्योंकि उनका इस प्रकार से नगाड़ा को बजा बजा कर चिल्लाना उनके जीवन के दुःख का बहुत बड़ा कारण बन चुका था। इस प्रकार से उन्होंने तैयारी की उसको अपने साथ लेकर राजा के पास जाने की, उन्होंने अपनी तालीयों को बजाकर कहा दूबारा जल्दी करो, बिना किसी देरी को किये, जल्दी और बहुत शिघ्र करो अन्यता मेरा हृदय फट जायेगा, जिसके लिए मुझे अलगाव के कष्ट को झेलना पड़ेगा, जब एक होना बहुत दूर प्रतित हो रहा हो, सरलता के साथ, लेकिन अब वह पल आचुक है। कि हमारे एक होने का समय इतना पास आगया है, मेरा हृदय टुट रहा है हर पल मुझे ऐसा लग रहा हैं जैसे युगों का हो, अगर तुम सबने और अधीक देरी की तो मैं उसको सह नहीं पाउंगा। तब उन नगाड़े वादको ने बहुत सिघ्रता के साथ जितना जल्दी उनके लिये संभव था, वह उसको ले कर राजा के पास गये।

लेकिन जब राजा ने उमर सिंह को देखा, तो वह उसको पहचान गया, वह उनको बहुत कमजोर दिखाइ दे रहा था, जैसे सब कुछ बदला हुआ था, और उन्होंने अपने आप से कहा, निश्चित ही यह आदमी बहुत ही कठोर किस्म का हैं, जो मेरे पास पहले मुझको धोखा देने के लिए आया था। और अब दूबारा फिर आगया हैं, और उन्होंने उमर सिंह से कहा धोखेबाज मैं तुमको जानता हूं, सावधान हो जाओ, इस बार तुम्हारे पास बचने का कोई रास्ता नहीं होगा, फिर उमर सिंह ने राजा से कहा ठीक है, आपको जैसा ठीक लगे वैसा ही करना, लेकिन उससे पहले मुझे अपनी पुत्री से मिलने का एक मौका अवश्य दीजिये, और जितना जल्दी हो सके उतना जल्दी कीजिये, क्योंकि सच में मैने सूर्य के कमल की भुमी को देख लिया हैं। इसलिए मुझे अपनी सर्त के अनुसार मौका दीजिये अपनी सत्यता क सिद्ध करने का, इसके बाद उमर सिंह जैसे ही आगे कुछ बोलने वाला हुआ, तभी अपरिवर्तनीय अधीरता और व्यग्रता ने उसको चारों तरफ से घेर लिया, और वह क्रोध में आवेशित हो कर अपने पैर को जमीन पर पटकता है, जिससे उसकी आंखों में आंशु आगये, और अचानक वह हँसने लगा। और राजा ने बड़ी जिज्ञासा से उसके चेहरे को देखा, जिसमें उनको आश्चर्य प्रतित हुआ, राजा ने अपने मन में विचार किया, या तो यह आदमी पागल हो चुका है, अथवा इसने सच में सूर्य के कमल की भुमी को देख लिया है। फिर

भी राजा ने उमर सिंह से कहा की अब तुम याद रखना जो तुम हमारे साथ झुठ का खेल रहे हो, इसके लिए तुम्हें निश्चित रुप से मृत्यु को पुरस्कार के रुप में तुमको मिलेगी। उमर सिहं ने कहा आप अपनी पुत्री से मुझको मिलने की अनुमती दीजिये, और आपकी जैसी इच्छा हो मृत्यु दे दीजियेगा।

तब राजा ने अपनी पुत्री श्री के पास उमर सिंह को भेजता है, कुछ देर के बाद श्री उमर सिंह से मिलने के लिए आती है।

लेकिन जैसे ही उमर सिंह ने श्री को अपने पास आते हुए देखा, वह तेजी से सिसकने और उसको देख कर घबरा गया, और जैसे श्री ने उमर सिंह की आंखों में भय को देखा, तत्काल उमर सिंह स्वयं को उसके आखों के सागर में अपनी आत्मा के साथ डुब गया। और तत्काल वह अपनी दुस्कर यात्रा की पिड़ा और कठिनाई को भी भुल गया, और प्राप्त पर लालसा की भूख, जुदाई के दर्द के साथ आतंक से उस पल मुक्ति की अमृत असामयिक मौत के समान प्रतित हुई। और श्री ने उसकी तरफ देखा, जैसे ही वह उसके सामने आकर खड़ी हुई, और तत्काल वह उसको पहचान गई, और उसका हृदय नगाड़े के समान उसके सिने में धड़कने लगा, और वह शुन्न हो गई, भय और संदेह के कारण, जिसके कारण वह उमर सिंह से कुछ भी नहीं बोल सकी। थरथराते हुए दूबारा वह सब कुछ भुल गई, अपने पिछले जन्म के प्रेमी और उसकी यादों को भी, जिससे उसने अपनी आत्मी की आवाज को दबा दिया, और फिर उससे स्वयं को आतंकित महशुष किया, उसकी गुस्ताखी और उसकी दरिद्रता के लिये, उसका तीरस्कार किया, पहले की तुलना में इस बार उमर सिंह दस गुना दुबला हो चुका था। और उसके शरीर पर वस्त्र के नाम पर कुछ चिथड़ों के कुछ भी नहीं था। और उसने लंबे समय तक बिना कुछ बोले ही उसको देखती रही, और अंत में उसने कुछ बोलने की इच्छा जाहीर की, और धींरे से कहा कि तुम कैसे मिट्टी के लोदे के बने हुये और अजीब जीवन के यात्री हो? और तुम फिर हमारें पास एक नई कहानी बना कर आगये, परमेश्वर करें यह तुम्हारी कहानी तुम्हारें लिए शुभ को लाने वाली हो, क्योंकि इसके बाद तीसरी झुठ बोलने के लिए तुम जीवीत नहीं बचोगे।

लेकिन उमर सिंह अपनी भुखी आंखों को लेकर उसकी तरफ झुक गया, क्योंकि उसकी पिछली जुदाई के प्रायश्चित के दुःख को उसकी आत्मा को याद आ चुका था, क्योंकि उसकी आत्मा एक भूले हुए अतीत की पुनरावृत्ति के लिए उत्सुक थी। और जब तक उसकी नज़र रुक गई, तब तक उसने अपनी तीव्र गामी वुद्धि के साथ उसको देखा, क्योंकि उसकी आत्मा को उसके साहस और उसके प्यार में महारत हासिल कर लिया था। और दो बार उसने बोलने की कोशिश की, और दोनों बार वह असफल रहा, जबकी उसकी आँखों से आँसुओं का फौबारें जमिन पर गीरने लगा, और अंत में वह स्वयं के भावों को नियंत्रित करने में सफल रहा, और उसने कहा की प्रीये अब तुम्हारी जैसी इच्छा हो तुम वैसा ही व्यवहार मेरे साथ करों, और जैसी तुम्हारी इच्छा हो उस प्रकार की मृत्यु मेरे लिए निश्चित करो, लेकिन मेरे मरने से पहले मुझको यह अवश्य बता दो, यह कैसे संभव हुआ? की तुम यहां पर मेरे सामने जीवीत हो, जबकी मैं तुम्हारी शरीर को सूर्य के कमल की भुमी पर चादनी रात में सोफे पर मृत देखा था।

फिर श्री ने एक विभत्स चिख मारते हुए अपनी बांहों को फैला कर उमर सिंह की तरफ बढ़ी, और उसने कहा हां यह सत्य है, की इस आदमी ने सच में सूर्य की कमल की भुमी को देख लिया है। और अचानक, विस्मृति का पर्दा एक पल के लिए फिर से ताजा हो गया था, और उसने अपने पूर्व जन्म की एक झलक पायी, और फिर उसको अपने पति के बारे में पता चल गया। तुरन्त वह उसके पास भाग कर आगई, और अपनी बाहों में उमर सिंह को लपेट लिया, और अपनी छाती पर लगा लिया, और एक महान पेड़ पर जैसे

एक चमेली की बेल की तरह उसके शरीर से चिपक गई। जिसके साथ आँसूओं की बारिश उसकी आँखों से गिरने लगी, और वह खुशी से हँसने लगी, और उसने अपने चेहरे को उसके हाथ से सहारा दिया, और कहा बहादुर, और क्या आप उस दूर कमल भूमि पर अकेले जाने की हिम्मत कर लिया? आखिर में इस जीवन में आप वास्तव में मेरे पति हैं। और अब, एक लंबे समय के बाद अलगाव, मैंने तुम्हें एक पल के लिए पाया है, और तुमने मुझे प्राप्त किया है। केवल वही खोज करें, और हम एक बार फिर मिलेंगे, और पारस्परिक आनंद के अमृत की एक और बूंद का स्वाद लेंगे, इससे पहले कि हम मर जाए, क्योंकि ऐसा होता है। मैं कहती हूं, याद रखों हम फिर से जरुर एक पल के लिए मिलेंगे।

फिर वह उठ कर खड़ी होगई, और उसने उमरे सिंह को पिछे की तरफ धक्का दे दिया, लगभग वह गिरने वाला ही था, किसी तरह से उसने स्वयं को सम्हाला, और दूसरे लोग वहीं पास में खड़े होकर उन्हें आश्चर्य से देख रहे थे, जैसे ही लोग उसको देख रहे थे उन्होंने देखा की उसकी खुबशुरती पहले से अधीक बढ़ गई थी, जैसे पूर्णमासी की चंद्रमा के समान हो, और इस प्रकार चमक रही थी जैसे कोई बहुमुल्य रत्न हो, उसकी आंखों से किसी दिव्य प्रकार की प्रकाश चारों तरफ फैलने लगा था, उसकी आंखों से निकलने वाले प्रकाश से पुरा कमरा जगमगाहट के साथ भर गया था। और उस कमरें की दिवालों पर इस प्रकार से प्रकाश की किरणें पड़ रही था जैसे की सूर्य अस्त हो रहा हो, यह सब देख कर राजा पूर्ण रुप से आनन्द से भर गया, और उसने सोचा कि अब वह विवाह की लिए तैयार हो चुकी है, और अब मेरा जन्म सफल होगया हैं। लेकिन ज्योतिषियों ने एक-दूसरे को निराशा के साथ देखा, क्योंकि उन्हें पता था कि वह मरने वाली थी। इसलिए वह सब उसको ध्यान से देख रहे थे, अचानक वह निचे जमीन पर गिर गई, और उनके सामने ऐसे पड़ी थी जैसे कमल का फुल अपनी डाली से गिर कर मुरझा जाता हैं, इस प्रकार से वह निर्जीव बन कर जमिन पर पड़गई।

फिर ज्योतिषियों ने उदासी से कहा, वह अपनी शरीर को त्याग दिया हैं, और शरीर को छोड़ कर कही और जा चुकी हैं, राजा ने जब उसको इस तरह से गीरते हुए देखा, और लोगों का बातों को सुना, वह अपनी सोचने समझने की क्षमता को तत्काल खो दिया, और उसके पास में ही वह भी गिर गया, लेकिन उमर सिंह वहां से तत्काल खड़ा हुआ और महल को छोड़ कर बाहर गलियों में चला गया।

१० पृथक्करण

और वह एक शराबी आदमी की तरह सड़क पर इधर उधर घुमने लगा, और लोगों ने इस तरह उसको देखा, जिसपर उन सब को अलौकिक आश्चर्य हो रहा था। और मजाक में वे सब कह रहे थे, देखो देखों इस बिगड़े राजपूत को, जो राजा की पुत्री से विवाह करने के लिए आया था, जिसकी निकृष्ट आंखों ने उसको मार दिया, लेकिन इसने कुछ भी नहीं सुना शिवाय श्री के नाम के, और कुछ भी नहीं देखा शिवाय उसकी आंखों के। और लड़खड़ा कर चल रहा है जैसे कि कोइ कठपुतली की तरह से हो, उसके पैर बिना किसी लक्ष्य के बस चले जारहे थे, जैसा की वह पहले तालाब के किनारे पहंचा, और उसमें डुब गया, उसे कुछ भी नहीं पता था की वह कहां पर है? और उसने क्या किया है? वह इस संसार के कोने में अनसुलझी पहली की तरह से भटक रहा था। जैसे एक आदमी का

जिसका सारा संसार खत्म हो चुका हो, और उसकी शरीर के सारें तत्व काम करना बंद कर दिया हो, वह अकेले खाली रीक्त स्थान में पड़ा था, मुर्खो की तरह से जिसकी आंखों से सारा पानी सुख चुके थे, फिर अचानक उसकी यादास्त वापस आगई, और उसने रोना शुरु कर दिया, और जैसे उसने अपने अंदर खारें समन्दर के जल के फव्बारें को भर रखा हो, और अंत अपने दुःख और चिन्ता से थक कर तालाब के किनारे पर सोगया। और उसके स्वप्नों में श्री उसके पास आकर खड़ी थी, और अपनी दयालु आत्मा को अपने दयालु नज़र के अमृत के साथ पुनर्जीवित किया, क्योंकि एक भक्त की बेटी पानी के साथ ताज़ा हो जाती है, जो उसके प्रभारी के लिए आश्रम के पौधे लगाती है।

और करुणा और प्यार के उन दो फव्वारे से गहरी बुदों को पीने के बाद, वह जाग गया, और पाया कि अब रात थी, और फिर वह चांदनी के प्रकाश में चमकते तालाब पर अकेला था। और उसने खुद से कहा हां! हां ! मैंने अपनी दुल्हन को पाया, और उसी जन्म में उसे फिर से खो दिया, एक पूर्व जन्म में किए गए पापों के भयानक संचालन के माध्यम से। अब वास्तव में मैं अकेला हूं, इस बार वह चली गई है, मुझे नहीं पता कि मैं कहां हूं, और मैं उसे कैसे ढूंढूं? और फिर भी उसने मुझे बताया कि मुझे निराशा से दूर रखने के लिए हमें फिर से मिलना चाहिए।

इसलिए अब मैं व्यापक दुनिया में भटक जाऊंगा, और अपनी जान बचाने में उसकी जिंदगी बिताऊंगा, क्योंकि अब इस जीवन में कुछ भी नहीं बचा है, और पुनर्मिलन की आशा महान कछुआ के पीछे की तरह है, मेरी अकेली शरण के लिये तीनों लोक परयाप्त नहीं हैं।

तो इस प्रकार से वह उठकर शहर से बाहर चला गया, और समय की लहरों पर एक बुलबुले की तरह, यहां और वहां घूमता रहा। और इस गांव से उस गांव में, और इस शहर से उस शहर में गया, उन सभी के बारे में पूछ रहा था जिन्हें उन्होंने मुलाकात की, क्या आपने श्री , मेरी पत्नी को देखा है ? तुम उसे उसकी आंखों से जानोगे, क्योंकि वे स्वर्ग के रंग से भरी हुई हैं । लेकिन उन्होंने जितना पूछा, उन्हें कोई जवाब नहीं मिला, और न ही कोई उसे उसके बारे में कुछ बता सकता था। इसके विपरीत, सभी ने उस पर आश्चर्यचकित होकर उसे उपहास के रूप में बदल दिया। और कोई कहता है, यह चंद्रमा की आवाज वाला कौन सनकी पागल है? जो नीली आंखों की सुंदरता की तलाश में घूमता है? और दूसरा क्या आश्चर्य है? कि श्री ने इतने घबराए हुए विद्रोही को त्याग दिया है, जो अच्छी तरह से करने के लिए भी त्याग देता है! और अन्य ने कहा, यह विचलित राजपूत चंद्रमा चाहता है, लेकिन उसे दवाओं की आवश्यकता है । और आखिरकार उसने मनुष्यों के घरों को त्याग दिया , और जंगल में लगातार घूमते हुए, कोई साथी नहीं, बल्कि उसकी छाया और उसकी तलवार, जिस मार्ग से वह कमल की भूमि पर अपनी पूर्व यात्रा पर गया था, और दिन में नीले रंग के कमल के तालाब में देखकर, और रात को स्वर्ग में अपने सितारों के साथ देखकर, क्योंकि वे सब श्री की आंखों के रंगों और छायाओं के दर्पण और छवियों की तरह थे ।

११ जानवरों का भगवान

इसी बीच ऐसा हुआ की भगवान महेश्वर रोज की भाती आकाश मार्ग से अपनी पत्नी पार्वती के साथ उन्हें अपने सीने से लगाये हुए घुम रहे थे, तभी उन्होंने निचे पृथ्वी पर देखा की उमर सिंह जंगल में पागलों की तरह से घुम रहा था, और शोकातुर होकर पुकार पुकार कर चिल्ला रहा था, श्री तुम कहां छुप गई हो? जैसे किसी रेगीस्तान में कोई पक्षी प्यास से व्याकुल हो कर दम तोड़ देता हैं, उसी प्रकार से मेरी स्थिती हो गई है, बिना तुम्हारी आंखों के मुझे कही चैन नहीं मील रहा है। और तभी अचानक भगवान महेश्वर को याद आगया जो वर उन्होंने उसको पिछले जन्म में दिया था, और उनके सामने उसकी पिछली कहानी सारी स्मृती उनके मन पर ताजा होगई। इसलिए उन्होंने अपनी पत्नी उमा से हंसते हुए कहा, तुम अभी अपने पिता के घर जाओं और वहां मेरा इन्तजार करों, क्योंकि कुछ ऐशा मामला है जिसपर मुझको अभी ध्यान देना है। फिर उनकी पत्नी ने उनको फुसलाते हुए पुछा, क्या बात है? भगवन कृप्या इसके बारें में मुझको बताईये। फिर भगवान महेश्वर नें उनसे कहा मैं तुम्हें कुछ समय के बाद बताउंगा, अभी मेरे पास समय नहीं हैं तुम जाओं, फिर देवी अपना मुंह फुला कर उनसे दूर बर्फिले पर्वत के उपर चली गई, यद्यपी भगवान महेश्वर जो अपने बालों के जुड़े में चंद्रमा को धारण करने वाले हैं। वह पृथ्वी पर उतर कर आगये। और उन्होंने अपना रुप एक तपस्वी जैसा बना कर जंगल में प्रवेश कर लिया, और जंगल के सबसे घने भाग में कर खड़े हो गये, उनके शरीर पर उस समय सफेद भस्म आच्छादित हो रहा था। मड़ियों के माला के साथ मानव खोपड़ीयों से जो सुसज्जी हो रहा था, जिसके साथ उनके भुरे बालों में आधा चंद्रमा झलक रहा था, उन्होंने अपनी दिव्य शक्ती के द्वारा एक बड़ा घंटा बना कर, जंगल के मध्य में एक बट वृक्ष पर लटका दिया। अपने द्वारा बनाये गये घंटे पर अपने त्रीशुल से बार बार प्रहार कर के उसको बजाने लगे, जिसकी आवाज जंगल में ऐसे गुंजने लगी जैसे की आकाश में बिजली कड़क रही हो।

फिर तत्काल इस भयानक बुलावा को सुन कर जंगल के सारे जीन, यक्ष, और पिशाच, राक्षस, और वन देवी इत्यादी, अपने जंगली जानवरों पर अपनी सवारी के साथ एकत्रित होकर जहां से आवाज आरही थी, सभी उसी तरफ चल पड़े, इस प्रकार की भीड़ में जैसे मक्खियों का झुंड अथवा, मधु मक्खियों का झुण्ड मधु पर धावा बोलता हैं, अथवा मक्खियां किसी मृत शरीर पर मंडराती हैं। वे सारे प्राणी अपने स्वामी के पास विनम्रता के साथ जाने से पहले जांच पड़ताल करने लगे, की कौन हो सकता हैं कोई जीवीत है या निर्जीव वस्तु है, मालिक ने अपने सभी सेवको को किस आदेश के लिये याद किया हैं, और हम सब को यहां पर क्यों बुलाया गया हैं? और जब सब की हाजिरी एक साथ भगवान महेश्वर के सामने लग गई, और वह सब उस माहन तपस्वी के पास पहुंच गये तो उनसे पुंछा।

भगवान महेश्वर ने अपने एकत्रीत सेवको से कहा की इस जंगल में एक पुराना प्रेमी अपनी पत्नी को खोज रहा हैं, और उसकी पत्नी उससे कुछ समय पहले अलग हो चुकी है, अथवा वह दूबारा उससे मिलने के लिए ब्याकुल है। वह दोनो प्रेमी पहले अमर थे मगर एक श्राप के कारण उन्होंने नश्वर शरीर को धारण किया हैं। लेकिन जब वह तुम्हें इस जंगल में कही मिले तो, और उनकी परिस्थीतियां जब अच्छी होगी तो उनका श्राप समाप्त हो जायेगा, इसलिये तुम सब उनको अपनी इच्छा के अनुसार उनको चकमा और धोखा देना, लेकिन सावधान रहना कि तुम सब उनके बाल को भी नहीं छुओंगों, उसको तुम सब देखों लेकिन एक बात का तुम सब ध्यान रखना हैं की उसको तुम्हारें द्वारा किसी प्रकार का नुकसान ना पहुंचने पाये, और ना तुम में से किसी के द्वारा उसको खा कर खत्म करना है। इस

तरह से वह सब भगवान महेश्वर के गण अपने कार्य पर लग गये, और जंगल में चारों तरफ खोजने लगे उस प्रेमी को पुनः प्राप्त करने के लिए, अपने भाग्य के उदय होने के लिये और भगवान महेश्वर के आदेश और उनकी प्रसन्नता के लिए।

फिर वह सब एक साथ भगवान महेश्वर के पैरों को पकड़ कर उनको प्रणाम किया, और उन सब ने नाचंना शुरु कर दिया, इसके साथ उत्तेजीत मस्त होकर अपने उत्थान को ध्यान में रखकर उत्सव मनाने लगे, परमेश्वर की भक्ती का ऐसा नशा सभी को पकड़ा जैसे वह सब पागल होगये थे, और परमेश्वर के प्रशंसा में उनकी स्तुती और गुणगान करने लगे, अपनी अपनी भाषाओं में, फिर कुछ समय के बाद परमेंश्वर ने उन सब का परयाप्त मात्रा में सहयोग किया, और उन सब के लिए अपनी उपस्थिती के अमृत की धारा को बहा कर तृप्त किया, फिर परमेश्वर को अपनी अर्धाङ्गिनी की याद आई जिससे उन्होंने मिलने का वादा किया था, और उनको कहानी बताने के लिए, जो उन्होंने पर्वत रुपी राजा दक्ष की पुत्री से किया था, और इसके साथ भगवान महेश्वर अपने स्थान कैलाश पर्वत के उपर बर्फ से आच्छादित चोटियों पर चले गये, खोपड़ियों की माला को अपने गले से उतार कर दूर रख दिया।

१२ अन्य शरीर

इसके पहले जब श्री ने अपने शरीर को इन्द्रालाय में त्यागने के बाद, वह अपनी आत्मा के साथ जैसे उसकी आंखें चमकती थी उसी प्रकार से वह सिधा सूर्य के कमल की भुमी पर पहुंची और वहां बड़े खाली हाल में उपस्थित सोफे पर अपनी मृत शऱीर में प्रवेश कर लिया, जिस मृत शरीर को कमल भूमी पर पहले उमर सिंह ने आकर देखा था। फिर शरीर में प्रवेश करते ही तत्काल अपनी आंखों को खोला और वहां पर उठ कर खड़ी होगई, जैसे की वह किसी स्वप्न को देख रही हो, इसको साथ वह स्वयं आश्चर्य के भाव से पूर्णतः भर गई, आतंक और निराशा के बदल उसके चित्त पर छगये, जब उसने अपने आप को अकेले उस बड़े मरुस्थल रुपी खाली हाल में पाया। वह अपने दुःख और पिड़ा को याद कर चिल्लाने लगी आह यह सब मेरे साथ क्या हो रहा है प्रभु? यह कैसा रहस्य है? और मैं कैसे इस मरुस्थल रेगीस्तानी खाली बड़े हाल में आगई? और यह संसार के किस हिस्से में है, जहां पर मै इस समय में हूं। औऱ मेरे पती साथ क्या हुआ? अब मैं क्या कर रही हूं क्या मैं अपने पिछले जन्म के किये हुए पाप के भयानक परिणाम को भुगत रही हुं? आह, मैं यहां से वापिस कैसे जा सकती हुं? और वह मेरा पती मुझको कहां पर मिलेगा? निश्चित रूप से हम दोनो छोटी मछली की तरह से असिम समय के समन्दर में कहीं खोचुके हैं। अब तक हमारा जो अलगाव हुआ है, अदृश्य निरासा के सागर में, क्या सीता ने राम से विछणने के बाद उनको नहीं पाया था, और क्या शकुतंला ने दुशयंत को नहीं पाया था, या फिर जिस प्रकार से दमयन्ती नल से अलग होने के बाद उससे नहीं मीली थी, जैसे यह सब अपने प्रियतम से बिछड़ने के बाद फिर से मिल कर आनंद को प्राप्त किया था। उसी प्रकार से मैं भी अपने प्रियतम से अवश्य मिलुगी। सच में प्रेम के पास सर्वव्यापक के समान सामर्थ्य है। और क्या मेरे प्रेम से बड़ा भी कोई दूसरा प्रेम हो सकता है? जो एक शरीर से दूसरी शऱीर में यात्रा कर रहा हैं, जैसे, नये हर एक जन्म के साथ जीवन की अग्नी नये और ताजे रुप में प्रकट होती है।

फिर उसने अपने शरीर पर पड़े सफेद पर्दे को पहन लिया, और जल्दी से खड़ी हो कर उस खाली बड़े हाल से बाहर निकल गई, डुबते हुए हृदय के साथ जैसे एक पक्षी किसी शान्त तालाब में डुबता है, उसी प्रकार से वह अपने पैरों के ध्वनियों की गुंज में डुबती हुई, उस महल के दरवाजे से बाहर निकल कर मरुस्थली सड़क और गलिंयों में इधर उधर भागने लगी, और अंत में वह समन्दर के किनारें पर पहुंच गई, और बड़ी उत्सुक्ता के साथ समन्दर के दूसरे किनारे की तरफ देखने लगी, उन आंखों के साथ जो निली समन्दर के समान थी, जो वह उसका मजाक उड़ा रही हो, इसके साथ उसे अपनी सुन्दरता पर बहुत भयानक निराशा होने लगी, जैसे चंद्रमा के प्रकाश के द्वारा उसको उत्साहित और प्रोत्साहित किया जारहा हो, जबकी हवा बिना उसकी इजाजत के उसके होठों का मधुर चुमंबन को ले रहा था, और उसके बालों और वस्त्रों के साथ आंख मिचौली का खेल खेल रहा था। फिर उसने कहा हे महासागर, क्या आप भी किसी से अलग हैं, कि आप लंबे समय तक श्वास लेते हैं? क्या तू भी दु:ख में मेरे साथ डूब गया है, कि तूने मुझ पर अपने नमक के बौछार रुपी आँसू को छिड़क दिया हैं?

और जैसे ही वह सागर के उपर देख रही थी, उसे देख कर आश्चर्य हुआ, की एक जहाज सागर की लहरों पर हिलकोरे मारते हुए उसकी तरफ चला आरहा था, जैसे सागर उसकी आंतरिक इच्छाओं के बारें में समझ गया हो, कि वह सागर को पार करना चाहती है। वह जहाज एक बड़े व्यापारी के कप्ताना का था, जो अपने व्यापर को कर के अपने घर के लिए वापिस या रवाना हुआ था, और जब उसने देखा एक स्त्री को सागर के किनारें पर अकेले खड़े हुए, वह तत्काल अपनी एक छोटी नाव लेकर किनारे की तरफ चल पड़ा उस स्त्री को पकड़ने के लिए, लेकिन जब वह सागर के किनारें पर पहुंचा, और उसने अती सुन्दर औरत को देखा जिसकी गहरी निली आंखे थी, और उसने सफेद बर्फ के समान वस्त्रों को धारण किया था, उसे आश्चर्य के साथ एक बड़ा धक्का लगा, और वह उसे देख कर बहुत अधीक भयभित हो गया। और उसने डरते हुए श्री से कहा निश्चित रूप से तुम परमेश्वर की दिव्य कृतियों में से सबसे श्रेष्ठ कृती हो, और तुम्हारें समान इस नस्वर संसार में कोई भी दूसरी स्त्री नहीं हैं। मुझे अपना नाम बताईये जिससे मुझको पता चल सके की मैं किसको सम्मान दे रहा हूं, फिर श्री ने कहा साहब मैं कोई दिव्य औरत नहीं हुं, मैं एक राजा की पुत्री हूं, और अपने पती की खोज कर रही हूं, कृपया दया कर के आप मुझको अपने साथ ले चल कर सागर के दूसरे किनारें पर छोड़ दीजियेगा। जिससे मैं निश्चित रूप से इन्द्रालय का मार्ग तलाश लुंगी, लेकिन इसको सुनने के बाद व्यापारी खुशी से हंसने लगा, और उसने सोचा इन्द्रालय के बारें में जो संसार के दूसरे हिस्से में विद्यमान हैं। और मैं इसका पती बन जाउंगा, क्योंकि वह उस समय तक उसकी सागर के समान गहरी नीली आंखों में डुब चुका था। इसलिए उसने श्री से कहा ओ सच्ची राजा की पुत्री मेरी जहाज ज्यादा बड़ा और शानदार नहीं हैं, और वह पूर्णरूप से भरी हुई है, आवो अब जहां तक हमसे संभव होगा हम तुम्हें ले जायेगे, जैसा की तुम्हारी इच्छा है, इस तरह से श्री उसके साथ चलने के लिए तैयार होगई, और इसके साथ व्यापारी बहुत अधिक प्रसन्न हुआ। और श्री के सामने संपूर्ण संसार का संसाधन तुड़े के समान उसको प्रतित हो रहा था। जैसे की उसने किसी बहुमूल्य खजाने को प्राप्त कर लिया हो, और वह सोचता था की उसने अपनी पत्नी को प्राप्त कर लिया है।

इस तरह से जब जहाज का व्यापारी श्री को लेकर अपने जहाज पर पहुंचा, तो उसने उससे कहा सच में तुम्हारा पती वास्तव में बहुत दुष्ट किस्म का मानव है। जिसने अतुलनिय तुम्हारी तरह सुन्दर औरत को इस तरह संससार में भटकने के लिए अकेला छोड़ दिया है। अब तुम उसको भुल जाओं उसके स्थान पर तुम्हारा पती मैं बनने के लिए तैयार हुं, फिर श्री ने कहा यह तो बहुत बड़ा पाप हैं और

हमारी इस परिस्थिती के लिए हमारे पती को दोषी ठहराना कदापी उचीत नहीं है, वह अपनी पत्नी के लिये एक दिव्य और अद्वितीय पुरुष इस दुनिया में सिर्फ एक है, फिर उस व्यापारी ने कहा की तुम हां ना में जबाब दो मुझसे विवाह करना चाहती हो या नहीं, मुझको पाप पुण्य से कोई फर्क नहीं पड़ता हैं। मुझे परवाह केवल इन आंखों की है, और अब मैं इनका हो चुका हुं जिसको लिए मैं इनको अपने पास रखना चाहुगां। इस तरह से वह उसको बड़ी सावधानी से अपनी जहाज में करीबी सुरक्षागार्डों की देख रेख में रख कर अपने शहर में ले आया। और उसको अपने घर के उपर के महले में रख कर दरवाजा बाहर से बन्द कर दिया, उसको इस प्रकार से आशा थी कि एक दिन इस तरह से अपने पहले प्रेमी को भुल जायेंगी और हार कर उसके साथ विवाह कर लेगी।

फिर श्री ने अपने आप से कहा, आह मेरी सुन्दरता मेरे लिए अभीश्राप बन चुकी हैं, यह मेरे लिए किसी प्रकार का आशीर्वाद नहीं लाने वाली है, इस सुन्दरता के कारण इस व्यापारी ने मुझको समन्दर पार लाकर, इस कमरें में कैदी की तरह से बन्द कर के रखा है, हमे इसके बारें में सोचने के बजाय मुझको कुछ ऐसा रास्त तलासना चाहिये, इस दुष्ट धुर्त कामुक पापात्मा से बचने का, नहीं तो स्थिती इससे भी बुरी हो सकती है। इस तरह से वह कमरे की खीड़की पास गई, और उससे बाहर झांकने लगी। तभी उसने देखा उसके दुर्भाग्य से बचने के लिए उसे एक रास्ता सुझा, क्योंकि उसी समय उस शहर का राजा अपनी हाथी पर सवारी करते हुए उधर से ही गुजर रहा था, और जब श्री ने उसको देखा, तो श्री ने अपने आप से कहा यहा मेरी मुक्ती के मार्ग पर ले जाने वाले हाथी पर सवारी करने वाला ही है। और इसके लिए मुझे छोटा सा पाप करना होगा, अपने आप को बचाने के लिए एक बड़े भयंकर अपराध से। फिर उसने हाथी चालक महावत को बुलाया, मेरे पास आवो हाथी चलाने वाले चालक। मैं हाथी की सवारी केरने के लिए बहुत व्याकुल हो रही हुं, इसको सुनते ही महावत ने राजा की तरफ देखा, और राजा ने श्री के चहरे को देखा, जहां से आवाज आई थी, और श्री ने अपनी गहरी निली आंखों से राजा को अपनी मनमोहक एक दृष्टी का झलक मात्र से घायल कर दिया, और तत्काल राजा अपनी सुध बुध को भुल गया, और अपने महावत से कहा वैसा ही करो जैसा की वह कह रही है, इस तरह से महावत ने अपनी हाथी को खिड़की के निचे ले आया, और श्री ने तत्काल खिड़की से बाहर छलांग लगा दिया, सिधा राजा की गोद में और स्वयं को बचाने के लिए राजा को पकड़ लिया, इससे तरह से राजा आनंद से बेहोश जैसा हो गया, उसके शरीर को छुने के अमृत को पाकर। और बिना एक छण गवाये उसने अपने स्थान को उसके लिए छोड़ दिया, और उसे ऐशा आनंद प्रतित हो रहा था, जैसे की उसने सम्पूर्ण संसार को विजय कर लिया हो, लेकिन जब व्यापारी को पता चला की श्री उसके चुंगल से फरार हो चुकी हैं। तो वह भयानक निराशा के कारण अपने शरीर को त्याग दिया।

और फिर जैसे ही श्री राजा के साथ उसके महल में पंहुची, राजा ने श्री से कहा तुम्हारा नाम क्या है? और तुम्हारा परीवार कहा का रहने वाला है? श्री ने कहा यहां से बहुत दूर एक देश के राजा की मैं पुत्री हुं, और मेरा नाम श्री है, और मेरे साथ क्या क्या हुआ उसको ना ही पुछों तो अच्छा ही होगा हम दोनो के लिए, फिर राजा ने कहा वह कैसे लोग थे? जो तुमको इस तरह से अकेला छोड़ दिया हैं, यह जान कर मुझे बहुत अधीक दुःख हो रहा है। तुम्हारी तरह सुन्दर और शेरनी जैसी औरत को शियारो के साथ छोड़ दिया, और मैं तुमकों अपने महल में ले आया हुं, तुम्हें जो भी आभुषण और बहुमुल्य वस्तु चाहिये, मेरे खजाने से लेकर अपने को आनंदित करो, और मेरे साथ रह कर अपने शौभाग्य के शिखर पर चढ़कर इतराओ, फिर श्री ने राजा से कहा इस प्रकार से मत बोलिये, क्योंकि मैं किसी और की पत्नी हू, और मैं अपने किसी दुर्भाग्य प्रबल होने के कारण उनसे विछण गई हुं, यह मेरा मनमाफिक नही हैं, इससे

पहले जिस व्यापारी ने मुझे समन्दर पार करा करे अपनी जहाज पर यहां लाया था। वह भी मेरे साथ जबरजस्ती विवाह करना चाहता था। इसलिए मेरे साथ न्याय किजीये मैं आपकी पत्नी नहीं बन सकती हुं।

फिर राजा ने कहा तुम्हारी निली गहरी आंखों ने मेरी समझ को पुरी तरह से नष्ट कर दिया हैं, इस समय मुझे कुछ भी नहीं समझ में आरहा है कि क्या सही है और क्या गलत हैं? यह तुम्हारें द्वारा कहे गये शब्द मेरे लिए कोई भी अर्थ नहीं रखते हैं। इन निली गहरी अंखों ने मुझको वैसे ही अपने वश में कर लिया हैं जैसे कमल नाल से पागल मदमस्त हाथी को बांध कर उसको असहाय कर देते है। इस प्रकार की बात करके तुम अपने आप को स्वयं कष्ट दोगी, यद्यपी मेरे उपर इनका कोई प्रभाव पड़ने वाला नहीं है। तुमसे मैं कहता हुं की तुम मेरे जीवन को बचा लो, और अपना आत्म समर्पण करके मेरे लिए अन्यथा मेरी स्थिती खराब हो रही है, मैं तुम्हारी अगम्य गहरी निली सागर जैसी आंखों में डुब कर मर जाउंगा। जिसने मेरे चैन को चुरा लिया हैं। इसके बिना मैं स्वयं को जीन्दा नहीं रख सकता हुं, केवल तुम्हारी सहमती ही मुझे इस भयंकर काम रुपी वाणों के आक्रमण से बचा सकती हैं। मेरी भक्ती और समर्पण सिर्फ तुम्हारे लिए हैं, तुम अपने पुराने पती को भुल जाओ जैसे उथले तालाब से सूर्य अपना नाता तोड़ लेता है। लेकिन श्री ने कहा आप ऐसा मेरे पती के लिए ना कहें वह तालाब नहीं है, यद्यपी सागर के समान हैं, जिसमें सूर्य हमेशा चमकता रहता है, और कभी भी वह अपनी चमक को कम नहीं करता है, इसी प्रकार का मेरा प्रेम मेरे पती के प्रती है।

लेकिन राजा ने श्री के शब्दों पर विल्कुल ध्यान नहीं दिया, जो उसके कानो में तो प्रवेश किये मगर वह उसके मस्तिस्क तक नहीं पहुंचे, उसकी सम्पूर्ण आत्मा श्री की आंखों में बश कर रह गई थी। वह बरा बर श्री की आंखों को देख कर अपनी अतृप्त वासना की प्यास को बुझा रहा था, वह उसी प्रकार से था जैसे वह सोम रस का पान कर रहा था, जिसका गुणगान वेद करते हैं।

इस वद से वदतर परीस्थिती को देख कर श्री ने स्वयं से कहा आह! मैं छोटे खतरे से बचने के लिए बड़े खतरे को प्राप्त कर लिया है, जैसे नदी के पानी के जानवर से बचने के लिए सागर के जानवरों के चुंगुल में कोई आ जाता हैं। और और उसी प्रकार से मैं निकृष्ट स्वभाव वाले इस राजा के जाल में फंस चुकी हुं, और अब मेरी सहायता करने वाला यहां कोई नहीं हैं, जो मुझे किसी तकनिकी से बचा सके, और जैसा की प्राकृतिक स्वभाव किसी योग्य औरत का होता है। यह सब जान कर उसने राजा के उपर अपनी तीरछी निगाह का एक वाण चलाया, और राजा को बड़े ध्यान से एक बार देखा, इस तरह से जैसे की वह राजा की मनसा को जानकर मन ही मन उसको स्विकृती प्रदान करना चाहती है, इस प्रकार से धिरे से उसने राजा से अपनी भौहों के वाण को चढ़ा कर हल्की सी मुस्कुराहट के साथ कहा, जिस प्रकार से कोई औरत अपने ह्रदय की बात किसी अजनबी पुरुष से कहती है। फुलों के कोमलता के सामान मधुर और मिठी ध्वनी में, जैसे उसको राजा में बहुत अधीक अगाध श्रद्धा हो गई हैं, की आप मुझको कुछ समय के लिए अकेला छोड़ दिजीये इसके बारें में थोड़ा विचार करने के लिए, और तब तक आप मुझसे ज्यादा दूर मत रहियेगा, यद्यपी आप में वह सारे गुण है जो मेरा पती होने के लिए चाहिये, जबकि मैं पहले से किसी और पुरुष की पत्नी हुं, और फिर भी, बहुत दूर नहीं रहो, क्योंकि आप देखना चाहते हैं, और मेरे पति होने के लिए अच्छी तरह फिट है, क्या मैं पहले से ही किसी अन्य व्यक्ति की पत्नी नहीं थी। लेकिन यह सुनकर, राजा पूरी तरह से परेशान था, और उसने अपने कान की गवाही पर संदेह किया। और उसने सोचा अब वह थोड़ा सहानुभूति के बाद सहमति देगी। और उसने उसे देखा क्योंकि वह उस पर मुस्कुरा रही थी, उसके अस्तन के वजन से उसकी कमर एक फूल की डाली की तरह झुकी थी, और उसकी कमर जैसे अंगड़ाई ले रही थी, और वह उसके नशे में हँस रहा था, उसके अंगों की गोलाकारता

और उसकी आंखों की उदासीनता से वह बेकार हो गया, और यह भूलकर कि निर्माता ने शहद को बाहरी हिस्से में और जहर को अन्तरतम के साथ रख कर भ्रम का साधन बनने के लिए महिला बनाई है। और उसने अपने राजा के कर्तव्यों का पालन करना छोड़ दिया, बिना किसी देरी के लौटने का इरादा रख कर वहां से चल दिया, और विचार करने लगा की यह उसके पिछले अपने जन्म के फल को प्राप्त करने का समय आगया है।

लेकिन जैसे ही राजा श्री को अकेले कमरे में छोड़ कर गया, श्री ने तत्काल कमरें की सेविका को अपने पास बुलाया और उससे कहा की बिना किसी प्रकार की देरी किये हुए, तुम मुझको तत्काल मुख्य रानी के पास ले कर चलो, अन्यथा उनके लिए बहुत ही बुरा होने वाला है, पहले तो सेविका ने उसकी आज्ञा मानने से आना कानी की फिर वह उसकी शक्ती से भयभित हो कर अपने आप से कहा, जब राजा उसकी केवल एक झलक पाकर ही अपने संपूर्ण राज्य को सागर की गहराई में कुड़े के समान फेकने के लिए तैयार होगया है। तो उस राजा के लिए अब मेरा जीवन उसकी उंगलियों पर है, इस लिए वह तुरंत श्री को अपने पिछे लेकर सिधा मुख्य रानी के पास गई, और श्री ने मुख्य रानी से कहा मेरी आत्मा की तुम मालकिन हो, इसको तुम जानती हो जब राजा को इसके बारें में पता चलेगा तो वह मेरी हत्या करा करके मेरी लास को फेकवा देगा, फिर श्री ने कहा आपके पती राजा ने मुझको नगर की सड़को पर प्राप्त किया है, और मुझकों चुरा कर यहां लाया है, और वह मुझको अपनी पत्नी बनाने के लिए अत्यधिक व्याकुल है, अब आप मुझे उससे बचाने में और यहां से भगाने में मेरी मदद किजीयें, क्योंकि मैं किसी दूसरें पुरुष की पत्नी हुं, और मैं किसी प्रकार से उनकी पत्नी नहीं बन सकती हुं। और मुझको यहां से निकलने में जितनी अधीक जल्दी हो उतना ही आप सब के लिए अच्छा होगा। जिससे ऐसा घटना दूबारा घटने से रोका जा सके, फिर रानी ने उसको ध्यान से देखा, और श्री से कहा, तुम विल्कुल ठीक कह रही हो, मैं तुमकों बिना किसी प्रकार के देरी किये जल्दी से जल्दी यहां से बहुत दूर भेज दुंगी, और तुम यहां रही तो निश्चित ही राजा तुमको अपनी पत्नी बना लेगा, और राजा अपना सब कुछ त्याग देगा तुम्हारी चाहत में, और सारा राज्या पुरी तरह से बर्बाद हो जायेगा, इससे वह कभी भी ना मुझ पर कोई ध्यान देगा ना किसी और दूसरी रानी को ही कोई महत्त्व देगा, क्योंकि तुम्हारी सुन्दरता अतुलनिय हैं। तुम किसी दैवी शक्ती सम्पन्न औरत की तरह हो, तुम्हारें सुन्दरता के सामने कुछ भी नहीं हैं। तुम कामदेव के वाणों के समान किसी को भी घायल करने में पूर्णतः समर्थ हो।

इसलिए रानी ने अपने विश्वस्थ औरतो को तत्काल बुलाया, और श्री को एक नृत्याङ्गना के भेश में तैयार करके, बिना किसी देरी के उसको महल से बाहर भेज दिया, लेकिन जब दूबारा राजा महल में आया, और श्री को वहां नहीं पाया तो वह पुरी तरह से पागल होगया, और उसने तत्काल अपनी सब कुछ अपने आदमियों को समर्पित करके आत्माहत्या कर लिया।

१३ अंधेरे में एक प्रकाश

लेकिन जब श्री महल से बाहर निकली, तत्काल वह नगर से बाहर निकल गई, अंजाने मार्गो पर चलते हुए और एक विहड़ जंगल में प्रवेश कर लिया, क्योंकि उसने स्वं से कहा यदी वह नगर में ही रहती है, तो राजा अपनी शक्ति का प्रयोग कर अपना कैदी पुनः बना सकता है, और यह पहले से बहुत बुरा होगा। आह हर आदमी जो मुझो देखता है उसके ज्ञान चक्षु हमेशा के लिए बंद हो जाते हैं। और

इस प्रकार से अगर मैं किसी भी व्यक्ती के पकड़ में आगई, तो उसके चुंगुल से निकलना मेरे लिये अत्यन्त कठीन हो जायेगा। यद्यपी इस सुन्दरता के साथ बिना किसी के रक्षा के इन्तजाम के युं ही जगंल में चलना अच्छा होगा, जंगली जानवर मनुष्यों से कम खतरनाक होते हैं, जबकी की एक मानव की आत्मा में जब काम का वासना हाबी हो जाती है तो वह मानव कहलाने वाल प्राणी जानवरों को भी अपने से बहुत पिछे छोड़ देता है, मेरे लिए यही अच्छा होगा की मैं किसी जंगली खतरनाक जानवर के मुख का नेवाला बन जाउ, जो किसी मानव की असहाय पत्नी बनने से अच्छा होगा।

इस लिए वह जंगल में वह कई दिनों तक युं ही चलती रही, अपने जीवन को बचाने के लिए जंगली फलों की जड़ो फुलो और तालाब और झरनो का पानी पी कर किसी तरह से गुजारा करते हुए। इस तरह से चलते हुए झड़ियों में फंस कर उसके कपड़े तार-तार होगये थे, और उसके पैरों में बहुत सारें कांटें चुभ गयें थे, जिससे खुन निकलने लगा, वह जहाँ भी जाती उसके पैरों से निकलने वाली खुन की बुदें घास औऱ पत्तों पर गिरते रहते थे, लाल मड़ी की तरह से और उसके साथ उसकी आंखों से आंसु मोतियों की तरह से टपकते रहते थे। जैसे ओश की बुदें पत्तों पर पड़ी हो सुबह सुबह, औऱ इस विहड़ जंगल में वह पति को याद करके रोती रहती थी, इस तरह से जंगल के बहुत घने भाग में उसने प्रवेश कर लिया, जहाँ पर उसकी आत्मा पहले से और अधीक शिकुड़ने लगी अंजाने भय और जंगली जानवरों के आंतक के कारण और उसकी आत्मा उतना ही अधीक अपने पति की बाहों से मिलने वाले अमृत के लिए व्याकुल हो रही थी। आह! औऱत का उत्साह भी अदम्य होता हैं, अपने पति के अनुपस्थिती में वह अपने बारें में सब कुछ भुल चुकी थी, लेकिन फिर भी आकाश के तारों के पिले प्रकाश में वह अपने पति की छबी को देखती थी। और अंत में एक ऐसा दिन आया जब-जब उसको एक भयंकर दर्द ने पकड़ लिया और उसके ह्दय के अन्दर एक अंजाने भय ने अपना स्थाई निवास बना लिया। और वह एक वृक्ष के निचे अचेत पड़ गई, और अपने आंसुओं से वृक्ष की जड़ को सिचने लगी।

तभी ऐसा हुआ की कुछ जंगली भील शिकार करने के लिए उस जंगल में आगये, जिसकी आहट उनको होगई, और उसका पिछा करने लगें उसी रास्ते से जिस रास्ते से चलकर श्री यहाँ तक पहुंची थी, उसके पैर से निकलने वालें उन खुन की बुंदों को देखकर जो पत्तों पर पड़ें थे, और वह सब उस खुन को देखते हुए, आगें बढ़ रहे थे और अपने लोगों के साथ कह रहे थे, कि कोई घयल जानवर इस रास्ते से गया है, जैसे ही वह सब जंगल में कुछ दूर आये, वह सब एक स्थान पर खड़े होकर कुछ सुनने का प्रयाश करने लगे, और अचानक उन सब ने एक औरत के रोने की आवाज को सुना, जो घने जंगल के मध्य में रो रही थी। फिर उन सब को बहुत अधीक आश्चर्य हुआ, वह उसी दिशा में आगें बढ़ने लगे जिधर से रोने की आवाज आ रही थी। और कुछ ही समय में वह सब श्री के सामने पहुंच कर उसको देखा, जो एक वृक्ष के निचे बैठी हुई थी। जो दिखने में एक अद्वितीय रती की भाती थी, जो अपने पति की याद में तड़प-तड़प कर रोये जारही थी, जो भगवान महेश्वर के द्वारा भष्म किया गया था। उसके सारे कपड़े फट चुके थे और उसके बाल धुल से भर आपस में उलझ चुके थे, उसकी आँखें आसुंओं से भरगई थी, जो किसी निलें कमल के पुस्प की पंखुड़ियों की भांती पानी की बुदों के समान चमक रहे थे, जैसे तालाब में किसी हंश को पाल रही हो,। इस तरह से भीलों ने उसको देख कर बहुत अधीक आश्चर्य चकीत होकर उसको देखा, जैसे इस प्रकार की किसी अद्वितीय औरत को अपनी जींदगी में कभी नहीं देखा हो, और अपने लोगों में बातें करने लगे कितनी सुन्दर नृत्याङ्गना है। जो इस तरह से व्यथित होकर जंगल में बैठ कर रो रही है। और वह सब उसके पास गये और उसके चारों तरफ घेरा बना कर सभी भील खड़े हो गये, और वह उन सब कालें जंगली कशाइयों के मध्य में ऐसी दिख रही थी,

जैसे अकेले चंद्रमा को राहु ने चारों तरफ से घेर लिया हो। इसके कुछ समय के बाद जब उन सब ने उसके सुन्दरता का वर्णन कर लिया। फिर उन भीलों के हृदय में मानों जहर घुल गया हो, जैसे उनका स्वयं का वाण उनको चुभने लगा हो। औऱ उन सबने गुप्त रूप से कहना शुरु कर दिया, की यह मेरी पत्नी है और निश्चित ही यह मेरी पत्नी होने के योग्य है। और इसके बारें में वह सब आपस में बहश करने लगे, और कहा कि वे सब उसको छोड़ कर चले जायें, लेकिन उनमें से कोई भी उसको छोड़ने के लिए तैयार नहीं था, जिसके कारण वह सब आपस में झगड़ने लगे, वहाँ ऐसा स्थिती उपस्थित होगई जैसे किसी सर्प के घोषलें में से कोई पत्थर उनके उपर गीर गया हो।

फिर एक ने अपना हाथ श्री के उपर रख दिया, और इसके साथ दूसरें ने रखा, इस तरह से वह सब जैसे उसको टुकड़ों में विभाजित करना चाहते थे, और श्री को ऐसा लगा जैसे वह उनके खिचां तानी में अपने शरीर से कई टुकड़ों में बिभक्त हो जायेगी। और अंत में वह उसके निचें आगये, और आपस में उसके शरीर को प्राप्त करने के लिए मरने मारने के लिए उतारु हो गये, वह श्री की सुन्दरता इस कदर से मोहीत हो कर ज्ञान शुन्य होगये, औऱ सभी उसको अपना माल समझने लगे और जल्दी ही वह सब भील आपस में मार काट करने लगे, अपने खतरनाक हथियारों से जिसके कारण उनमें से कितनों के बहुत खतरनाक घाव शरीर पर हो गये, और वह सब खुन से लथ पथ होकर एक दूसरें की हत्या करने लगे, जिसकी वजह से उन सब ने एक दूसरों को मार डाला, कोई भी किसी की सहायता या बचाने की तुलना में हत्या को सर्वोपरी मान कर सभी लड़ मरने और नष्ट करने लगे, और वह सब एक दूसरें के पास जिन्दा लाश की तरह से हो गयें, जिसकी वजह से वह सब हिलने डुलने में विल्कुल असमर्थ होगये। इसी बिच श्री को उनके आतंक से बच निकलने का अवसर दिखाई दिया और वह अपने स्थान से खड़ी हो कर अपनी रक्षा के लिए, उन सब के मध्य में से अपने खुन और उनके खुन से लथ पथ हो कर, वहाँ से अपनी पुरी शक्ति के साथ घने जंगल में भागी, क्योंकि वह सब अपने लिए खुनी संघर्ष में उसको पुरी तरह से भुल एक दूसरें के साथ लड़ मर रहे थे। वह वहाँ से वृक्षों की जड़ों में छुपते हुए भागी, जैसे कोइ जमिन पर रेगंने वाला जंगली जानवर अपने शिकारी को देख कर भागता है। और तब तक भागती रही, जब तक की वह अंत में एक जंगली तालाब के किनारे पर नहीं पहुंच गई, और वहाँ पर पहुंच कर तालाब से जी भर कर पानी को पिया, और वहीं तालाब के किनारें पर थक हार कर लेट गई, और कुछ देर के बाद वह उठी और उसने अपने शरीर से जख्मों और अपने पैरों को तालाब के शितल जल से धोया, इसके बाद उसके उपर उसकी थकान भारी पड़ गई, और वह वहीं पर गहरी निद्रा में सोगई, और फिर चंद्रमा का उदय हुआ, जिसमें चंद्रमा की किरणों ने अगड़ाई लेते हुए उसकी प्रशंशा के साथ, वृक्षों की ओट में छुप कर उसके शरीर का चुमंबन लिया, और जंगली जानवर एक-एक करके सभी वृक्षों से बारी-बारी जमिन पर उतरने लगे, तालाब में पानी पीने के लिए, जैसा की भगवान महेश्वर शिव नें उन सब जनवरों को आदेश दिया था, कि कोई भी उसको किसी प्रकार से हानी नहीं पहुंचायेगा, यद्यपी उसके हाथों और पैरों को प्रेम से चाट सकते हैं।

अब जैसा की उसका दुर्भाग्य अपने प्रबल चरमोत्कर्श पर उदित हो चुका था, जिस तालाब पर उमर सिंह पहले आकर दैत्यों की पुत्री उलोपी से मिला था। रोज की भाती रात्री होने पर जैसा की वह प्रायः इस तालाब पर आती थी, वह आई और उसने श्री को वहाँ पर गहरी निद्रा में सोते हुए देखा, और इसके साथ वह उसके पास आकर खड़ी हो कर उसको ध्यान से देखने लगी, उसकी शरीर के अद्भुत सुन्दर अंगों को देख कर आश्चर्य चकीत हुई, यद्यपी उस समय श्री की आंखें बन्द थी, और अन्त में उलोपी ने जीज्ञासा बश अपनी

उंगलियों से उसके स्तनो को छुआ, और अपने आप से कहा क्या यह कोई माया है? या यह कोई वास्तव में सच्ची औरत है। और यह क्या जींदा है, या मर चुकी है? लेकिन श्री को जैसे ही उलोपी ने अपनी उंगलियों से छुआ, उसका शरीर थरथराने लगा और तंद्रा की स्थित में उसकी आत्मा ने उसको सुझाव दिया, कि यह कोई शैतान है और उसने तत्काल अपनी आंखों को खोला और उसकी गहरी निली सागर जैसी गहरी आंखों को खुलते ही, दैत्य की पुत्री उलोपी उसके प्रती पहले से अधीक आश्चर्य के साथ ईर्श्या से भर गई।

फिर उन दोनों ने एक दूसरें को देखा जैसे कोई अँधेरा प्रकाश को देख रहा हो और दोनो को एक दूसरें को सौन्दर्य को देख कर आश्चर्य चकीत हुआ। और वह दोनो कुछ पल के लिये अपने आप को भुल गई, और अंत में उलोपी ने श्री से कहा तुम कौन हो? और तुम्हारा और तुम्हारें परीवार का क्या नाम है? और तुम कैसे और कब मेरे तालाब पर आई हो और क्यों? और श्री ने उत्तर में कहा कि मैं एक राजा की पुत्री हुं, मैं अपने पति की तलास कर रही हुं, जिसकों मैंने खो दिया है, अपने पूर्व जन्म के अपराध के परीणाम के कारण से और कुछ समय के लिए मैंने उनको दोबारा पाया था, जब वह सूर्य के कमल की भुमी पर से वापिस आने के बाद। लेकिन जब उलोपी ने उसके बारें में सुना तो वह एक बार फिर दुःख और पिड़ा से उदिग्न होगई, और उसने अपने आप से कहा, हाँ! तो यह सब होने का कारण है कि सूर्य के कमल की भुमी का दिन में अनुपस्थित होना, जिसके कारण ही मेरी सुन्दरता का कोई प्रभाव उस अजनबी पर नहीं पड़ा था। जिसनें मुझे पहले तालाब के किनारे नाचते औऱ गाते हुए देखा था, और तुरन्त उसने शुरू किया और एक भयानक रूप धारण किया, उसने श्री को अपने दांतों के साथ कुचल दिया, और उसको भयानक रूप से आंतकित कर दिया और कहा, तुम अब इस जंगल को कभी नहीं छोड़ पाओगी, यद्यपी अपने आप को इन जंगली पेड़ों के बीच शापित सौंदर्य के साथ हमेशा के लिए खो जाओगी, जब तक तुम्हारी मृत्यु किसी लंबे समय तक घृणास्पद भ्रम से प्रेतवाधित और परेशान होंकर नहीं हो जाती है। तुम्हारा अपना अनुपस्थित पति यदि वह कर सकता है तो बचाए तुमको और वह तालाब के समान झाग के रूप में परिवर्तीत हो कर, हंसी के ठहाके के साथ वहाँ से गायब हो गई।

लेकिन उलोपी वहाँ से उड़ कर जाने के बाद जंगल में उसने उसी वैरागी निशाचर को पाया, और उससे सब कुछ कह सुनाया और उसके लिये विनती करते हए कहा कि वह एक दुःख से व्यथित नस्वर औरत हैं, उसको अपनी माया से धोखा दो, क्योंकि उसने मेरी सद्भावनाओं को बुरी तरह से आहत किया है। और इस अवसर को पाकर निशाचर वैरागी बहुत अधीक प्रसन्न हुआ, क्योंकि उसको अब तक याद था, कि किस प्रकार से उमर सिंह ने उसके साथ वार्तालाप करके उशको गुमराह किया था, और अंत में अपनी तलवाल से उसने उसकी जीभ को जंगल में काट दिया था। लेकिन उसने कहा यह कोई आसान मामला नहीं हैं, क्योंकि वह स्वं महेश्वर के द्वारा त्यागे गये हैं, और भगवान ने कहा है उनको किसी प्रकार से हानी नहीं पहुंचानी है। मैं इस घुम्कड़ी करने वाली स्त्री के पति के रूप को धारण करके उसको चकमा दुंगा, तब तक की जब तक वह स्वयं परेशान हो कर अपनी इच्छा से शरीर को त्यागने के लिए तैयार नहीं हो जाती है।

१४ मोह माया

लेकिन जब उलोपी के जाने जब श्री को होश आया, तो वह बैठ कर रोने लगी, अपने भविष्य के आने वाले अंजाने खतरे के बारें में विचार करके, क्योंकि यह भविष्यवाणी दैत्य की उस निर्दय पुत्री के द्वारा किया गया था। जिसने उसको भयंकर रूप से दुःखी और आंतकित किया था, और अब तक उसको पता नहीं था, किस किसी प्रकार से उसने उसे इस प्रकार से जीन्दा छोड़ दिया था, अथवा वह उसके क्रोध के अयोग्य थी। और दिन का प्रारंभ होने लगा और सूर्य की किरणें चारों तरफ अपनी छटा को विखेरने लगी, जिससे श्री उठ कर खड़ी हो गई और गिरते लड़खड़ाते हुए जंगल में आगे बढ़ने लगी, तब तक की जब रात्री ने अपना पांव जंगल में चारों तरफ नहीं पसार लिया, और चारों तरफ भंयकर अंधकार छा गया था, वहाँ केवल रात्री के सन्नाटे को चीरते हुएँ वृक्षों के पत्तें शोर मचा रहें थे। और उसी बीच उसे ऐसा लगा जैसे उसका विछड़ा पति वहाँ पर उपस्थित हो। फिर थोड़ी देर के बाद, उसने स्वं को रोका और ध्यान से सुनने लगी, क्योंकि उसने पेड़ों के मध्य किसी मानव के चरणों के चलने की आहट को सुना, जैसे वह उसकी ही दिशा में आ रहा था, और उसका दिल हिंसक रूप से भयभित हो गया, जैसे कि कोई कहना चाहता हैं, मुझे अपने शरीर को त्याग देना चाहिये, जिससे मुझ पर आने वाले खतरे से बच सकती हुं। तो वह एक खोखले पेड़ के पिछे छुप गई और आतंकित होकर बाहर उस खोखले में से झकने लगी, और अचानक, अजीब! वहाँ मंद धुंध में उसने देखा कि उसका पति उसके पास आ रहा हैं, जैसा कि उसने किया था, जब उसने इंद्रालय के महल में उसको छोड़ा था और तुरन्त वह अपने पती के पास भाग कर गई, भावना और आश्चर्य से उबर गई, और उसे अपनी बाहों में पकड़ा, और कहा अंत में, आखिरकार, मैंने तुम्हें फिर से पाया है, और वह जोर से रोने लगी, और उस पल भूल गयी उस क्षण उसके सारे दुख; और उसने उसे देखा और खुशी के लिए हँसी और उसकी अपनी आँखें बंद कर लिया, जैसे कि सूर्य की तरह, उसकी दृष्टि मंद हो गई और दृष्टि के संकाय को खत्म कर दिया। फिर थोड़ी देर के बाद, उसने उन्हें फिर से खोल दिया और देखना शुरू किया और चिल्लायी और उसका खून बर्फ बन गया, और उसका दिल रुक गया। क्योंकि जिसने उसे अपनी बाहों में रखा था, वह उसका पति नहीं था, बल्कि घृणित आंखों वाली और बालों वाली एक बिभत्स चीज थी, जो मानव आकार में क्रूरता के अवतार जैसा था; और उसने उन भयभीत आंखों को अपने आप से दूर कर दिया और हँसता हुआ कटे हुए जीभ से उसके चेहरे पर गर्म त्वरित सांस के साथ एक जानवर की तरह लगाया। तब उसकी इंद्रियों ने उसे डरपोक की तरह त्याग दिया, और वह धरती पर गीर कर वेहोश हो गई।

और जब वह लंबे समय के बाद पुनर्जीवित हुई, तो उसने देखा कि पश्चिमी कोने में सूर्य अस्त हो रहा था। लेकिन चंद्रमा अभी तक नहीं उभरा था, क्योंकि यह महीने के अंधेरे आधे की शुरुआत थी। तब सब एक बार स्मृति वापस आ गई, और उसने स्वं को आंदोलन के साथ हिलाकर रख दिया, और उसने खुद से कहा: क्या यह एक वास्तविकता थी, या यह केवल एक बुरा सपना था? निश्चित रूप से यह एक सपना था; क्योंकि मैं बहुत कमजोर और थक गयी हूँ और अब भी मैं नहीं बता सकती, चाहे मैं जागुं या सो जाऊँ।

तो वह अपनी आँखों को बंद करके बैठ गई; उन्हें खोलने से डरते हुए, न कि उसे देखना चाहिए कि वह पेड़ों की छायाओं में से नहीं जानती थी, और फिर उगता हुआ चंद्रमा गुलाब की तरह से खिल रहा था और पत्तियों के अंतराल के माध्यम से अपने प्रकाश की किरणों को जंगल में फैला रहा था, जैसे कि अपने आतंक को साझा करना चाहता हो और अंत में वह अब चुप्पी और एकांत को सहन करने में असमर्थ होगई, और वह उठकर धीरे-धीरे कदम उठाने लगी, अंधेरे जंगल में लकड़ी के माध्यम से, यह नहीं जानती कि वह कहाँ जाना है, फिर भी वह यहां कहाँ रहने के लिए भी साहसी नहीं है।

और अचानक, जैसे ही वह चली, उसने अपने सामने देखा और वहाँ, एक खुली जगह में, फिर उसने अपने पति को देखा, अभी भी एक पेड़ के नीचे खड़ा हो कर झूठ बोल रहा है। तुरंत वह रुक गई और खड़ी हो गई, भ्रम और आंतक से खाली होने के लिए लहराते हुए संतुलित हो कर। पुनर्मिलन की खुशी और सुरक्षा की इच्छा के लिए और एकांत के भय ने उसे तीन गुना अंदर तक हिल कर रख दिया और हृदय की तरह खींचा: जबकि उसके धोखे की यादें और भ्रम का भय और अज्ञात खतरे की प्रत्याशा ने उसे ठीक कर दिया, वह जड़ों की तरह जमीन में धंस गई और उसने अपने पैरों पर लहरें और घुमाए, जैसे कि एक युवती हवा का विरोध करके उसमें फंस गई: जबकि बड़े आँसू उसकी आंखों से गिर गए, जैसे चंद्रमा की चोटी से कपूर की बूंदें और जैसा कि वह वहाँ खड़ा था पर शक है, कि क्या वह उसके पति के रूप में मृत या जीवित, उसके चेहरे स अद्वितीय चंद्रमा का प्रकाश फैल रहा था, उसने अपनी आंखें खोली और खुद से मुलाकात की और वह भाग कर उसके पास आया, और उसकी ओर भाग गया, जबकि वह हलचल में असमर्थ रही और उसे अपनी बाहों में ले गया, जबकि वह अपनी गले से गिर गई और उसने कहा: तुम्हारी दृष्टि ने मुझे मृत्यु के मुंह से बाहर निकाला है, क्योंकि मैंने शरीर को त्यागने का दृढ़ संकल्प किया था, और फिर उसने फिर कहा: हाँ! और क्यों, हे सुन्दर आंखों से, क्या तुम मुझसे हटती हो? लेकिन श्री चुप रह गई, संदेह से फाड़ा और अपने दिल की धड़कन से हिलाकर रख दिया, और कभी और अचानक उसने अपनी आंखें उठाईं, और संदेह से उसे देखा और फिर आखिर में उसने धीरे-धीरे कहा: क्या तुम वास्तव में मेरे पति हो? क्या यह वास्तव में स्वयं है, और कोई और नहीं? तब उसने कहा: आपका प्रश्न या आपका संदेह क्या है? है क्या तुम मुझे पहले से भूल गई हो? निश्चित रूप से यह थोड़ी देर के बाद से है, क्योंकि मैं इंद्रालय के महल में तीन दिन खो गया था। तब आह भर कर कहा श्री, वहाँ मेरे पास आया, लेकिन अब एक है जो तुमको हर सुविधा में मची और धोखा मुझे: और अब भी, मैं कंपकंपी जब मैं इसके बारे में लगता है, ऐसा न हो कि तू भी रूप में इस तरह के एक और होना चाहिए वह।

तब उसने कहा: प्रिय, तुम कमज़ोर हो और एक सपने ने तुम्हें धोखा दिया है: लेकिन इस बार, यह कोई सपना नहीं है। पता है कि मैं खुद के अलावा कोई नहीं हूँ और तुम मेरे साथ हो। मुझे अपने आतंक को चुम्बन से दूर करने दो और वह नीचे झुक गयी और उसने मुस्कुराहट के साथ अपना चेहरा उठाया, खुद से कहा: यह एक सपना के अलावा कुछ भी नहीं था। लेकिन जैसे ही उसने अपने चेहरे को छुआ, वह बदल गया और विशाल और पिशाच बन गया, एक बड़ी जीभ जो गाय के समान होंठ से लटका हुआ था; और यह जोर से हंसी में टूट गया और गायब हो गया। लेकिन श्री जमीन पर गिर गई, जैसे कि मौत के विस्तारित अग्रदूत द्वारा परेशान की गई हो।

१५ रात का मृत

तो इस तरह से वह पूरी रात वहीं पर लेटी रही, और जब तक दिन का प्रारंभ नहीं हो गया, लम्बे समय तक, वह अपने होश में आ गई, हालांकि कठिनाई के साथ, उसने स्वयं पर गुजरी घटनओं को याद किया, और इसके साथ उसने उठने की कोशिश की, लेकिन वह उठने में समर्थ नहीं थी, क्योंकि उसके अंगों ने अपना कर्तव्य करने से इनकार कर दिया। तो वह वहाँ बर्फ समान ठंडी पड़ी रहती है, बर्फ के रूप में उसकी शरीर ठंडी हो रही थी, जैसे हवा से घिरी झील की सतह पर पानी की लहरें हिलती है।

फिर धीरे-धीरे सूर्य ने पूर्वी पहाड़ के उपर से अपना घर छोड़ा और आकाश में चढ़ दिया, और उसकी किरणें से वह थोड़ी गर्म होगई, जिससे श्री की शरीर में थोड़ी-सी शक्ति वापस आ गई, और थोड़ी देर के बाद, वह अपने पैरों पर खड़ी हो गई, जो वहाँ से कुछ दूर घूमते हुए गई, और जहाँ तक वे चाहते थे, तब तक उसे ले गए, जब तक कि वह उसे किसी अन्य तालाब के पास में नहीं पहुंचा दिया, और वहाँ पहुंच कर एक बार फिर वह लेट गई, और उस तालाब के पानी में झुक कर थोड़ा पानी पी लिया, और उसने अपने आप को पानी के दर्पण में देखा, और खुद से कहा, जिसका चेहरा जो हमेशा कमल पुस्प के समान खिला रहता था, वही चेहरा दुबला पतला हो चुका था, और पुराने चाँद के रूप में कमजोर हो गया था, लेकिन उस चंद्रमा के रूप में काले और रंगहीन दिन के मध्य में, उसके लंबे बाल पानी में उसके कंधे से निचे गिर गए, तब उसने उस गीले बालों को गाँठ में बांध दिया, और पूरे दिन भर तालाब के पास ही बनी रही, औऱ वहाँ से कही आगे जाने के लिए प्रयास नहीं किया, क्योंकि उसने खुद से कहा, यद्यपी मुझे भूख से मरने के लिए यहाँ रहना चाहिए, या कुछ जंगली जानवरों का भोजन बन जाना चाहिए, ताकि एक सौ से भी ज़्यादा मौतों से भ्रम से भरे भयानक जंगल के माध्यम से मेरी यात्रा जारी रख सकें। क्योंकि वे एक दोस्त की आड़ू पहनते हैं, और इसलिए मेरे दिल में प्रवेश द्वार को सांपों की तरह डांटते हुए, उसके अमृत जहर में बदल जाते हैं, जिन्हें मैं सबसे ज़्यादा देखना चाहती हूँ। निश्चित रूप से एक पूर्व जन्म में मेरे पाप उनकी विशालता में भयानक थे, क्योंकि इस अस्तित्व में मुझे कई लोगों के लिए दर्द का सामना करना पड़ा है। और अब मुझे लगता है कि मैं सहन नहीं कर सकती हूँ, क्योंकि मेरी ताकत समाप्त हो रही है। हाँ यह अवश्य हैं कि मैं वास्तव में अपने पति को पा सकती थी, क्या वह केवल अपनी बाहों में मरने के लिए था!

तो इस प्रकार से तलाब के पास बैठ कर विचार कर थी, अपने साथी के लिए मादा चक्रवर्का की तरह दुखी हुई, जबकि सूर्य ने बाली के दुश्मन की तरह, लेकिन आकाश पर तीन कदम उठाए और आखिरकार वह डूब गया, वह थके हुए भी बढ़ी और तालाब के किनारे पर सो गई, और अपने सपनों में उसने अपने पति को, देखा और उसे अपने गले के अमृत से भर दिया, और फिर, रात के मृतकों में, वह जाग गई और बैठ गई और देखा, और! वहाँ चांदनी में वह उसे फिर से देखा था, चुपचाप उसके पास बैठे और वह पीड़ा में अपने पैरों से छलांग मार कर उससे दूर हट गई, और वह निचाशर जो उसके पति के रूप में आकर उसके परेशान कर रहा था, उड़ने के लिए पक्षी के रूप में बदल गया, और आकाश में व्याप्त हो गया, जिसके कारण एक बार पुनः वह उससे आतंकित और भयभीत हो कर जोर से चिल्लायी। क्योंकि दूसरी तरफ उसके वह दूसरे पति के रुप में सामने खड़ा था। फिर अचानक पूरी खतरनाक जंगल उसके हंसी से भर गया और उसका कारण भाग गया और वह पागल हो गई, और उसने कहा: इस लकड़ी के जंगल में हर तरफ इसके अंदर बाहर हर तरफ उसके पति के रूप में ही हर पिसाच मिल रहे हैं, क्योंकि यह पतियों से भरा है! और उसने लकड़ी के विहड़ जंगल से बच निकलने के लिए वहाँ से भागना शुरू किया, उसने अपनी आंखें बंद कर ली, और अपने कानो को भी बंद कर लिया।

१६ भोर से पहले

और अब, भाग्य के आदेश से, ऐसा हुआ कि उमर-सिंह, पूरी दुनिया से घूमते हुए अपनी पत्नी की तलाश में जंगल में घूमते हुए, उस तालाब के नजदीक एक दूसरी जगह में सो रहा था, और अचानक वह अपनी नींद में हँसने लगा और उसने अपने सपने में वह

फिर से सूर्य के कमल की भूमि पाया था, और वह सुनहरे सोफे के बगल में चांदनी हॉल में एक बार फिर खड़ा था। फिर धीरे-धीरे उसने चद्दर को उठाया और श्री के चेहरे पर लंबे समय तक देखा। लेकिन जैसा कि उसने देखा, वह चेहरा नरपिचास बन गया, और उस पर एक बड़ी लाल जीभ फंस हुई थी, और उसने उसके सामने देखा, वहाँ पर श्री नहीं, यद्यपी उसके स्थान वृद्धा नरपिचास निसाचर रूपी वैरागी की शरीर थी। तब वह हंसी के साथ चिल्लाना शुर कर दिया, जो चिख उसके कानों में थी, जिस प्रकार से इन्द्रालय में नगाड़ें की आवाज़ सूर्य के कमल भूमी में तालाब के साथ मिली थी। जिसकी वजह से वह जागृत हो कर अपने पैरों पर खड़ा हो गया, उसके शरीर पुरी तरह से वर्फ से आच्छादित हो रहा था।

और जब वह वहाँ खड़ा था, तब भी संदेह कर रहा था, अपने कानों में सुनने हंसी के लिए, चाहे वह जाग गया या सो गया, उसने उसके अपने सामने देखा और चांदनी में एक औरत की आकृति को देखा, जो भयभित और आतंकित होकर उसके सामने दौड़ रही थी, और तुरन्त वह उसे पहचान गया, वह कोई और नहीं, उसकी प्रियतमा श्री ही थी। अपने तैरने वाले बालों की छाया से बाहर उसकी बड़ी-बड़ी निली गहरी आंखें चंद्रमा के प्रकाश में उसकी तलवार के धार पर चमक-चमक रही थी। और अंधेरे में वह नीले बादल से बिजली की तरह रात में चमक गईं, और वह खुशी के चिल्लाने के साथ उससे मिलने के लिए भाग गया। लेकिन श्री ने जब उसको देखा, तो वह स्वयं में शिकुड़ गई, और उसको एक पिशाच मान कर हंसने और रोने लगी, इसके शिवाय क्या, दूसरा रास्ता उसके पास था ही! वह वहाँ से दूसरी दिशा में घुम गई, और उसने पहले से कहीं ज़्यादा तीव्रता से वहां से भाग गई, उसकी आँखें उसके हाथों से ढंके थे। लेकिन जब उमर सिंह ने उसको इस तरह से देखा, तो इतना अधीक आश्चर्यचकित था कि वह एक पेड़ की तरह अपने स्थान पर खड़ा होगया था, जैसे वह जमीन में जम गया हो, और कुछ देर में उसने खुद से कहा, क्या यह एक वास्तविकता है, या यह एक सपना है? आश्चर्य है कि वह आतंक में मुझसे उड़ती हुई दूर भाग गई है जैसे कि मैं उसका एक दुश्मन हूँ।

और फिर, उसके एक उन्माद ने अपने साथ जब्त कर लिया, वह उसका पीछा करना शुरू कर दिया, जोर से उसको बुलाया, श्री! श्री! तो वे पेड़ के अंदर और बाहर, चांदनी में लकड़ी के जंगल के माध्यम से एक घिरे हुए तेंदुए और एक काले सांप की तरह लकड़ी के माध्यम से भाग गयी, और अचानक, श्री फिसल कर गिर गयी, और उमर सिंह की आँखों से पहले, एक बुढ़ा शेर जंगली लकड़ी से बाहर निकला और वह उसके ऊपर चढ़ कर खड़ा हो गया था। तब उमर सिंह डर के कारण सफेद हो गया, और एक चिल्लाहट में कहा और एक पल में वह भागते हुए उसके करीब पहूंचा, जैसे ही वह वहाँ पहूंचा और शेर पर अपनी सारी शक्ति के साथ, अपनी तलवार से प्रहार कर दिया। फिर तो! वह प्रेत शेर गायब हो गया, क्योंकि वह चालाक निशाचर वैरागी का भ्रम था। लेकिन तलवार अपने शक्ति के साथ श्री के सीने पर गिर गयी, जो तेजी से उसके हृदय को दो टुकड़े में बिभक्त कर दिया। जिसके कारण श्री को अपने नस्वर शरीर का त्याग करना पड़ा।

तब उमर-सिंह ने भी उसके बगल में अपने सर को कलम कर के उसी तलवार से उसके घुटनों पर गिर गया, और अपने प्रिय जन को अपनी बाहों में ले लिया, जबकि उसका खून उसके ऊपर एक नदी की तरह वह कर निकल गया, और उसका जीवन ले गया और जैसे ही उसके गर्म आँसू बारिश की तरह उसके चेहरे पर गिर गए, श्री ने अपनी मरने वाली आँखें खोली: और तुरंत वे शांति से भरे हुए थे, क्योंकि उन्हें पता था कि वह आखिर में उसका पति था और उसने धीरे-धीरे कहा: हे मेरे प्रभु, हे मेरे लिए नहीं, क्योंकि मैंने तेरे

साथ मिलकर मुक्ति प्राप्त की है। पूरे दिन, मैंने तेरी खोज की है: परन्तु मैं तेरे सूर्य को नीचे जाने से पहले शाम को मिली हूँ; वह मेरे लिए पर्याप्त है।

१७ भोर

और उस पल में, अभिशाप समाप्त हो गया। तब उन दो प्रेमियों ने अपने अमर प्रकृति को वापस प्राप्त किया और उन्होंने एक दूसरे को देखा, चकित और परेशान, क्योंकि उन्होंने सोचा कि वे एक सपने से जाग गए थे और उनकी आत्माएँ उन प्राणियों से निकल गईं जिन्हें उन्होंने त्याग दिया था और अपने स्वर्गीय घर में चले गए, एक-दूसरे की बाहों में बंद कर के।

लेकिन महेश्वर ने कैलाश पर अपने आसन से उन्हें देखा और अपने रहस्यमय अंतर्ज्ञान की शक्ति से सभी को समझते हुए, उन्होंने खुद से कहा उन दो मूर्ख प्रेमियों को सपने से जागने के लिए खुशी हो रही है। यह नहीं जानते कि यह एक सपने के भीतर एक सपना था और वे अभी भी सो रहे हैं और वह जोर से हँसे: और उसकी हंसी के चिल्लाहट की गरजें लुढ़क गईं, और फिर से इकट्ठी हो गईं और एक नगाड़े की आवाज़ की तरह हिमालय के नीले रंग के हिस्सों में व्याप्त हो गई।

Manojpandey94@yahoo.com

Gyanvigyanbrhamgyan98@gmail.com

9467557954,7084768943